अप्रैल 2022

प्रधानमंत्री संग्रहालय

अतीत वर्तमान भविष्य

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सत्यमेव जयते
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

BOC / हिंदी / मई 2022

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का संदेश

02 प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

2.1 **अद्भुत भारतीय संग्रहालय :** राष्ट्रीय विरासत के दर्पण

2.1.1 **प्रधानमंत्री संग्रहालय – देश की राजनीतिक मान्यता का लोकतंत्रीकरण : नृपेन्द्र मिश्र का लेख**

2.1.2 **प्रधानमंत्री संग्रहालय - मार्गदर्शक सिद्धान्त : ए. सूर्य प्रकाश का लेख**

2.2 **आज़ादी का अमृत महोत्सव – कैसे बना जनआन्दोलन : जी. किशन रेड्डी का लेख**

2.3 **कैशलेस भविष्य :** भारत में UPI की विकास यात्रा

2.3.1 **भारत के मज़बूत यूपीआई और डिजिटल क्रांति के दम पर नगदी-मुक्त अर्थव्यवस्था का उदय : नंदन निलेकणी का लेख**

2.4 **सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास :** समावेशी नए भारत में दिव्यांगजनों के लिए प्रौद्योगिकी के लाभ

2.5 **अमृत सरोवर अभियान :** जल संरक्षण की ओर एक अनूठा कदम

2.6 **भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति :** गणित के कठिन सवालों को बनाए सरल

03 प्रतिक्रियाएँ

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

नए विषयों के साथ, नए प्रेरक उदाहरणों के साथ, नए-नए संदेशों को समेटते हुए, एक बार फिर मैं आपसे 'मन की बात' करने आया हूँ।

जानते हैं इस बार मुझे सबसे ज़्यादा चिट्ठियाँ और संदेश किस विषय को लेकर मिली हैं? ये विषय ऐसा है जो इतिहास, वर्तमान और भविष्य तीनों से जुड़ा हुआ है। मैं बात कर रहा हूँ देश को मिले नए प्रधानमंत्री संग्रहालय की। इस 14 अप्रैल को बाबा साहेब अम्बेडकर की जन्म जयन्ती पर प्रधानमंत्री संग्रहालय का लोकार्पण हुआ है।

इसे, देश के नागरिकों के लिए खोल दिया गया है। एक श्रोता हैं श्रीमान सार्थक जी, सार्थक जी गुरुग्राम में रहते हैं और पहला मौका मिलते ही वह प्रधानमंत्री संग्रहालय देख आए हैं। सार्थक जी ने NaMo App पर जो संदेश मुझे लिखा है, वो बहुत इन्ट्रेस्टिंग है। उन्होंने लिखा है कि वह बरसों से न्यूज़ चैनल देखते हैं, अख़बार पढ़ते हैं, सोशल मीडिया से भी कनेक्टेड हैं, इसलिए उन्हें लगता था कि उनकी जनरल नॉलेज काफी अच्छी होगी, लेकिन जब वे पीएम संग्रहालय गए तो उन्हें बहुत हैरानी हुई, उन्हें महसूस हुआ कि वे अपने देश और देश का नेतृत्व करने वालों के बारे में काफी कुछ जानते ही नहीं हैं। उन्होंने पीएम संग्रहालय की कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में लिखा है, जो उनकी जिज्ञासा को और बढ़ाने वाली थी, जैसे, उन्हें लाल बहादुर शास्त्री जी का वो चरखा देखकर बहुत खुशी हुई, जो उन्हें ससुराल से उपहार में मिला था। उन्होंने शास्त्री जी की पासबुक भी देखी और यह भी देखा कि उनके पास कितनी कम बचत थी। सार्थक जी ने लिखा है कि उन्हें ये भी नहीं पता था कि मोरारजी भाई देसाई स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने से पहले गुजरात में डिप्टी कलेक्टर थे। प्रशासनिक सेवा में उनका एक लंबा करियर रहा था। सार्थक जी चौधरी चरण सिंह जी के विषय में लिखते हैं कि उन्हें पता ही नहीं था कि ज़मींदारी उन्मूलन के क्षेत्र में चौधरी चरण सिंह जी का बहुत बड़ा योगदान था। इतना ही नहीं, वे आगे लिखते हैं- जब लैंड रिफार्म के विषय में वहाँ मैंने देखा कि श्रीमान पी.वी. नरसिम्हा राव जी लैंड रिफार्म के काम में बहुत गहरी रुचि लेते थे। सार्थक जी को भी इस म्यूज़ियम में आकर ही पता चला कि चंद्रशेखर जी ने 4 हज़ार किलोमीटर से अधिक पैदल चलकर ऐतिहासिक भारत यात्रा की थी। उन्होंने जब संग्रहालय में उन चीज़ों को देखा जो अटल जी उपयोग करते थे, उनके भाषणों को सुना, तो वो गर्व से भर उठे थे। सार्थक जी ने ये भी बताया कि इस संग्रहालय में महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, डॉ. अम्बेडकर, जय प्रकाश नारायण और हमारे प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के बारे में भी बहुत ही रोचक जानकारियाँ हैं।

साथियो, देश के प्रधानमंत्रियों के योगदान को याद करने के लिए आज़ादी के अमृत महोत्सव से अच्छा समय और क्या हो सकता है। देश के लिए यह गौरव की बात है कि आज़ादी का अमृत महोत्सव एक जनआन्दोलन का रूप ले रहा है। इतिहास को लेकर लोगों की दिलचस्पी काफी बढ़ रही है और ऐसे में पीएम म्यूज़ियम युवाओं के लिए भी आकर्षण का केन्द्र बन रहा है जो देश की अनमोल विरासत से उन्हें जोड़ रहा है।

प्रिय साथियो, जब म्यूज़ियम के बारे में आपसे इतनी बातें हो रही हैं तो मेरा मन किया कि मैं भी आपसे कुछ सवाल करूं। देखते हैं **आपकी जनरल नॉलेज क्या कहती है - आपको कितनी जानकारी है। मेरे नौजवान साथियो आप तैयार हैं, कागज़-कलम हाथ में ले लिया? अभी मैं आपसे जो पूछने जा रहा हूँ, आप उनके उत्तर NaMo App या सोशल मीडिया पर #MuseumQuiz के साथ शेयर कर सकते हैं और ज़रूर करें। मेरा आपसे आग्रह है कि आप इन सभी सवालों का**

नमस्कार

राष्ट्रीय रेल संग्रहालय, नई दिल्ली

जवाब ज़रूर दें। इससे देश-भर के लोगों में म्यूज़ियम को लेकर दिलचस्पी और बढ़ेगी। क्या आप जानते हैं कि देश के किस शहर में एक प्रसिद्ध रेल म्यूज़ियम है, जहाँ पिछले 45 वर्षों से लोगों को भारतीय रेल की विरासत देखने का मौका मिल रही है। मैं आपको एक और क्लू देता हूँ। आप यहाँ फ़ेयरी क्वीन, सलून ऑफ़ प्रिन्स ऑफ़ वेल्स से लेकर फ़ायरलेस स्टीम लोकोमोटिव ये भी देख सकते हैं। क्या आप जानते हैं कि मुंबई में वो कौन सा म्यूज़ियम है, जहाँ हमें बहुत ही रोचक तरीके से करंसी का इवोल्यूशन देखने को मिलता है? यहाँ ईसा पूर्व छठी शताब्दी के सिक्के मौजूद हैं तो दूसरी तरफ ई-मनी भी मौजूद है। तीसरा सवाल 'विरासत-ए-खालसा' किस म्यूज़ियम से जुड़ा है? क्या आप जानते हैं, यह

म्यूज़ियम पंजाब के किस शहर में मौजूद है? पतंगबाजी में तो आप सबको बहुत आनंद आता ही होगा, अगला सवाल इसी से जुड़ा है।

देश का एकमात्र काइट-म्यूज़ियम कहाँ है? आइए, मैं आपको एक क्लू देता हूँ यहाँ जो सबसे बड़ी पतंग रखी है, उसका आकार 22x16 फीट है। कुछ ध्यान आया – नहीं तो यहीं - एक और चीज़ बताता हूँ - यह जिस शहर में है, उसका बापू से विशेष नाता रहा है। बचपन में डाक टिकटों के संग्रह का शौक किसे नहीं होता! लेकिन, क्या आपको पता है कि भारत में डाक टिकट से जुड़ा नेशनल म्यूज़ियम कहाँ है? मैं आपसे एक और सवाल करता हूँ। गुलशन महल नाम की इमारत में कौन सा म्यूज़ियम है? आपके लिए क्लू यह है कि इस

म्यूज़ियम में आप फिल्म के डायरेक्टर भी बन सकते हैं, कैमरा, एडिटिंग की बारीकियों को भी देख सकते हैं। अच्छा! क्या आप ऐसे किसी म्यूज़ियम के बारे में जानते हैं जो भारत की टेक्सटाइल से जुड़ी विरासत को सेलिब्रेट करता है। इस म्यूज़ियम में मिनियेचर पेंटिंग्स, जैन मैनुस्क्रिप्ट्स, स्कल्पचर बहुत कुछ है। ये अपने यूनीक डिस्प्ले के लिए भी जाना जाता है।

साथियो, टेक्नोलॉजी के इस दौर में आपके लिए इनके उत्तर खोजना बहुत आसान है। ये प्रश्न मैंने इसलिए पूछे ताकि हमारी नई पीढ़ी में जिज्ञासा बढ़े, वो इनके बारे में और पढ़ें, इन्हें देखने जाएँ। अब तो, म्यूज़ियम्स के महत्व की वजह से, कई लोग, खुद आगे आकर म्यूज़ियम्स के लिए काफ़ी दान भी कर रहे हैं। बहुत से लोग अपने पुराने कलेक्शन को, ऐतिहासिक चीज़ों को भी, म्यूज़ियम्स को दान कर रहे हैं। आप जब ऐसा करते हैं तो एक तरह से आप एक सांस्कृतिक पूँजी को पूरे समाज के साथ साझा करते हैं। भारत में भी लोग अब इसके लिए आगे आ रहे हैं। मैं, ऐसे सभी निजी प्रयासों की भी सराहना करता हूँ। आज, बदलते हुए समय में और कोविड प्रोटोकॉल की वजह से संग्रहालयों में नए तौर-तरीके अपनाने पर ज़ोर दिया जा रहा है। म्यूज़ियम्स में डिजिटाइज़ेशन पर भी फ़ोकस बढ़ा है। **आप सब जानते हैं कि 18 मई को पूरी दुनिया में इंटरनेशनल म्यूज़ियम डे मनाया जाएगा। इसे देखते हुए अपने युवा साथियों के लिए मेरे पास एक आइडिया है। क्यों न आने वाली छुट्टियों में, आप, अपने दोस्तों की मंडली के साथ, किसी स्थानीय म्यूज़ियम को देखने जाएँ। आप अपना अनुभव #MuseumMemories के साथ ज़रूर साझा करें। आपके ऐसा करने से दूसरों के मन में भी संग्रहालयों को लेकर जिज्ञासा जगेगी।**

कैशलेस डे आउट

मेरे प्यारे देशवासियो,

आप अपने जीवन में बहुत से संकल्प लेते होंगे, उन्हें पूरा करने के लिए परिश्रम भी करते होंगे। साथियो, लेकिन हाल ही में, मुझे ऐसे संकल्प के बारे में पता चला, जो वाकई बहुत अलग था, बहुत अनोखा था। इसलिए मैंने सोचा कि इसे 'मन की बात' के श्रोताओं से ज़रूर शेयर करूं।

साथियो, क्या आप सोच सकते हैं कि कोई अपने घर से यह संकल्प लेकर निकले कि वह आज दिन भर, पूरा शहर घूमेगा और एक भी पैसे का लेन-देन कैश में नहीं करेगा, नगद में नहीं करेगा- है ना यह दिलचस्प संकल्प। दिल्ली की दो बेटियाँ, सागरिका और प्रेक्षा ने ऐसे ही कैशलेस डे आउट का एक्सपेरिमेंट किया। सागरिका और प्रेक्षा दिल्ली में जहाँ भी गईं, उन्हें डिजिटल पेमेंट की सुविधा उपलब्ध हो गई। यूपीआई क्यूआर कोड की वजह से उन्हें कैश निकालने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। यहाँ तक कि स्ट्रीट फूड और रेहड़ी-पटरी की दुकानों पर भी ज़्यादातर जगह उन्हें ऑनलाइन ट्रांज़ेक्शन की सुविधा मिली।

साथियो, कोई सोच सकता है कि दिल्ली है, मेट्रो सिटी है, वहाँ ये सब होना आसान है। लेकिन अब ऐसा नहीं है कि यूपीआई का ये प्रसार केवल दिल्ली जैसे बड़े शहरों तक ही सीमित है। एक मैसेज मुझे गाज़ियाबाद से आनंदिता त्रिपाठी का भी मिला है। आनंदिता पिछले सप्ताह अपने पति के साथ नॉर्थईस्ट घूमने गई थीं। उन्होंने असम से लेकर मेघालय और अरुणाचल प्रदेश के तवांग तक की अपनी यात्रा का अनुभव मुझे बताया। आपको भी ये जानकर सुखद हैरानी होगी कि कई दिन की इस यात्रा में दूर-दराज इलाकों में भी उन्हें कैश निकालने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। **जिन जगहों पर कुछ साल पहले तक इंटरनेट की अच्छी सुविधा भी नहीं थी, वहाँ भी अब यूपीआई से पेमेंट की सुविधा मौजूद है। सागरिका, प्रेक्षा और आनंदिता के अनुभवों को देखते हुए मैं आपसे भी आग्रह करूँगा कि कैशलेस डे आउट का एक्सपेरिमेंट करके देखें, ज़रूर करें।**

साथियो, पिछले कुछ सालों में BHIM UPI तेज़ी से हमारी इकॉनमी और आदतों का हिस्सा बन गया है। अब तो छोटे-छोटे शहरों में और ज़्यादातर गाँवों में भी लोग यूपीआई से ही लेन-देन कर रहे हैं। डिजिटल इकॉनमी से देश में एक कल्चर भी पैदा हो रहा है। गली-नुक्कड़ की छोटी-छोटी दुकानों में डिजिटल पेमेंट होने से उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा ग्राहकों को सर्विस देना आसान हो गया है। उन्हें अब खुले पैसों की भी दिक्कत नहीं होती। आप भी यूपीआई की सुविधा को रोज़मर्रा के जीवन में महसूस करते होंगे। कहीं भी गए, कैश ले जाने का, बैंक जाने का, एटीएम खोजने का, झंझट ही ख़त्म। मोबाइल से ही सारे पेमेंट हो जाते हैं, लेकिन, क्या आपने कभी सोचा है कि आपके इन छोटे-छोटे ऑनलाइन पेमेंट से देश में कितनी बड़ी डिजिटल इकॉनमी तैयार हुई है। इस समय हमारे देश में करीब 20 हज़ार करोड़ रुपये के ट्रांजेक्शंस हर दिन हो रहे हैं। पिछले मार्च के महीने में तो यूपीआई ट्रांजेक्शन करीब 10 लाख करोड़ रुपये तक पहुँच गया। इससे देश में सुविधा भी बढ़ रही है और ईमानदारी का माहौल भी बन रहा है। अब तो देश में फिनटेक से जुड़े कई नये स्टार्ट-अप भी आगे बढ़ रहे हैं। **मैं चाहूँगा कि अगर आपके पास भी डिजिटल पेमेंट और स्टार्ट-अप इकोसिस्टम की इस ताकत से जुड़े अनुभव हैं तो उन्हें साझा करिए। आपके अनुभव दूसरे कई और देशवासियों के लिए प्रेरणा बन सकते हैं।**

मेरे प्यारे देशवासियो,

टेक्नोलॉजी की ताकत कैसे सामान्य लोगों का जीवन बदल रही है, ये हमें हमारे आस-पास लगातार नज़र आ रहा है। टेक्नोलॉजी ने एक और बड़ा काम

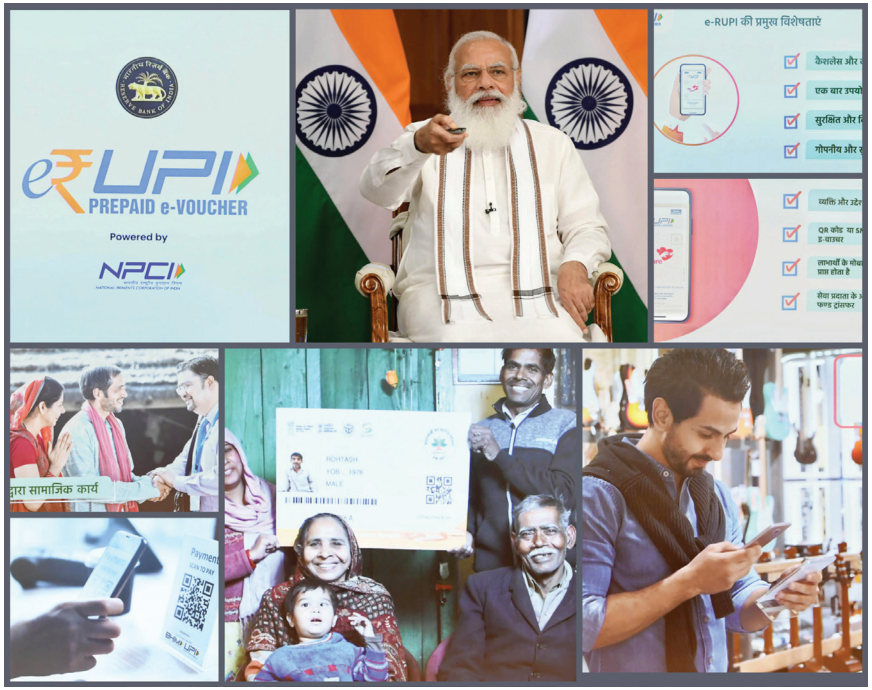

किया है। ये काम है दिव्यांग साथियों की असाधारण क्षमताओं का लाभ देश और दुनिया को दिलाना। हमारे दिव्यांग भाई-बहन क्या कर सकते हैं, ये हमने टोक्यो पैरालंपिक में देखा है। खेलों की तरह ही, आर्ट्स, एकैडमिक्स और दूसरे कई क्षेत्रों में दिव्यांग साथी कमाल कर रहे हैं, लेकिन जब इन साथियों को टेक्नोलॉजी की ताकत मिल जाती है, तो ये और भी बड़े मुकाम हासिल करके दिखाते हैं। इसीलिए, देश आजकल लगातार संसाधनों और इन्फ्रास्ट्रक्चर को दिव्यांगों के लिए सुलभ बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। देश में ऐसे कई स्टार्ट-अप्स और संगठन भी हैं जो इस दिशा में प्रेरणादायी काम कर रहे हैं। ऐसी ही एक संस्था है – वॉयस ऑफ स्पेशली एबल्ड पीपल, ये संस्था एसिस्टिव टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में नए अवसरों को प्रमोट कर रही है। जो दिव्यांग कलाकार हैं, उनके काम को, दुनिया तक, पहुँचाने के लिए भी एक इनोवेटिव शुरुआत की गई है। वॉयस ऑफ स्पेशली एबल्ड पीपल ने इन कलाकारों की पेंटिंग्स की डिजिटल आर्ट गैलरी तैयार की है। दिव्यांग साथी

दिव्यांग आर्टिस्ट प्रधानमंत्री को पेंटिंग देते हुए

माननीय राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द से पद्मश्री सम्मान प्राप्त करते हुए भारतीय पैरालंपिक शूटर अवनि लेखरा

किस तरह असाधारण प्रतिभाओं के धनी होते हैं और उनके पास कितनी असाधारण क्षमताएँ होती हैं - ये आर्ट गैलरी इसका एक उदाहरण है। दिव्यांग साथियों के जीवन में कैसी चुनौतियाँ होती हैं, उनसे निकलकर, वो, कहाँ तक पहुँच सकते हैं! ऐसे कई विषयों को इन पेंटिंग्स में आप महसूस कर सकते हैं। **आप भी अगर किसी दिव्यांग साथी को जानते हैं, उनके टैलेंट को जानते हैं, तो डिजिटल टेक्नोलॉजी की मदद से उसे दुनिया के सामने ला सकते हैं। जो दिव्यांग साथी हैं, वो भी इस तरह के प्रयासों से ज़रूर जुड़ें।**

मेरे प्यारे देशवासियो,

देश के ज़्यादातर हिस्सों में गर्मी बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। बढ़ती हुई ये गर्मी, पानी बचाने की हमारी ज़िम्मेदारी को भी उतना

ही बढ़ा देती है। हो सकता है कि आप अभी जहाँ हों, वहाँ पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो। लेकिन, आपको उन करोड़ों लोगों को भी हमेशा याद रखना है, जो जल संकट वाले क्षेत्रों में रहते हैं, जिनके लिए पानी की एक-एक बूँद अमृत के समान होती है।

साथियो, इस समय आज़ादी के 75वें साल में, आज़ादी के अमृत महोत्सव में, देश जिन संकल्पों को लेकर आगे बढ़ रहा है, उनमें जल संरक्षण भी एक है। अमृत महोत्सव के दौरान देश के हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाये जाएँगे। आप कल्पना कर सकते हैं कि कितना बड़ा अभियान है। वो दिन दूर नहीं जब आपके अपने शहर में 75 अमृत सरोवर होंगे। मैं, आप सभी से, और खासकर, युवाओं से चाहूँगा कि वे इस अभियान के बारे में जानें और इसकी जिम्मेदारी भी उठाएं। अगर आपके क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा कोई इतिहास है, किसी सेनानी की स्मृति है, तो उसे भी अमृत सरोवर से जोड़ सकते हैं। वैसे मुझे यह जानकर अच्छा लगा कि अमृत सरोवर का संकल्प लेने के बाद कई स्थलों पर इस पर तेज़ी से काम शुरू हो चुका है। मुझे यूपी के रामपुर की ग्राम पंचायत पटवाई के बारे में जानकारी मिली है। वहाँ पर ग्राम सभा की भूमि पर एक तालाब था, लेकिन

अमृत सरोवर : पटवाई, रामपुर

वह, गंदगी और कूड़े के ढेर से भरा हुआ था। पिछले कुछ हफ्तों में बहुत मेहनत करके, स्थानीय लोगों की मदद से, स्थानीय स्कूली बच्चों की मदद से, उस गंदे तालाब का कायाकल्प हो गया है। अब, उस सरोवर के किनारे रिटेनिंग वॉल, चारदीवारी, फूड कोर्ट, फव्वारे और लाइटिंग और भी न जाने क्या-क्या व्यवस्थाएँ की गयी है। मैं रामपुर की पटवाई ग्राम पंचायत को, गाँव को लोगों को, वहाँ के बच्चों को इस प्रयास के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

साथियो, पानी की उपलब्धता और पानी की क़िल्लत, ये किसी भी देश की प्रगति और गति को निर्धारित करते हैं। आपने भी गौर किया होगा कि 'मन की बात' में, मैं, स्वच्छता जैसे विषयों के साथ ही बार-बार जल संरक्षण की बात ज़रूर करता हूँ। हमारे तो ग्रंथों में स्पष्ट रूप से कहा गया है –

पानियम् परमम् लोके,
जीवानाम् जीवनम् समृतम्॥

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अर्थात, संसार में जल ही हर एक जीव के जीवन का आधार है और जल ही सबसे बड़ा संसाधन भी है, इसीलिए तो हमारे पूर्वजों ने जल संरक्षण के लिए इतना ज़ोर दिया। वेदों से लेकर पुराणों तक, हर जगह पानी बचाने को, तालाब, सरोवर आदि बनवाने को, मनुष्य का सामाजिक और आध्यात्मिक कर्तव्य बताया गया है। वाल्मीकि रामायण में जल-स्रोतों को जोड़ने पर, जल संरक्षण पर, विशेष ज़ोर दिया गया है। इसी तरह, इतिहास के स्टूडेंट्स जानते होंगे, सिन्धु-सरस्वती और हड़प्पा सभ्यता के दौरान भी भारत में पानी को लेकर कितनी विकसित इंजीनियरिंग होती थी। प्राचीन काल में कई शहर में जल-स्रोतों का आपस में इंटरकनेक्टिड सिस्टम होता था और ये वो समय था, जब, जनसंख्या उतनी नहीं थी, प्राकृतिक संसाधनों की क़िल्लत भी नहीं थी, एक प्रकार से विपुलता थी। फिर भी, जल संरक्षण को लेकर तब जागरूकता बहुत ज़्यादा थी। लेकिन, आज स्थिति इसके उलट है। मेरा आप सभी से आग्रह है, आप अपने इलाके के ऐसे पुराने तालाबों, कुओं और सरोवरों के बारे में जानें। अमृत सरोवर अभियान की वजह से जल संरक्षण के साथ-साथ आपके इलाके की पहचान भी बनेगी। इससे शहरों में, मोहल्लों में, स्थानीय पर्यटन के स्थल भी विकसित होंगे, लोगों को घूमने-फिरने की भी एक जगह मिलेगी।

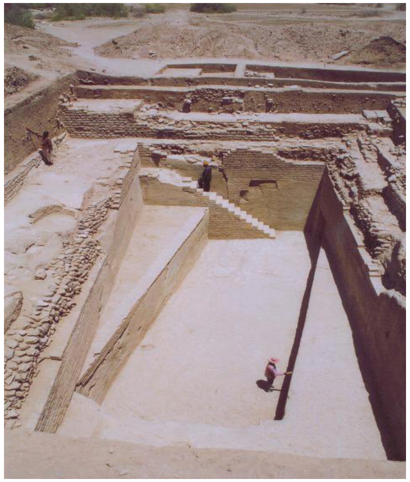

जल संरक्षण के लिए हड़प्पा सभ्यता (धोलावीरा) की इंजीनियरिंग

साथियो, जल से जुड़ा हर प्रयास हमारे कल से जुड़ा है। इसमें पूरे समाज की ज़िम्मेदारी होती है। इसके लिए सदियों से अलग-अलग समाज, अलग-अलग प्रयास लगातार करते आए हैं। जैसे कि, 'कच्छ के रण' की एक जनजाति 'मालधारी' जल संरक्षण के लिए 'वृदास' नाम का तरीका इस्तेमाल करती है। इसके तहत छोटे कुएँ बनाए जाते हैं और उसके बचाव के लिए आस-पास पेड़-पौधे लगाए जाते हैं। इसी तरह मध्य प्रदेश की भील जनजाति ने अपनी एक ऐतिहासिक परम्परा 'हलमा' को जल संरक्षण के लिए इस्तेमाल किया। इस परम्परा के अन्तर्गत इस जनजाति के लोग पानी से जुड़ी समस्याओं का उपाय ढूँढने के लिए एक जगह पर एकत्रित होते हैं। हलमा परम्परा से मिले सुझावों की वजह से इस क्षेत्र में पानी का संकट कम हुआ है और भू-जल स्तर भी बढ़ रहा है।

साथियो, ऐसे ही कर्तव्य का भाव अगर सबके मन में आ जाए, तो जल संकट से जुड़ी बड़ी से बड़ी चुनौतियों का समाधान हो सकता है। आइए, आज़ादी के अमृत महोत्सव में हम जल-संरक्षण और जीवन-संरक्षण का संकल्प लें। हम बूँद-बूँद जल बचाएंगे और हर एक जीवन बचाएंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो,

आपने देखा होगा कि कुछ दिन पहले मैंने अपने युवा दोस्तों से, स्टूडेन्ट्स से 'परीक्षा पर चर्चा' की थी। इस चर्चा के दौरान कुछ स्टूडेन्ट्स ने कहा कि उन्हें एग्जाम में गणित से डर लगता है। इसी तरह की बात कई विद्यार्थियों ने मुझे अपने संदेश में भी भेजी थी। उस समय ही मैंने ये तय किया था कि गणित पर मैं इस बार के 'मन की बात' में ज़रूर चर्चा करूंगा। साथियो,

गणित तो ऐसा विषय है जिसे लेकर हम भारतीयों को सबसे ज़्यादा सहज होना चाहिए। आखिर, गणित को लेकर पूरी दुनिया के लिए सबसे ज़्यादा शोध और योगदान भारत के लोगों ने ही तो दिया है। शून्य, यानी, ज़ीरो की खोज और उसके महत्व के बारे में आपने खूब सुना भी होगा। अक्सर आप ये भी सुनते होंगे कि अगर ज़ीरो की खोज न होती, तो शायद हम, दुनिया की इतनी वैज्ञानिक प्रगति भी न देख पाते। कैलकुलस से लेकर कंप्यूटर्स तक – ये सारे वैज्ञानिक आविष्कार ज़ीरो पर ही तो आधारित हैं। भारत के गणितज्ञों और विद्वानों ने यहाँ तक लिखा है कि –

यत किंचित वस्तु तत सर्वं,
गणितेन बिना नहि!

अर्थात, इस पूरे ब्रह्मांड में जो कुछ भी है, वो सब कुछ गणित पर ही आधारित है। आप विज्ञान की पढ़ाई को याद करिए, तो इसका मतलब आपको समझ आ जाएगा। विज्ञान का हर प्रिंसिपल एक मैथेमैटिकल फार्मूला में ही तो व्यक्त किया जाता है। न्यूटन के लॉज़ हों, आइंस्टाइन का फेमस इक्वेशन, ब्रह्मांड से जुड़ा सारा विज्ञान एक गणित ही तो है। अब तो वैज्ञानिक भी थ्योरी ऑफ एवरीथिंग की चर्चा करते हैं, यानी, एक ऐसा सिंगल फार्मूला जिससे ब्रह्मांड की हर चीज़ को अभिव्यक्त किया जा सके। गणित के सहारे वैज्ञानिक समझ के इतने विस्तार की कल्पना हमारे ऋषियों ने हमेशा से की है। हमने अगर शून्य का अविष्कार किया, तो साथ ही अनंत, यानी, इनफिनिट को भी एक्सप्रेस किया है। सामान्य बोल-चाल में जब हम संख्याओं और नंबर्स की बात करते हैं, तो मिलियन, बिलियन और ट्रिलियन तक बोलते और सोचते हैं, लेकिन, वेदों में और भारतीय गणित में ये गणना बहुत आगे तक जाती है। हमारे यहाँ एक बहुत पुराना श्लोक प्रचलित है –

एकं दशं शतं चैव, सहस्रम् अयुतं तथा।
लक्षं च नियुतं चैव, कोटिः अर्बुदम् एव च॥
वृन्दं खर्वो निखर्वः च, शंखः पद्मः च सागरः।
अन्त्यं मध्यं परार्धः च, दश वृद्ध्या यथा क्रमम्॥

इस श्लोक में संख्याओं का ऑर्डर बताया गया है। जैसे कि –

एक, दस, सौ, हज़ार और अयुत !
लाख, नियुत और कोटि यानी करोड़।

इसी तरह ये संख्या जाती है – शंख, पद्म और सागर तक। एक सागर का अर्थ 10 की पावर 57 होता है। यही नहीं इसके आगे भी, ओघ और महोघ जैसी संख्याएँ होती हैं। एक महोघ होता है – 10 की पावर 62 के बराबर,

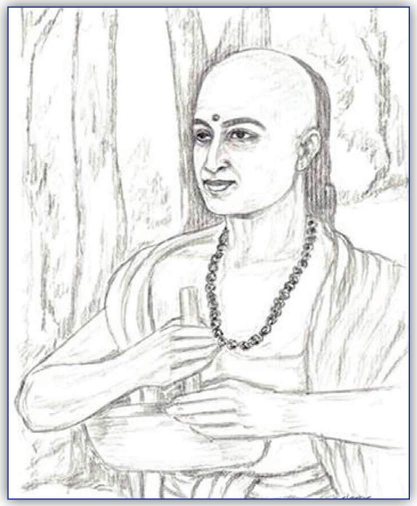

आर्यभट्ट : 'शून्य' के खोजकर्ता

यानी, एक के आगे 62 शून्य, सिक्सटी टू ज़ीरो। हम इतनी बड़ी संख्या की कल्पना भी दिमाग में करते हैं तो मुश्किल होती है, लेकिन, भारतीय गणित में इनका प्रयोग हजारों सालों से होता आ रहा है। अभी कुछ दिन पहले मुझसे इंटल कंपनी के सीईओ मिले थे। उन्होंने मुझे एक पेंटिंग दी थी उसमें भी वामन अवतार के जरिए गणना या माप की ऐसी ही एक भारतीय पद्धति का चित्रण किया गया था। इंटल का नाम आया तो कंप्यूटर आपके दिमाग में अपने आप आ गया होगा। कंप्यूटर की भाषा में आपने बाइनरी सिस्टम के बारे में भी सुना होगा, लेकिन, क्या आपको पता है, कि हमारे देश में आचार्य पिंगला जैसे ऋषि हुए थे, जिन्होंने, बाइनरी की कल्पना की थी। इसी तरह, आर्यभट्ट से लेकर रामानुजन जैसे गणितज्ञों तक गणित के कितने ही सिद्धान्तों पर हमारे यहाँ काम हुआ है।

साथियो, हम भारतीयों के लिए गणित कभी मुश्किल विषय नहीं रहा, इसका एक बड़ा कारण हमारी वैदिक गणित भी है। आधुनिक काल में वैदिक गणित का श्रेय जाता है – श्री भारती कृष्ण तीर्थ जी महाराज को। उन्होंने कैलकुलेशन के प्राचीन तरीकों को रिवाइव किया और उसे वैदिक गणित नाम दिया। वैदिक गणित की सबसे खास बात ये थी कि इसके ज़रिए आप कठिन से कठिन गणनाएँ पलक झपकते ही मन में ही कर सकते हैं। आज-कल तो सोशल मीडिया पर वैदिक गणित सीखने और सिखाने वाले ऐसे कई युवाओं के वीडियोज़ भी आपने देखे होंगे।

साथियो, आज 'मन की बात' में वैदिक गणित सिखाने वाले एक ऐसे ही साथी हमारे

श्री भारती कृष्ण तीर्थ जी महाराज

साथ भी जुड़ रहे हैं। ये साथी हैं कोलकाता के गौरव टेकरीवाल जी। और वो पिछले दो-ढाई दशक से वैदिक मैथेमैटिक्स के इस मूवमेंट को बड़े समर्पित भाव से आगे बढ़ा रहे हैं। आईये, उनसे ही कुछ बातें करते हैं।

मोदीजी – गौरव जी नमस्ते !

गौरव – नमस्ते सर !

मोदीजी – मैंने सुना है कि आप वैदिक मैथ्स के लिए काफी रुचि रखते हैं, बहुत कुछ करते हैं। तो पहले मैं आपके विषय में कुछ जानना चाहूँगा और बाद में इस विषय में आपकी रुचि कैसे बढ़ीं, जरा मुझे बताइये ?

गौरव – सर मैं बीस साल पहले जब बिजनेस स्कूल के लिए अप्लाई कर रहा था तो उसका कंपीटिटिव एग्जाम होता था जिसका नाम CAT है। उसमें बहुत सारे गणित के सवाल आते थे। जिसको कम समय में करना पड़ता था। तो मेरी माँ ने

मुझे एक बुक लाकर दी जिसका नाम था वैदिक गणित। स्वामी श्री भारती कृष्ण तीर्थ जी महाराज ने वो बुक लिखी थी। और उसमें उन्होंने 16 सूत्र दिए थे। जिससे गणित बहुत ही सरल और बहुत ही तेज़ हो जाता था। जब मैंने वो पढ़ा तो मुझे बहुत प्रेरणा मिली और फिर मेरी रुचि जागृत हुई मैथेमैटिक्स में। मुझे समझ में आया कि ये सब्जेक्ट जो भारत की देन है, जो हमारी धरोहर है, उसको विश्व के कोने-कोने में पहुँचाया जा सकता है। तब से मैंने इसको एक मिशन बनाया कि वैदिक गणित को विश्व के कोने-कोने में पहुँचाया जाए। क्योंकि गणित का डर हर जन को सताता है। और वैदिक गणित से सरल और क्या हो सकता है।

मोदीजी – गौरव जी कितने सालों से आप इसमें काम कर रहे हैं ?

गौरव – मुझे आज हो गए करीबन 20 साल सर ! मैं उसमें ही लगा हुआ हूँ।

मोदीजी – और अवेयरनेस के लिए क्या करते हैं, क्या-क्या प्रयोग करते हैं, कैसे जाते हैं लोगों के पास ?

गौरव – हम लोग स्कूल्स में जाते हैं, हम लोग ऑनलाइन शिक्षा देते हैं। हमारी संस्था का नाम है वैदिक मैथ्स फोरम इंडिया। उस संस्था के तहत हम लोग इंटरनेट के माध्यम से 24 घंटे वैदिक मैथ्स पढ़ाते हैं सर !

मोदीजी – गौरव जी आप तो जानते हैं मैं लगातार बच्चों के साथ बातचीत करना पसंद भी करता हूँ और मैं अवसर ढूँढता रहता हूँ। और एग्जाम वारियर से तो मैं बिल्कुल एक प्रकार से, मैंने उसको इंस्टीट्यूशनलाइज्ड कर दिया है और मेरा भी अनुभव है कि ज़्यादातर जब बच्चों से बात करता हूँ तो गणित का नाम सुनते ही वे भाग जाते हैं और तो मेरी कोशिश यही है कि ये बिना कारण जो एक हव्वा पैदा हुआ है उसको निकाला जाए, ये डर निकाला जाए और छोटी-छोटी टेक्नीक जो परम्परा से है, जो कि भारत, गणित के विषय में कोई नया नहीं है। शायद दुनिया में पुरातन परम्पराओं में भारत के पास गणित की परम्परा रही है, तो एग्जाम वारियर को डर निकालना है तो आप क्या कहेंगे उनको ?

गौरव – सर, ये तो सबसे ज़्यादा उपयोगी है बच्चों के लिए, क्योंकि, एग्जाम का जो डर होता है जो हव्वा हो गया है हर घर में। एग्जाम के लिए बच्चे ट्यूशन लेते हैं, पेरेंट्स परेशान रहते हैं। टीचर भी परेशान होते हैं। तो वैदिक गणित से ये सब छूमंतर हो जाता है। इस साधारण गणित की अपेक्षा में वैदिक गणित पंद्रह सौ प्रसेंट तेज़ है और इससे बच्चों में बहुत कॉन्फीडेंस आता है और दिमाग भी तेज़ी से चलता है। जैसे, हम लोग वैदिक गणित के साथ योग भी इंट्रोड्यूस किए हैं। जिससे कि बच्चे अगर चाहे तो आँख बंद करके भी कैलकुलेशन कर सकते हैं वैदिक गणित पद्धति के द्वारा।

मोदीजी – वैसे ध्यान की जो परंपरा है उसमें भी इस प्रकार से गणित करना वो भी ध्यान का एक प्राइमरी कोर्स भी होता है।

गौरव – राइट सर!

मोदीजी – चलिए गौरव जी, बहुत अच्छा लगा मुझे और आपने मिशन मोड में इस काम को उठाया है और विशेषकर की आपकी माता जी ने एक अच्छे गुरु के रूप में आपको इस रास्ते पर ले गई। और आज आप लाखों बच्चों को उस रास्ते पर ले जा रहे हैं। मेरी तरफ से आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

गौरव – शुक्रिया सर ! मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ सर ! कि वैदिक गणित को आपने महत्व दिया और मुझे चुना सर ! तो वी आर वेरी थैंकफुल।

मोदीजी - बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

गौरव – नमस्ते सर।

साथियो, गौरव जी ने बड़े अच्छे तरीके से बताया कि वैदिक गणित कैसे गणित को मुश्किल से मज़ेदार बना सकता है। यही नहीं, वैदिक गणित से आप बड़ी-बड़ी साइंटिफिक प्रोब्लम्स भी सोल्व कर सकते हैं। मैं चाहूँगा, सभी माता-पिता अपने बच्चों को वैदिक गणित ज़रूर सिखाएँ। इससे, उनका कॉन्फिडेंस तो बढ़ेगा ही, उनके ब्रेन की ऐनालिटिकल पावर भी बढ़ेगी और हाँ, गणित को लेकर कुछ बच्चों में जो भी थोड़ा बहुत डर होता है, वो डर भी पूरी तरह समाप्त हो जाएगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में आज म्यूज़ियम से लेकर मैथ तक कई ज्ञानवर्धक विषयों पर चर्चा हुई। ये सब विषय आप लोगों के सुझावों से ही 'मन की बात' का हिस्सा बन जाते हैं। मुझे आप इसी तरह, आगे भी अपने सुझाव NaMo App और MyGov के ज़रिए भेजते रहिए। आने वाले दिनों में देश में ईद का त्योहार भी आने वाला है। 3 मई को अक्षय तृतीया और भगवान परशुराम की जयंती भी मनाई जाएगी। कुछ दिन बाद ही वैशाख बुध पूर्णिमा का पर्व भी आएगा। **ये सभी त्योहार संयम, पवित्रता, दान और सौहार्द के पर्व हैं। आप सभी को इन पर्वों की अग्रिम शुभकामनाएँ। इन पर्वों को खूब उल्लास और सौहार्द के साथ मनाइए। इन सबके बीच, आपको कोरोना से भी सतर्क रहना है। मास्क लगाना, नियमित अंतराल पर हाथ धुलते रहना, बचाव के लिए जो भी ज़रूरी उपाय हैं, आप उनका पालन करते रहें।** अगली बार 'मन की बात' में हम फिर मिलेंगे और आपके भेजे गए कुछ और नए विषयों पर चर्चा करेंगे- तब तक के लिए विदा लेते हैं।

बहुत बहुत धन्यवाद।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

अद्भुत भारतीय संग्रहालय राष्ट्रीय विरासत के दर्पण

“देश के लिए यह गौरव की बात है कि आज़ादी का अमृत महोत्सव एक जन-आन्दोलन का रूप ले रहा है। इतिहास को लेकर लोगों की दिलचस्पी काफी बढ़ रही है और ऐसे में पीएम म्यूज़ियम युवाओं के लिए भी आकर्षण का केन्द्र बन रहा है जो देश की अनमोल विरासत से उन्हें जोड़ रहा है।”

– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के अपने सम्बोधन में)

“प्रधानमंत्री संग्रहालय देश के सभी प्रधानमंत्रियों को समर्पित है जहां उनका जीवन और राष्ट्र-निर्माण में उनका योगदान प्रदर्शित किया गया है। इस तरह, यह संग्रहालय देश में राजनीतिक मान्यता के लोकतंत्रीकरण के प्रधानमंत्री मोदी के संकल्प को प्रस्तुत करता है।”

– श्री नृपेन्द्र मिश्र
अध्यक्ष
एनएमएमएल कार्यकारी परिषद

प्रियदर्शन इतिहास कंठ में,
आज ध्वनित हो काव्य बने।

वर्तमान की चित्रपटी पर,
भूतकाल सम्भाव्य बने।

इतिहास और वर्तमान के साथ भविष्य के निर्माण के बारे में प्रसिद्ध कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर की इन पंक्तियों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 14 अप्रैल, 2022 को डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की जयंती पर नई दिल्ली में प्रधानमंत्री संग्रहालय का शुभारम्भ करते समय उद्धृत किया था।

देश अपनी आज़ादी के 75 वर्ष को ‘अमृत महोत्सव’ के रूप में मना रहा है। इसका उद्देश्य नए भारत की यात्रा में बलिदान और देशभक्ति की भावना को स्मरण करने में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करना है। देश भर में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के साथ, ‘अमृत महोत्सव’ एक ‘जनोत्सव’ का रूप ले रहा है। देश की आज़ादी के लिए अपनी आख़िरी साँस तक लड़ने वाले स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानने में लोगों की दिलचस्पी बढ़ रही है। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री संग्रहालय स्वतंत्रता के बाद देश की अखंडता और समृद्धि में योगदान करने वाले नेताओं के एक स्मारक के रूप में शामिल किया गया है।

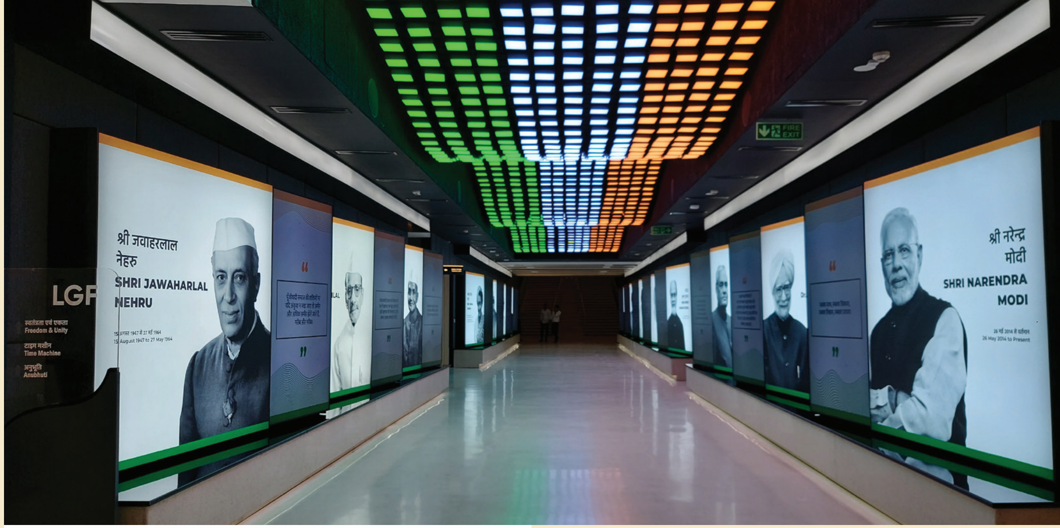

भारत की मौजूदा संग्रहालय विरासत में लगभग 1,000 संग्रहालय हैं जो कलात्मक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक महत्व की कलाकृतियों के संग्रह और संरक्षण के लिए काम कर रहे हैं। डाक टिकटों से लेकर वैज्ञानिक खोजों तक, गुड़ियों से लेकर सिनेमा तक, दर्पण से लेकर रेलवे तक, भारत की समृद्ध विरासत देश भर में स्थित इन संग्रहालयों में जनता के देखने के लिए उपलब्ध है। इतिहास के विभिन्न प्रसंगों और काल को अनुभव करने में संग्रहालय आगंतुकों को अपने क्षितिज का विस्तार करने में सक्षम बनाते हैं। वास्तव में, ये अतीत की घटनाओं की नींव पर निर्मित वर्तमान की संस्थाएँ हैं जो भविष्य के लिए एक मशाल लिए हुए हैं।

संग्रहालय ज्ञान प्राप्ति का सर्वोत्तम ज़रिया हैं। ये देश की कला, संस्कृति, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और इसकी समग्र प्रगति की समृद्ध विरासत के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि संग्रहालय युवा पीढ़ी के अनुभव का विस्तार करते हैं। उनके अनुसार, संग्रहालय नई पीढ़ी को अपने इतिहास को समझने और पहले की पीढ़ी के योगदान के बारे में जानने के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। प्रधानमंत्री के अनुसार, “हमारे युवा स्वतंत्र भारत की प्रमुख घटनाओं के बारे में जितना अधिक

“प्रधानमंत्री जी की ही कल्पना थी कि एक ऐसी जगह बनाई जा सके। यहाँ (प्रधानमंत्री संग्रहालय में) राजनैतिक प्रतिद्वंद्विताओं को अलग रखते हुए सभी प्रधानमंत्रियों को (एक छत के नीचे) जोड़ा गया है, चाहे अलग विचारधाराएँ रही हों। जिनकी जो विचारधारा थी, वही दर्शाई गई है, ये बहुत बड़ी बात है।”

– नीरज शेखर (एमपी)
पूर्व प्रधानमंत्री
स्वर्गीय श्री चंद्रशेखर के पुत्र

Q देश के किस शहर में एक प्रसिद्ध रेल संग्रहालय स्थित है?

A भारत का राष्ट्रीय रेल संग्रहालय नई दिल्ली में स्थित है, जिसमें फ़ेयरी क्वीन, सलून ऑफ़ प्रिन्स ऑफ़ वेल्स से लेकर फ़ायरलेस स्टीम लोकोमोटिव तक कई दिलचस्प प्रदर्शनियां हैं।

Q मुंबई में वह कौन सा संग्रहालय है जहाँ हमें बहुत ही रोचक तरीके से मुद्रा का विकास देखने को मिलता है?

A मुंबई में स्थित आर.बी.आई मोनेटरी संग्रहालय भारतीय उपमहाद्वीप में मौद्रिक प्रणाली की यात्रा को बख़ूबी से दर्शाता है। यहाँ सिक्कों और कागज़ी मुद्रा के साथ-साथ ई-मनी तक को भी प्रदर्शित किया गया है।

#MuseumQuiz

Q 'गुलशन महल' नामक ईमारत में कौन सा संग्रहालय है?

A भारतीय सिनेमा का राष्ट्रीय संग्रहालय 19वीं सदी में बने गुलशन महल में स्थित है। यह संग्रहालय एक ही छत के नीचे भारतीय सिनेमा के पूरे इतिहास को प्रदर्शित करता है।

Q कौन सा संग्रहालय भारत की टेक्सटाइल से जुड़ी विरासत का जश्न मनाता है?

A अहमदाबाद, गुजरात के कालिको म्यूज़ियम ऑफ़ टेक्सटाइल्स में देश के प्राचीन वस्त्रों और कालीनों से लेकर टाई एन्ड डाई, पिचवाई और साड़ियों का एक दिलचस्प संग्रह है।

Q भारत में डाक टिकटों से जुड़ा राष्ट्रीय संग्रहालय कहाँ है?

A दिल्ली के डाक भवन में स्थित राष्ट्रीय डाक टिकट संग्रहालय, 1947 में स्वतंत्रता के बाद से डाक विभाग द्वारा जारी किए गए स्मारक डाक-टिकटों को प्रदर्शित करता है।

Q 'विरासत-ए-खालसा' संग्रहालय पंजाब के किस शहर में स्थित है?

A विरासत-ए-खालसा पंजाब के आनंदपुर साहिब में स्थित एक संग्रहालय है। यह संग्रहालय महान गुरुओं की दृष्टि पर प्रकाश डालता है।

जानेंगे, उनके निर्णय उतने ही प्रासंगिक होंगे।" युवाओं के बीच ज्ञान और उत्सुकता की इस यात्रा को एक प्रारम्भिक बिंदु प्रदान करने के लिए, प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में श्रोताओं से कई प्रश्न पूछे। उन्होंने उनसे अपने उत्तर NaMo App या सोशल मीडिया के माध्यम से **#MuseumQuiz** के साथ साझा करने के लिए भी कहा।

'सबका प्रयास' की भावना को ध्यान में रखते हुए, प्रधानमंत्री संग्रहालय हमारे प्रधानमंत्रियों की विरासत को प्रदर्शित करता है और देश को उसके गौरवशाली वर्तमान तक पहुँचाने में भारत के सभी प्रधानमंत्रियों के योगदान को सम्मानित करने की माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की परिकल्पना को साकार करता है। यह संग्रहालय दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के नागरिकों द्वारा चुने गए नेताओं के नेतृत्व, दूरदर्शिता और उपलब्धियों के बारे में युवा पीढ़ी को संवेदनशील बनाने और प्रेरित करने का एक समावेशी प्रयास है।

"यह संग्रहालय देश के सभी प्रधानमंत्रियों द्वारा प्रदान किए गए नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण की दिशा में उनके सामूहिक प्रयासों के प्रति सम्मान का प्रतीक है। यह प्रधानमंत्री श्री मोदी थे, जिन्होंने सभी प्रधानमंत्रियों के योगदान को प्रदर्शित करने के लिए इस प्रकार का संग्रहालय बनाने का विचार रखा।"

– ए. सूर्य प्रकाश
उपाध्यक्ष, कार्यकारी परिषद,
एनएमएमएल, नई दिल्ली

आप जैसे ही संग्रहालय में प्रवेश करते हैं, देश के सभी प्रधानमंत्रियों को उनके पसंदीदा उद्धरणों के साथ प्रदर्शित करने वाली एक लंबी गैलरी आपका स्वागत करती है। एक और आकर्षण जोड़ने के लिए, छत से लटकते कई गत्यात्मक एलईडी दीपक कलात्मक रूप से लगाए गए हैं जो भारत का लहराता ध्वज बनाते हैं। एक आगंतुक-केन्द्रित मॉडल के

प्रधानमंत्री संग्रहालयः भारत के प्रधानमंत्रियों को समर्पित

प्रधानमंत्री संग्रहालय में इमर्सिव अनुभव

1

साइंड लेटर बाय पीएम
अपने नाम के साथ अपने पसंदीदा प्रधानमंत्री का हस्ताक्षरित पत्र प्राप्त करें।

2

यूनिटी वॉल
देशवासियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों और यूनिटी वॉल पर हमारी सबसे बड़ी ताकत, हमारी एकता, का जश्न मनाएं।

3

पीएम के साथ तस्वीर
ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) में अपने पसंदीदा प्रधानमंत्री के साथ बैठ के तस्वीर खिंचाने का मौका।

4

भविष्य की झलकियां
हेलिकॉप्टर पॉड में बैठें और देश के रोमांचक भविष्य की विकास यात्रा को 180-डिग्री प्रोजेक्शन में अनुभव करें।

5

और क्या है देखने को?

टाइम मशीन
कस्टम-निर्मित टाइम मशीन के माध्यम से अतीत को फिर से जीएं।

लाल क़िले के प्राचीर से
लाल किले पर प्रधानमंत्रियों द्वारा दिए गए यादगार भाषणों को सुनें।

वॉक विथ पीएम
AR में संसद के सामने प्रधानमंत्री के साथ चलने का मौका पाएं।

किड्स ज़ोन
इसरो के मिशन, जैसे की मंगलयान, को इमर्सिव स्क्रीन के ज़रिए अनुभव करें और अपने बनाए हुए चित्र को डिजिटल स्क्रीन पर लाइव होते देखें।

स्वतंत्रता के बाद पिछले 75 वर्षों में देश के विकास में भारत के प्रत्येक प्रधानमंत्री के योगदान का यह एक विवरणात्मक रिकॉर्ड है। 15,600 वर्ग मीटर से अधिक के क्षेत्र में बना यह संग्रहालय पुरातन और नवीन के सहज मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है। यह विभिन्न आगंतुकों को समायोजित कर सकता है।

संग्रहालय भवन का डिज़ाइन उभरते भारत की कहानी से प्रेरित है। संग्रहालय का प्रतीक चिह्न, धर्मचक्र धारण करने वाले भारत के लोगों के हाथों का प्रतिनिधित्व है जो राष्ट्र और लोकतंत्र के भाव को दर्शाता है।

43 दीर्घाओं का सरगम, यह संग्रहालय दर्शाता है कि कैसे हमारे प्रधानमंत्रियों ने विभिन्न चुनौतियों के समय में देश का मार्गनिर्देशन किया और देश की सर्वांगीण प्रगति सुनिश्चित की। संग्रहालय ने अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी-आधारित इंटरफेस को नियोजित किया है। होलोग्राम, VR, AR, मल्टी-टच, मल्टीमीडिया, इंटरेक्टिव कियोस्क, स्मार्टफोन एप्लिकेशन, इंटरेक्टिव स्क्रीन और एक्सपेरिमेंटल इंस्टॉलेशन संग्रहालय को अत्यधिक इंटरैक्टिव और आकर्षक बनाते हैं।

साथ, इस संग्रहालय को उन्नत डिजिटल बुनियादी ढाँचे और अत्याधुनिक तकनीक के साथ विकसित किया गया है, जो आगंतुकों को शानदार अनुभव प्रदान करता है।

एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में भारत के विकास, इसकी विविधता और प्रगति को शायद ही कभी इस प्रकार से अनुभव किया जा सकता है, सिवाय उन जगहों के जहाँ यह सब एक साथ देखा जा सकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमेशा भारत के अतीत और वर्तमान की सही तस्वीर के बारे में जागरूकता फैलाने पर ज़ोर दिया है। वर्तमान सरकार देश की विरासत को विदेशों से वापस लाकर, गौरवशाली अतीत के स्थानों के प्रचार, देश की विरासत का संरक्षण और इसे दुनिया के सामने प्रदर्शित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास कर रही है। जिसके फलस्वरुप ऐसे संग्रहालय बनाए जा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर **जलियाँवाला बाग़ मेमोरियल, अम्बेडकर राष्ट्रीय स्मारक, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, इंडियन नैशनल आर्मी संग्रहालय और जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों जैसे संग्रहालय हैं।**

हम 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मना रहे हैं। हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और प्रचारित करने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में नागरिकों से 18 मई को किसी स्थानीय संग्रहालय जाकर अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मनाने का आग्रह किया। उन्होंने श्रोताओं से **#MusuemMemories** पर अपने अनुभव साझा करने को भी कहा।

प्रधानमंत्री का आह्वान

"साथियो, देश के प्रधानमंत्रियों के योगदान को याद करने के लिए आज़ादी के अमृत महोत्सव से अच्छा समय और क्या हो सकता है? आप सब जानते हैं कि 18 मई को पूरी दुनिया में **International Museum Day** मनाया जाएगा। इसे देखते हुए अपने युवा साथियों के लिए मेरे पास एक आइडिया है। क्यों न आने वाली छुट्टियों में, आप, अपने दोस्तों की मंडली के साथ, किसी स्थानीय म्यूज़ियम को देखने जाएँ। आप अपना अनुभव **#MuseumMemories** के साथ ज़रूर साझा करें। आपके ऐसा करने से दूसरों के मन में भी संग्रहालयों को लेकर जिज्ञासा जागेगी।"

प्रधानमंत्री संग्रहालय : देश की राजनीतिक मान्यता का लोकतंत्रीकरण

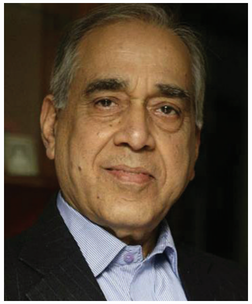

श्री नृपेन्द्र मिश्र
अध्यक्ष
एनएमएमएल कार्यकारी परिषद

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 24 अप्रैल 2022 को 'मन की बात' में कहा था कि प्रधानमंत्री संग्रहालय ऐसे अनेक तथ्यों को बताता है जो अधिकतर लोगों को मालूम नहीं है। सरकार ने तीनमूर्ति एस्टेट में प्रधानमंत्री संग्रहालय बनाने की योजना बनाई। संग्रहालय की सही जगह तय करना और इसका ऐसा डिज़ाइन बनाना ताकि यह परिसर के राष्ट्रीय धरोहर जैसे वातावरण के अनुरूप लगे, अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य थे। अक्तूबर 2018 में भूमिपूजन के साथ इस परियोजना का शुभारम्भ हुआ।

नए भवन का डिज़ाइन उदीयमान भारत की गाथा से प्रेरित है। इसका प्रतीक-चिह्न (लोगो) धर्मचक्र को थामे हुए भारतीयों के हाथ हैं जो राष्ट्र और लोकतंत्र का प्रतीक है। इसके डिज़ाइन में ऊर्जा संरक्षण के टिकाऊ तरीकों का इस्तेमाल हुआ है। निर्माण के दौरान न तो कोई पेड़ काटा गया, न अपनी जगह से हटाया गया। पर्यावरण से जुड़े पक्षों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई।

गौरतलब है कि इस संग्रहालय के लिए विभिन्न संस्थाओं में उपलब्ध सूचना स्रोतों/संग्रहों से जानकारी ली गई। इन संस्थाओं में प्रसार भारती, फिल्म्स डिवीज़न, संसद टीवी, रक्षा मंत्रालय और देशी-विदेशी मीडिया संस्थान, विदेशी समाचार एजेंसियां और विदेश मंत्रालय का तोशाखाना आदि शामिल हैं। अभिलेखीय सामग्री (निजी दस्तावेजों के संग्रह, समग्र संग्रह तथा अन्य साहित्यिक रचनाएँ, महत्वपूर्ण पत्राचार), निजी सामान, उपहार तथा स्मृति-चिह्न (प्रशस्तियां, सम्मान, पदक, समकालीन टिकटें, सिक्के आदि), प्रधानमंत्रियों के भाषण आदि का इस्तेमाल करते हुए विभिन्न प्रधानमंत्रियों के जीवन के विभिन्न पक्षों को एक थीम के स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण के लिए, श्री लाल बहादुर शास्त्री ने अपने विवाह में उपहार के रूप में अपनी पत्नी के परिवार-जनों से मात्र एक चरखा स्वीकार किया था। उनके परिवार-जनों द्वारा प्रदान किया गया वह चरखा संग्रहालय में रखा

हुआ है। इसी तरह से उनकी थोड़ी सी बचत, ईमानदारी और सादगी को दिखाती उनकी पोस्ट ऑफिस की पासबुक भी संग्रहालय में रखी है। श्री मोरारजी देसाई गांधीजी के नेतृत्व में स्वाधीनता आंदोलन में शामिल होने से पहले कई वर्षों तक गुजरात में डिप्टी कलेक्टर थे। श्री चरण सिंह की ज़मींदारी उन्मूलन में गहरी रुचि थी और उन्होंने इस विषय पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक भी लिखी जो संग्रहालय में रखी है। इसी तरह, बहुत से लोगों को पता नहीं है कि श्री चन्द्रशेखर ने 'भारत यात्रा' नाम से कन्याकुमारी से लेकर दिल्ली तक सुदीर्घ पदयात्रा की थी। 6 जनवरी से 25 जून, 1983 के दौरान, वह करीब 4,260 किलोमीटर पैदल चले थे।

जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा था, प्रधानमंत्री संग्रहालय स्वतन्त्रता के बाद के प्रत्येक प्रधानमंत्री के लिए सच्ची श्रद्धांजलि है। पिछले 75 वर्ष हमारे सामूहिक प्रयासों के इतिहास को व्यक्त करते हैं और भारत के लोकतन्त्र की रचनात्मक सफलता के सशक्त प्रमाण हैं। हमारे अधिकतर प्रधानमंत्री मामूली परिवारों से आए थे क्योंकि लोकतन्त्र के द्वार सभी के लिए खुले हैं। प्रत्येक प्रधानमंत्री ने स्वतन्त्रता के बाद देश के विकास, सामाजिक सद्भाव और आर्थिक सशक्तीकरण की यात्रा में योगदान दिया। संग्रहालय उन गाथाओं को बताता है कि कैसे हमारे प्रधानमंत्रियों ने विभिन्न चुनौतियों के बीच राष्ट्र को आगे बढ़ाया और देश की सर्वांगीण प्रगति

सुनिश्चित की। इस कहानी में देश की युवा पीढ़ी के लिए एक संदेश है– भारत को नया भारत बनाने के लिए हमें नए क्षितिजों पर विजय पानी होगी। संग्रहालय समाज के सभी वर्गों के लिए प्रेरणा का महान स्रोत सिद्ध होगा – खास तौर पर युवाओं के लिए जिनके कंधों पर मुख्य रूप से देश के भविष्य का भार होगा। इस तरह, संग्रहालय अतीत और भविष्य के बीच एक संपर्क-सूत्र है।

प्रधानमंत्री संग्रहालय देश के सभी प्रधानमंत्रियों को समर्पित है जहां उनका जीवन और राष्ट्र-निर्माण में उनका योगदान प्रदर्शित किया गया है। इस तरह, यह संग्रहालय देश में राजनीतिक मान्यता के लोकतंत्रीकरण के प्रधानमंत्री मोदी के संकल्प को प्रस्तुत करता है।

नीरज शेखर (एमपी)

पूर्व प्रधानमंत्री
स्वर्गीय श्री चंद्रशेखर के पुत्र

"इस संग्रहालय के निर्माण से मैं और मेरा परिवार बहुत प्रसन्न हैं। युवा पीढ़ी इस संग्रहालय के माध्यम से यह जान सकेगी की भारत के सभी प्रधानमंत्रियों, पं. जवाहरलाल नेहरू से लेकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, ने किस तरह देश के लिए काम किया। क्या उनका जीवन था, केवल प्रधानमंत्री काल का नहीं, बल्कि उससे पहले भी उन्होंने क्या कुछ किया, किस विचारधारा से चले– ये सब इस संग्रहालय में दिखाया गया है।

संग्रहालय के लिए हमने पिताजी (चंद्रशेखर जी) के निजी दस्तावेज़ दिए हैं। इस तरह के दस्तावेज़, जैसे कि हस्तलिखित पत्र, प्रधानमंत्रियों के परिवारों के पास उनके घरों में लंबे समय तक संरक्षित नहीं रखे जा सकते। प्रधानमंत्री संग्रहालय में ऐसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों को न केवल प्रदर्शित किया जा रहा है बल्कि वैज्ञानिक रूप से संरक्षित भी किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री संग्रहालय अंतरराष्ट्रीय स्तर का एक संग्रहालय है जहाँ नई तकनीकों का प्रयोग किया गया है। यहाँ अनुभवात्मक विशेषताओं के माध्यम से कोई भी अपने चहेते नेता के साथ तस्वीर खिंचवा सकता है या ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) में उनके साथ चल सकता है।

मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता था कि (पिताजी के) देहांत के बाद दिल्ली में एक ऐसा संग्रहालय होगा जहाँ आकर लोग देख सकेंगे उन्होंने किस तरह काम किया। किस तरह उन्होंने कन्याकुमारी से दिल्ली तक पदयात्रा की थी, इस म्यूज़ियम में यह भी बड़े अच्छी तरह से दर्शाया गया है। मैं इसके लिए हमेशा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का ऋणी रहूँगा।"

प्रधानमंत्री संग्रहालय के बारे में MP नीरज शेखर के विचार जानने के लिए QR code scan करें

प्रधानमंत्री संग्रहालय – मार्गदर्शक सिद्धान्त

ए. सूर्य प्रकाश
उपाध्यक्ष, कार्यकारी परिषद,
एनएमएमएल, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' के अप्रैल संस्करण में प्रधानमंत्री संग्रहालय की विभिन्न दीर्घाओं में प्रदर्शित रुचिकर विषयों के बारे में बात की और लोगों को देश के प्रधानमंत्रियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए इस संग्रहालय में जाने की सलाह दी। प्रधानमंत्री द्वारा इस संग्रहालय की प्रशंसा निश्चित रूप से इस संस्थान के प्रति दिलचस्पी पैदा करेगी। नई दिल्ली में तीन मूर्ति परिसर की एक प्रतिष्ठित इमारत में स्थित यह संग्रहालय, भारत के आधुनिकतम संग्रहालयों में से एक है।

इस संग्रहालय का उद्घाटन प्रधानमंत्री ने 14 अप्रैल को किया था। यह संग्रहालय देश के सभी प्रधानमंत्रियों द्वारा किए गए नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण की दिशा में उनके सामूहिक प्रयासों के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

एक प्रकार से, संग्रहालय की परिकल्पना और विषय दर्शाते हैं कि इसकी स्थापना से एक झटके में विशिष्टता के युग को समाप्त कर दिया गया है और समावेशन की लोकतांत्रिक अवधारणा को लागू कर, 1947 के बाद से सभी प्रधानमंत्रियों के योगदान को समुचित और पर्याप्त स्वीकृति दी गई है।

संग्रहालय के संबंध में कुछ बातों का ज़िक्र अवश्य किया जाना चाहिए। सबसे पहले, प्रधानमंत्री श्री मोदी ही थे, जिन्होंने सभी प्रधानमंत्रियों के योगदान को प्रदर्शित करने के लिए इस प्रकार का संग्रहालय बनाने का विचार रखा। इसके अलावा, नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में, प्रधानमंत्री ने इसकी कार्यकारी परिषद के सदस्यों के साथ बातचीत की और संग्रहालय की सामग्री के बारे में सुझाव दिए। इस परियोजना के निष्पादन का काम इसी परिषद को सौंपा गया था। **इस संवाद ने संग्रहालय के निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त प्रदान किए। पहला सिद्धान्त** यह था कि सभी प्रधानमंत्रियों द्वारा शुरू

की गई नीतियों तथा कार्यक्रमों, उनके द्वारा लिए गए प्रमुख निर्णयों और उनके कार्यकाल के दौरान जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा, उनके आधार पर इन प्रधानमंत्रियों की ओर ध्यान आकर्षित किया जाना चाहिए।

दूसरा सिद्धान्त यह था कि प्रधानमंत्री संग्रहालय का निर्माण करते समय, 'कल्पना दारिद्रय' को दूर करना चाहिए, जिसने अतीत में कई विचारों को बाधित किया है। दूसरे शब्दों में, सबको सीमित सोच से इतर नए विचारों और नवाचारों के साथ प्रयोग करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए और किसी भी तरह का संकोच नहीं होना चाहिए।

तीसरा, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण सिद्धान्त 'संतुलन' था। श्री मोदी ने कहा कि प्रत्येक प्रधानमंत्री के कार्यकाल के

दौरान घटनाओं के आकलन में संतुलन सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण है। कार्यकारी परिषद और सामग्री समीक्षा समिति, जिसका गठन कार्यकारी परिषद के अध्यक्ष, **श्री नृपेंद्र मिश्र** ने किया था, के सदस्यों ने प्रत्येक गैलरी में टच स्क्रीन प्रस्तुतियों के लिए वीडियो तथा टैक्स्ट को अंतिम स्वरूप देते हुए निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ होने की आवश्यकता पर लगातार ध्यान केन्द्रित किया। अब तक संग्रहालय का दौरा करने वाले विचारशील दर्शकों की प्रतिक्रिया देखें तो यह प्रक्रिया जिसमें प्रारम्भिक मसौदों में कई संशोधन करने पड़े, उपयोगी रही।

संग्रहालय, मानव प्रयास के हर क्षेत्र में 1947 से भारत के विकास को प्रदर्शित करता है और प्रगति हासिल करने के कठिन प्रयासों की कहानी बताता है। हालांकि अभी बहुत कुछ करना बाकी है, लेकिन हमारे दो पड़ोसी देशों द्वारा हम पर थोपे गए युद्धों सहित कई समस्याओं के बावजूद हासिल की गई प्रगति, खुश होने का कारण है।

प्रधानमंत्री ने संग्रहालय का उद्घाटन करते हुए कहा कि यह अपने में उतना भविष्य संजोए हुए है, जितना कि अतीत। वे न केवल प्रत्येक गैलरी में मल्टी-टच, मल्टी-स्क्रीन अनुभव का उल्लेख कर रहे थे, बल्कि संग्रहालय के अनुभूति खंड का भी ज़िक्र कर रहे थे, जो अत्याधुनिक है और होलोग्राम, वर्चुअल रियलिटी, ऑगमेंटेड रियलिटी के साथ बहुत मनमोहक भी है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ आगंतुक देश के 15 प्रधानमंत्रियों में से किसी के भी साथ सेल्फी ले सकते हैं या उनके साथ टहलने का वीडियो ले सकते हैं। यहाँ एक आभासी हेलीकॉप्टर भी है जो आगंतुकों को देश में बने सबसे ऊँचे पुलों तथा सुरंगों और सोलर पार्कों तथा देश में नियोजित भविष्य के शहरों जैसे अन्य प्रमुख तकनीकी परिकल्पनाओं की एआर में सैर कराता है और दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। संग्रहालय का यह खंड, दीर्घाओं के अलावा, इस बात का प्रमाण है कि खुद को सीमित सोच से मुक्त करने की आवश्यकता के बारे में श्री मोदी की सलाह को गंभीरता से लिया गया है।

प्रधानमंत्री संग्रहालय और अन्य संग्रहालयों में कई अंतर हैं :

हमारे बचपन के दिनों में हमारे माता-पिता या स्कूल के शिक्षक हमें संग्रहालय देखने ले जाते थे। साधारण संग्रहालय में हम जल्द ही ऊब जाते हैं और वापस आना चाहते हैं या बाकी भीड़ के साथ बस एक से दूसरी गैलरी तक जाते हैं। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री संग्रहालय न केवल अलग है बल्कि प्रभावशाली रूप से अलग है। यदि बच्चे और युवा इस संग्रहालय में जाएँगे, तो उन्हें ज़रूर मज़ा आएगा, यह हो ही नहीं सकता कि उन्हें यह अरुचिकर लगे। इसके अलावा यह संग्रहालय उन्हें घंटों वहाँ रुकने के लिए विवश कर देगा और पूरी संभावना है कि अनुरक्षकों को उन्हें बाहर निकालना पड़ेगा।

इसलिए, दिल्ली की अपनी अगली यात्रा पर कृपया सुनिश्चित करें कि प्रधानमंत्री संग्रहालय आपके यात्रा कार्यक्रम में सबसे ऊपर रहे।

प्रधानमंत्री संग्रहालयः दर्शकों की नज़रों से

"प्रधानमंत्री संग्रहालय मुझे बहुत ज्ञानवर्धक लगा। मेरा ख्याल है कि भारत में शायद पहली बार ऐसा कुछ मैंने अनुभव किया है।"

– वीणा
(कर्नाटक)

"जब से प्रधानमंत्री जी ने 'मन की बात' में प्रधानमंत्री संग्रहालय की बात की थी, तब से बहुत इच्छा थी की ये देखूं। (यहाँ आ कर) मन इतना आनंदित हो गया है।"

– डॉ. कार्तिक बत्रा
(गुजरात)

"जो राजनैतिक विकास कैसे-कैसे भारत की आज़ादी से लेके आज तक हुए, वो जानने को मिला। पोस्ट-इंडिपेंडेंस भारत और हमारे नेताओं के बारे में जानने को भी मिला। यहाँ (संग्रहालय में) तकनीक का उपयोग बहुत अच्छा किया गया है।"

– ज्योतिरादित्य
(झारखण्ड)

"प्रधानमंत्री जी ने यहाँ का नक्शा पलट दिया। हमारे सभी प्रधानमंत्रियों को एक छत के नीचे ला कर, उन्होंने देश को एक बड़ा अच्छा सन्देश दिया है।"

– किशन लाल भंडुला
(दिल्ली)

"नेहरू जी से मोदीजी तक जितने भी प्रधानमंत्री बने उन्होंने देश के लिए क्या-क्या किया, देश के लिए जो इनका गौरवशाली इतिहास रहा है, इन सब के बारे में विस्तार से संग्रहालय में बताया गया है।"

– उमाकांत लीलाकर
(महाराष्ट्र)

जानिए पीएम संग्रहालय आगंतुकों की दृष्टि से, scan करें QR code

आज़ादी का अमृत महोत्सव: कैसे बना जन आन्दोलन

जी किशन रेड्डी

केन्द्रीय संस्कृति, पर्यटन एवं उत्तर-पूर्व क्षेत्र विकास मंत्री

भारत की चेतना पूरे वर्ष हमारे पर्वों-त्योहारों में व्यक्त होती है। देवी-देवताओं, संतों-पैगंबरों, इतिहास, संस्कृति और मौसमों के प्रारम्भ से जुड़े उत्साहपूर्ण आयोजन देश भर में प्रायः प्रतिदिन किए जाते हैं। फसलों की कटाई से रोपाई तक, हर व्यक्ति इन रंगारंग उत्सवों में भाग लेता है। जब भारत अपने अद्भुत अतीत की परम्पराओं से जुड़ता है, तो इसकी जीवन्तता प्रकट होती है। हालांकि भारत के ज़्यादातर पर्व-त्योहार विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े हैं लेकिन उनका संदेश सार्वभौमिक होता है और यही बात, भारतीय पर्व-त्योहारों को बाकी दुनिया से विशिष्ट बनाती है।

राष्ट्र जब एक साथ उत्सव मनाते हैं तो वे आपस में जुड़ते भी हैं और इसीलिए पर्वों-उत्सवों की देश को जोड़ने वाली भावना अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस जैसे पर्वों की हमें उन संघर्षों और बलिदानों की याद दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका है जो हमारे पुरखों को ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता को हटाने और अपने देश में नए तरीके का शासन-प्रशासन चलाने के लिए करने पड़े। हमारी स्वाधीनता हम सब के लिए मुक्ति का पर्व है। यह आज़ादी कोई एक दिन में नहीं मिल गई, इसके लिए अनेक पीढ़ियों को बलिदान करने पड़े। यह अनेक लोगों के अनेक वर्षों के प्रयासों का परिणाम है।

इसी परिप्रेक्ष्य में, 12 मार्च 2021 को दांडी नमक सत्याग्रह की 91वीं वर्षगांठ के अवसर पर हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्रता के 'अमृत महोत्सव' का शुभारम्भ किया।

इस महोत्सव के अन्तर्गत हमारे इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं और हमारे महान राष्ट्र द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में की गई प्रगति को याद किया जा रहा है। यह प्रगतिशील भारत और इसके समृद्ध इतिहास, जन-जीवन की विविधता, शानदार संस्कृति और महान उपलब्धियों की 75 वर्षों की यात्रा का महोत्सव है। देश के कोने-कोने के लोगों को साथ लाने और हर समुदाय को हमारी स्वतन्त्रता के लिए सदियों तक चले संघर्ष को याद दिलाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री ने इस महोत्सव का शुभारम्भ किया।

पिछले आयोजनों के विपरीत, 'आज़ादी के अमृत महोत्सव' में पूरी सरकार को समग्रता से शामिल किया गया है ('Whole of Government' approach)। इसमें भारत सरकार का हर मंत्रालय, हर राज्य और केन्द्र-शासित क्षेत्र शामिल हैं। सहकारी संघवाद की भावना के अनुरूप, संस्कृति मंत्रालय ने, अन्य मंत्रालयों तथा राज्यों और केन्द्र-शासित क्षेत्रों

अमृत महोत्सव के अन्तर्गत पोस्ट कार्ड लेखन में भाग लेते छात्र

के योगदान से इस महोत्सव को एक आन्दोलन का रूप दिया है। आम जनता, सरकार, मंत्रालयों, स्वयंसेवी संस्थाओं, कॉर्पोरेट घरानों, आध्यात्मिक संगठनों और युवाओं के अतुलनीय प्रयासों और भागीदारी से इस महोत्सव को शानदार समर्थन और व्यापक प्रसार मिला है। इस जन भागीदारी महोत्सव ने देश के जन-जन में न केवल ज़िम्मेदारी, देशभक्ति और समर्पण की भावना जगाई है, बल्कि उन्हें माँ भारती के सपूतों की कई पीढ़ियों के योगदान तथा बलिदानों से भी अवगत कराया है। कोविड-19 महामारी के बावजूद, इस अभियान को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचाने और व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करने के लिए, टेक्नोलॉजी और सोशल मीडिया का सटीक इस्तेमाल किया गया है।

पिछले दिनों, इस महोत्सव के अन्तर्गत स्वतन्त्रता की 75वीं जयंती के ढाई साल तक चलने वाले आयोजनों का पहला वर्ष पूर्ण हुआ। इस वर्ष के दौरान हमने जाने-अनजाने वीर सपूतों को सम्मानित किया, उनके परिवारों तक पहुँच कर उनकी गाथाएँ रिकॉर्ड कीं और उन्हें सर्वोत्तम श्रद्धांजलि देने के प्रयास किए। हमने ज़िलों से, ऐसे सेनानियों के देश के स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान के बारे में ज़्यादा जानकारियाँ हासिल की। हमने भारतीय कवियों-लेखकों की ऐसी रचनाओं का पता लगाया, जिन्हें ब्रिटिश शासन ने अपने शासन की 'सुरक्षा' के लिए 'खतरनाक' मानते हुए प्रतिबंधित कर दिया था। राष्ट्रगान के प्रति जन-जन में गर्व की भावना जागृत करने के लिए, हमने पिछले वर्ष स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर आम जनता को राष्ट्रगान गाने के अभियान में शामिल किया। 2022 के गणतन्त्र दिवस पर आयोजित 'वंदे भारतम – नृत्य उत्सव' और 'राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव' में कला-प्रदर्शनों और देशभक्ति को एक-दूसरे से जोड़ा गया। लोरी गाने, रंगोली बनाने और देशभक्ति के गीतों की तीन आयामों वाली प्रतियोगिताओं ने बच्चों-बड़ों सभी की रचनात्मक प्रतिभा को जगा दिया। इन प्रतियोगिताओं में लगभग हर जिले का योगदान सुनिश्चित किया गया। इन प्रतियोगिताओं से लोगों में हमारी विविधतापूर्ण संस्कृति की ख़ूबियों के बारे में संवाद को बल मिला।

131वीं अम्बेडकर जयंती के दिन प्रधानमंत्री संग्रहालय का उद्घाटन किया गया। इस संग्रहालय में हर प्रधानमंत्री के योगदान को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपने समय की चुनौतियों का सामना किया और देश की प्रगति में योगदान दिया।

हमने एक साथ 78,220 तिरंगे फहरा कर गिनीज़ विश्व रिकॉर्ड बनाया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस जैसे भावी आयोजनों से भारत की वैश्विक विरासत के उपहार का भव्य प्रदर्शन होगा। इस वर्ष स्वतन्त्रता दिवस पर 'हर घर झंडा' अभियान के तहत हर भारतीय झंडा फहराने के लिए प्रेरित होगा और इससे पिछले वर्ष राष्ट्रगान के गायन से बनी भावना और भी प्रबल होगी।

अमृत काल का उल्लेख होते ही देश भक्ति की उत्कट भावना का जन्म होता है। माननीय प्रधानमंत्री ने कहा है कि आज़ादी के 'अमृत महोत्सव' ने स्वतन्त्रता के 100वें वर्ष के लिए समृद्ध भारत का मार्ग तय कर दिया है। स्वतन्त्रता के 100वें वर्ष में समृद्ध भारत की बुनियाद 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' और आज के युवाओं के प्रयासों पर टिकी होगी। इस तरह, हमारी आँखों के सामने ही सरदार पटेल का 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का सपना साकार हो रहा है।

कैशलेस भविष्य
भारत में UPI की विकास यात्रा

“भारत बदल रहा है और ऐसा ही एक परिवर्तन हमारे साथी नागरिकों द्वारा डिजिटल भुगतान को अपनाने के तरीके में देखा जा रहा है। इस समय हमारे देश में करीब 20 हज़ार करोड़ रुपये के transactions हर दिन हो रहे हैं। पिछले मार्च के महीने में तो UPI transaction करीब 10 लाख करोड़ रुपये तक पहुँच गया।”

– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के अपने सम्बोधन में)

“30 दिसंबर को भीम यूपीआई प्लेटफार्म का शुभारंभ करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा था कि भीम विश्व का सबसे बड़ा आश्चर्य बनेगा। अप्रैल 2022 तक भीम यूपीआई प्लेटफार्म पर 316 बैंक्स जुड़े। इसने 9.8 लाख करोड़ रुपयों के 5.5 अरब लेन देन किए और प्रधानमंत्री के शब्दों को सच साबित किया।”

– नंदन निलेकणी
सह-संस्थापक, इन्फोसिस एवं सलाहकार, एनपीसीआई

कैशलेस इकॉनमी वास्तव में सहज और अनिवार्य हो चुकी है। आज, तकनीकी विकास से दुनिया डिजिटल हो रही है और बेहद तेज़ रफ़्तार से कैशलेस भविष्य की ओर बढ़ती जा रही है। एक अरब से अधिक आकांक्षाओं वाला हमारा देश, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में डिजिटल क्रांति और सफल वित्तीय समावेशन की सीढ़ियाँ तेज़ी से चढ़ रहा है।

भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और नॉलेज इकॉनमी में बदलने के दृष्टिकोण के साथ 1 जुलाई, 2015 को भारत सरकार द्वारा एक अनूठा फ्लैगशिप कार्यक्रम, डिजिटल इंडिया शुरू किया गया था। यह कार्यक्रम कई महत्वपूर्ण सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के लिए एक प्रवर्तक रहा है जैसे वित्तीय समावेशन (financial inclusion) और एकीकृत भुगतान इंटरफेस (UPI)। खासकर वित्तीय समावेशन और एकीकृत भुगतान इंटरफेस के लिए यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस का शुभारम्भ एक वास्तविक गेम चेंजर था जिसने देश के हर हिस्से में डिजिटल भुगतान के लाभों को पहुँचाया। पूरे देश में बड़े व्यवसायों से लेकर रेहड़ी-पटरी वालों तक, UPI भुगतान और लेन-देन में सभी की मदद कर रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह देश को कैशलेस अर्थव्यवस्था की ओर ले जा रहा है, इस प्रकार काले धन पर अंकुश लगाने और प्रत्यक्ष करदाताओं की संख्या को भी बढ़ाने में अत्यधिक योगदान दे रहा है।

2014 से पहले, देश में अधिकांश लोगों की पहुँच औपचारिक बैंकिंग सेवाओं तक बहुत सीमित थी। भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेते ही श्री नरेन्द्र मोदी ने सभी को बैंक अकाउंट सेवाएँ उपलब्ध कराने और गरीबी उन्मूलन का बीड़ा उठाया, और इसके साथ ही प्रधानमंत्री जन-धन योजना (PMJDY) जैसी महा-योजनाओं की शुरुआत हुई। अगस्त 2014 में शुरू हुई इस योजना का लक्ष्य बैंकिंग, बचत एवं जमा खातों, प्रेषण, ऋण, बीमा एवं पन्शेन योजनाओं तक लोगों की पहुँच आसान करने से जुड़ा था।

वित्तीय तंत्र की कमियों को दूर करने के लिए ही नहीं, बल्कि देश को कैशलेस इकॉनमी बनाने के लिए भी जन-धन खाते, आधार और मोबाइल (JAM) के साथ बेहद कारगर साबित हुए। बिचौलियों को हटाकर, समाज कल्याण कार्यक्रमों को सभी लाभार्थियों तक पहुँचाना, देश के सभी घरों को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ना, भ्रष्टाचार उन्मूलन और अन्य कार्य सुशासन के आदर्श उदाहरण साबित हुए हैं, जिससे संभावनाओं के नए द्वार खुल गए हैं।

31 दिसम्बर, 2016 को ‘डिजिधन मेला’ के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने BHIM UPI (भारत इंटरफेस फॉर मनी - यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस) का उद्घाटन किया था। इस अवसर पर उन्होंने लोगों से

“यह हमारे लिए बेहद ख़ुशी और अचंभित करने वाला क्षण था कि हमारा छोटा सा प्रयोग (‘कैशलेस डे आउट’) हमारे माननीय प्रधानमंत्री तक पहुँच गया है और इतना दिलचस्प था कि उन्होंने उसका ज़िक्र देश के लिए उनके मन की बात के सम्बोधन में किया। हमारी टीम का हर सदस्य अपने काम के लिए पहचाने जाने पर गर्व से भर गया है।”

– सागरिका शाह
को-होस्ट “द फिनटेक मीटअप”

देश को कैशलेस इकॉनमी बनाने के लिए डिजिटल पेमेंट्स का उपयोग करने की अपील की थी। 24 अप्रैल, 2022 को 'मन की बात' सम्बोधन में उन्होंने आज के भारत में कैशलेस इकॉनमी के उत्थान और उससे होने वाली आसानी का उल्लेख किया। उन्होंने बिना नगद के देश के बड़े शहरों से दूर-दराज़ के सुदूर इलाकों की यात्रा करने वाले युवाओं से जुड़े रोचक किस्से बताए। **सागरिका** और **प्रेक्षा** नामक दो युवतियों ने बिना नगद लेन-देन के दिल्ली शहर में पूरा दिन गुज़ारा। खाने-पीने की छोटी दुकानों और खोमचे वालों तक यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस और क्यूआर कोड्स की उपलब्धता दोनों युवतियों के लिए अनोखा अनुभव था।

ऐसे सकारात्मक अनुभव केवल महानगरों में ही नहीं बल्कि देश भर में मिलते हैं। पूर्वोत्तर की यात्रा पर गईं गाज़ियाबाद की **अनंदिता त्रिपाठी** ने बिना नगद के मेघालय और अरूणाचल प्रदेश के तवांग की यात्रा की। समूचे भारत में कैशलेस और डिजिटल इकॉनमी का चलन ज़ोर पकड़ रहा है। इसके मार्फ़त नागरिकों में UPI के ज़रिए लेन-देन की आदत विकसित हो रही है। छोटे-से-छोटे खोमचे वालों को भी डिजिटल भुगतान के प्रचलन से अधिकाधिक ग्राहकों को सेवा प्रदान करने की सुविधा मिली है। भारतीय नागरिकों को बेहतर कैशलेस सुविधाएँ प्रदान करने के लिए भारत में कई फिनटेक स्टार्टअप्स की शुरूआत हुई है।

देश में प्रतिदिन करीब ₹20,000 करोड़ का डिजिटल लेनदेन हो रहा है, जिससे न केवल सुविधाओं का विस्तार हुआ है बल्कि ईमानदारी का वातावरण भी विकसित हुआ है। वित्तीय वर्ष 2020-21 में UPI के ज़रिए 9 अरब संपर्कहीन व्यापारिक लेन-देन किए गए जिसका कुल मूल्य ₹6 लाख करोड़ बैठता है। वहीं UPI ने बैंकों को एटीएम और शाखाओं में नगदी आवश्यकताओं को कम करने में मदद की है जिसके परिणामस्वरूप ग्राहक सुविधाओं और उनके अनुभव में सुधार आया है। अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में UPI की सुविधा को सुचारू बनाने के लिए नेशनल पेमेंट्स कारपोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI) ने अपने अंतरराष्ट्रीय अधीनस्थ 'NPCI International' का शुभारम्भ किया है।

> "मैं व्यक्तिगत रूप से ज़्यादातर अवसरों पर कैशलेस होना पसंद करता हूँ। जैसा कि हमारे पीएम ने भी अपने 'मन की बात' सम्बोधन के दौरान हमसे बिना किसी नगदी के एक दिन बिताने के लिए कहा था, मुझे लगता है कि यह आगे का रास्ता है।"
>
> **– दिलीप वर्मा**
> छात्र, दिल्ली

UPI सिस्टम ने एक नेशनल ओपन स्टेंडर्ड स्थापित किया है जिसे 200 से अधिक भारतीय बैंक अपना चुके हैं। इसके नित विस्तार में 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में भारत का पक्का इरादा और निरन्तर प्रयास दिखते हैं। देश के वित्तीय परिदृश्य को बदलने के अलावा, अपनी तरह के इस एकमात्र प्रयास ने हर वर्ग के लोगों के जीवन को परिवर्तित किया है। अब समय आ गया है कि हम कैशलेस इकॉनमी को अगले चरण पर पहुँचाने की ओर कदम उठाएँ और भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था में सहयोग देकर प्रधानमंत्री के सपने को साकार करें।

प्रधानमंत्री का आह्वान

"जिन जगहों पर कुछ साल पहले तक इंटरनेट की अच्छी सुविधा भी नहीं थी, वहाँ भी अब UPI से पेमेंट की सुविधा मौजूद है। सागरिका, प्रेक्षा और आनंदिता के अनुभवों को देखते हुए मैं आपसे भी आग्रह करूँगा कि 'कैशलेस डे आउट' का एक्सपेरिमेंट करके देखें, ज़रूर करें। मैं चाहूँगा कि अगर आपके पास भी डिजिटल पेमेंट और स्टार्ट-अप इकोसिस्टम की इस ताकत से जुड़े अनुभव हैं तो उन्हें साझा करिए। आपके अनुभव दूसरे कई और देशवासियों के लिए प्रेरणा बन सकते हैं।"

भारत के मज़बूत यूपीआई और डिजिटल क्रांति के दम पर नगदी-मुक्त अर्थव्यवस्था का उदय

नंदन निलेकणी
सह-संस्थापक, इन्फोसिस एवं
सलाहकार, एनपीसीआई

यह बेहद ख़ुशी की बात है कि लोगों के मन में बिना नगदी के डिजिटल भुगतान करने के प्रति बड़ा परिवर्तन आ गया है। 'मन की बात' में अपने सन्देश में, प्रधानमंत्री ने दिल्ली की दो युवतियों के 'कैशलेस डे आउट' के संकल्प का ज़िक्र किया जिन्होंने दिल्ली में पूरे दिन बिना किसी नगद लेन-देन के घूमने का फैसला लिया। 'कैशलेस' लेन-देन अब केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं है। 'मन की बात' के उसी प्रसंग में प्रधानमंत्री ने पूर्वोत्तर भारत की यात्रा पर अपने पति के साथ गई एक महिला के अनुभवों के बारे में भी बताया। अनेक दिन के प्रवास के दौरान, उन्हें दूर-दराज़ के इलाकों में भी कहीं नगद धन निकालने की ज़रूरत नहीं पड़ी। इन दोनों उदाहरणों से पता चलता है कि पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल लेन-देन में भारी वृद्धि हुई है जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए वास्तव में उत्साहजनक बात है।

प्रधानमंत्री का पदभार ग्रहण करने के तुरंत बाद ही, श्री नरेन्द्र मोदी ने डिजिटल भुगतान शुरू करने और इसे सशक्त बनाने का अपना इरादा स्पष्ट कर दिया था। 15 अगस्त 2014 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उन्होंने अपने भाषण में 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' (पीएमजेडीवाइ) की घोषणा की। यह वित्तीय समावेशन का राष्ट्रीय मिशन था जिसका उद्देश्य था कि बैंकों के जमा और सावधि खाते, भुगतान, ऋण, बीमा और पेंशन जैसी सेवाएँ सहजता से सभी तक पहुँच सकें। इससे त्रि-आयामी जैम (JAM Trinity) सेवाओं का मार्ग प्रशस्त हुआ, जिसके अंतर्गत जन धन बैंक खातों, आधार और मोबाईल नंबर को जोड़ा गया और इस तरह विश्व की सबसे उत्कृष्ट लाभ हस्तांतरण प्रणाली विकसित हुई। सब्सिडी से लेकर छात्रवृत्तियों और वित्तीय सहायता तक - जैम सेवाएँ समाज के सबसे वंचित वर्गों का सहारा बनी हैं।

2016 में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश को डिजिटल भुगतान की राह पर आगे ले जाने का अवसर देखा। उन्होंने भुगतान के इंटरफेस – यूनिफ़ाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) में बहुत दिलचस्पी ली जिसे नेशनल पेमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI) द्वारा विकसित किया जा रहा था। यूपीआई ऐसी प्रणाली है जिससे (किसी भी सहभागी बैंक के) अनेक बैंक खातों को एक ही मोबाइल एप्लिकेशन में समाहित किया जा सकता है और अनेक तरह की बैंकिंग सुविधाएँ हासिल की जा सकती हैं।

प्रधानमंत्री ने यूपीआई के विकास पर संजीदगी से नज़र रखी और इसका नाम 'भीम' (BHIM – भारत इंटरफेस फॉर मनी) रखा। यह बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि थी जिन्होंने भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और साथ ही संघ तथा राज्य सरकारों के बीच धन के बँटवारे के लिए वित्त आयोग की धारणा दी थी। 30 दिसंबर 2016 को भीम-यूपीआई प्लेटफॉर्म का शुभारंभ करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा, "भीम विश्व का सबसे बड़ा आश्चर्य बनेगा।"

अगर अप्रैल 2022 की बात करें तो भीम-यूपीआई प्लेटफॉर्म पर इस समय 316 बैंक हैं। इसने 9.8 लाख करोड़ रुपयों के 5.5 अरब लेन-देन किए हैं और इस तरह प्रधानमंत्री के शब्दों को सच साबित कर दिया है। अल्फ़ाबेट, मेटा, अमेज़न और वालमार्ट जैसी चोटी की टेक्नोलॉजी फ़र्मों ने ऐसे उत्पाद/ऐप बनाए हैं जो भीम-यूपीआई प्रणाली के ज़रिए अपने उपयोगकर्ताओं को भुगतान करने में मदद कर रहे हैं। डिजिटल भुगतान की इस प्रणाली को अब विश्व भर में प्रतिष्ठा मिल रही है। गूगल ने अनुशंसा की है कि अमेरिकी फेडरल रिज़र्व को भी डिजिटल भुगतान के लिए ऐसी ही प्रणाली विकसित करनी चाहिए।

यूपीआई का अपनाया जाना और इसका प्रसार देश में डिजिटल लेन-देन बढ़ाने के सरकार के संकल्प की वजह से संभव हो सका। यूपीआई पर अब अरबों की संख्या में लेन-देन होता है जिससे अब अन्य वित्तीय सेवाओं के लिए भी राह आसान हो रही है। उदाहरण के तौर पर – वित्तीय सेवा प्रणाली के अनेक उपयोगकर्ता लेंडिंग फीचर का उपयोग कर रहे हैं।

2 अगस्त, 2021 को प्रधानमंत्री मोदी ने 'पर्सन टू पर्पस' (person to pupose) विशिष्ट डिजिटल समाधान वाले ई-रुपी (e-RUPI) ऐप का शुभारंभ किया। यह एक नगदी-रहित और संपर्क-रहित डिजिटल भुगतान प्रणाली है जिसमें विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों के मोबाइल फोन में क्यूआर कोड अथवा एसएमएस स्ट्रिंग-आधारित ई-वाउचर भेज दिया जाता है। ई-रुपी सेवा-प्रायोजकों को डिजिटल तरीके से आपस में जोड़ता है – उनके बीच कोई व्यक्तिगत संपर्क नहीं होता। यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि सेवा-प्रदाता को लेन-देन पूरा हो जाने के बाद ही भुगतान मिले। प्री-पेड प्रणाली होने के कारण, इसमें सेवा-प्रदाता को भी बिना किसी बिचौलिये की ज़रूरत के समय से भुगतान हो जाता है।

उम्मीद है कि ई-रुपी कल्याण योजनाओं की पूरी रकम ईमानदारी से लाभार्थी तक पहुँचना सुनिश्चित करने वाली क्रांतिकारी पहल साबित होगी। इसे 'मातृ और शिशु' कल्याण योजनाओं, क्षयरोग मुक्ति कार्यक्रमों, आयुष्मान भारत और प्रधानमंत्री जन आरोग्य आदि योजनाओं के अंतर्गत निदान-सेवाओं के लिए दवाओं तथा पौष्टिक सामग्री के भुगतान के लिए तथा उर्वरक सब्सिडी आदि के लिए भी अपनाया जा सकता है। निजी क्षेत्र भी अपने कर्मचारियों के कल्याण और कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के कार्यों के लिए इसका इस्तेमाल कर सकता है।

इन प्लेटफॉर्मों को 'इंडिया स्टैक' के घटकों के रूप में बेहतर समझा जा सकता है। 'इंडिया स्टैक' ऐसी डिजिटल सार्वजनिक प्रणालियों के समूह का उपनाम है जो विशाल जनसंख्या की पहचान, डेटा और भुगतान से जुड़ी बुनियादी आर्थिक जानकारी के आधार पर काम करती हैं। हालांकि इस परियोजना के नाम में 'इंडिया' शब्द है, लेकिन इसका दायरा एक देश तक सीमित नहीं है। इसे विकसित या विकासशील – किसी भी देश में अपनाया जा सकता है। फिर भी, यह उल्लेखनीय है कि इस परियोजना का स्वरूप सबसे पहले भारत में ही बना और भारत में ही इसे सर्वप्रथम अपनाया गया, जहाँ करोड़ों व्यक्तियों और व्यापारिक इकाइयों द्वारा इसे तेज़ी से अपनाए जाने से वित्तीय और सामाजिक समरसता पैदा हुई और देश इस इंटरनेट युग में प्रगति-पथ पर आगे बढ़ा।

'कैशलेस डे आउट' : युवाओं का अनुभव

'कैशलेस डे आउट' पर जाने वाली महिलाओं, सागरिका शाह और प्रेक्षा टी. ने अपना अनुभव साझा किया:

सागरिका और प्रेक्षा पिछले 2.5 वर्षों से फिनटेक के क्षेत्र में कार्य कर रहीं हैं और उद्योग के विकास को करीब से अनुभव कर रही हैं। उनकी कंपनी "The Fintech Meetup (TFM)" भारत का सबसे बड़ा फिनटेक इकोसिस्टम है। हर वर्ष वे पूरे देश की 14,000 किलोमीटर की सड़क यात्रा करती हैं और 400+ फिनटेक स्टार्ट-अप कंपनियों से मिलती हैं। यह पूरा कार्य वे केवल 3 महीने की अवधि में पूर्ण करती हैं।

TFM में हर कोई कैशलेस अर्थव्यवस्था का समर्थक रहा है। इसी वजह से उन्हें 'कैशलेस डे आउट' का विचार आया। फिनटेक यात्रा 2021 का पहला ही दिन था जब उन्हें लोगों में डिजिटल भुगतान को लेकर प्रतिक्रिया जानने की जिज्ञासा हुई। तभी उन्होंने दिल्ली में 'कैशलेस डे आउट' का प्रयोग किया, जिस दौरान उनके पास ज़ीरो कैश था, और किसी भी ख़रीदारी पर वह केवल डिजिटल माध्यम से भुगतान कर सकते थे।

उन्होंने बताया कि उनका यह अनुभव काफी दिलचस्प रहा, विशेष रूप से व्यापारियों के व्यावहारिक परिवर्तनों को समझने के संदर्भ में, जो ग्राहकों की सुविधा के खिलाफ नहीं जाना चाहते थे और लाभ का एक हिस्सा खोना नहीं चाहते थे, चाहे उन्हें तकनीक की बहुत अधिक जानकारी न भी हो। साथ ही, यह भी काफी दिलचस्प बात है कि भारत की कैशलेस अर्थव्यवस्था और डिजिटल भुगतान स्वीकरण के प्रमुख चालक छोटे व्यापारी हैं, जो डिजिटल लेनदेन को स्वीकार करने और अपनाने के इच्छुक हैं।

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा सराहना मिलने के बाद अपनी प्रतिक्रिया साझा करते हुए

सागरिका शाह और प्रेक्षा टी.

उन्होंने कहा, "इतने बड़े मंच पर पहचाने जाने और अपने नाम सुनकर हमें बहुत अच्छा लगा। TFM में हर कोई अपने कार्य की स्वीकृति और सराहना मिलने पर गौरवान्वित है।"

भारत का डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में शीर्ष देशों में से एक होना अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस वृद्धि के प्रमुख उत्प्रेरक छोटे व्यापारी रहे हैं जैसे कि फुटपाथ विक्रेता और स्थानीय बाज़ारों की दुकानें। कैशलेस अर्थव्यवस्था ने इन व्यापारियों के लिए अधिक वित्तीय समावेशन प्रदान किया है जो पहले पारम्परिक संस्थानों द्वारा पूरा नहीं किया जाता था।

भुगतान उत्पादों के साथ शुरू हुए, "फिनटेक इस नई अर्थव्यवस्था के स्तंभ हैं। अब फिनटेक अप्रयुक्त क्रेडिट गैप को पूरा करते हुए वित्तीय समावेशन लाने में सबसे आगे हैं," उन्होंने कहा।

डिजिटल भारत सही मायनों में तभी होगा जब हम सभी डिजिटल रूप से लेन-देन करने को तैयार होंगे। नागरिकों का ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने कहा कि चूंकि प्रधानमंत्री मोदी जी ने 'कैशलेस डे आउट' की अपील की है, इसलिए हम सभी को आगे आना होगा और डिजिटल भुगतान को अपनाना होगा। इस प्रयोग को जन आन्दोलन बनाने के लिए हम युवाओं से ज़ीरो कैश लेकर बाहर निकलने और एक पारदर्शी और निर्बाध अर्थव्यवस्था के लिए कैशलेस रहने का आग्रह करते हैं।

कैशलैस इकॉनमी और NPCI के बारे में जानने के लिए QR code scan करें

डिजिटल पेमेंट्स की बढ़ती लोकप्रियता

"फिनटेक रेवोलुशन की मदद से आज डिजिटल पेमेंट्स की सुविधा दूरस्थ लोगों तक पहुँच पा रही है।

जहाँ पहले किसी भी तरह के डिजिटल ट्रांजेक्शन में पैसे 2-3 दिन बाद आते थे, वहीं आज UPI और IMPS जैसे रियल-टाइम पेमेंट मेथड्स के उपयोग से लोगों में विश्वास बढ़ रहा है।

हमने (NPCI) यह सोचा था कि हम जो भी सिस्टम बनाएंगे वह फुली सिक्योर्ड रहेगा, हमारे इंजीनियरों द्वारा बनाया जाएगा और उसमें कोई भी थर्ड या इंटरनेशनल पार्टी का इन्वॉल्वमेंट नहीं रखेंगे। साथ ही RBI एक बहुत ही महत्वपूर्ण रेगुलेशन 3-4 साल पहले लेकर आया था जिससे डाटा-लोकालाइजेशन सुनिश्चित किया गया था।

भारत फिनटेक रेवोलुशन में इतना बढ़िया काम कर पाया, उसका एक यह कारण भी है कि हमारे देश के रेगुलेटर्स बहुत ही फॉरवर्ड-लुकिंग हैं जिन्होंने बैंक्स और पेमेंट संस्थाओं को यह अनुमति दी कि वह डिजिटल पेमेंट इकोसिस्टम में प्रवेश कर सकें। प्रधानमंत्री जन-धन जैसी योजनाओं से भी भारत का डिजिटल मानचित्र बदल चुका है।"

– नलिन बंसल
फिनटेक चीफ़, NPCI

छोटे दुकानदार और खोमचे वाले: कैशलेस क्रांति की ताकत

अपने 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत एक कैशलेस अर्थव्यवस्था में बदल रहा है। उन्होंने अक्सर नागरिकों से भुगतान के डिजिटल तरीकों का उपयोग करने की अपील की है। भारत डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में शीर्ष देशों में से एक है और रेहड़ी वाले और स्थानीय बाजारों के छोटे व्यापारी इस वृद्धि में एक प्रमुख उत्प्रेरक रहे हैं।

दूरदर्शन छोटे दुकानदारों, फुटपाथ विक्रेताओं और ग्राहकों, विशेषकर युवाओं तक पहुँचा, जिन्होंने यूपीआई भुगतान के लिए अपनी प्राथमिकता दिखाई।

एक छात्र का कहना है, **"यूपीआई भुगतान का तरीका लेनदेन करने का एक आसान और सुरक्षित माध्यम है।"** युवा उपयोगकर्ता यूपीआई भुगतानों के व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों और प्रधानमंत्री के नागरिकों को कैशलेस होने के आह्वान की भी सराहना कर रहे हैं।

डिजिटल भुगतान ने खुले बदलाव की चिंता किए बिना व्यापार को आसान बनाने को बढ़ावा दिया है। इस पर प्रधानमंत्री के विचारों के अनुरूप आज के युवाओं को लगता है कि लोगों को कैशलेस लेनदेन के उपयोग पर अधिक जोर देना चाहिए। इससे भौतिक धन खोने का कोई डर नहीं है।

छात्र, जो कि भारत की कैशलेस यात्रा के मुख्य हिस्सेदार हैं, यूपीआई को सुरक्षित और सुविधाजनक मानते हैं। एक विद्यार्थी का कहना है, **"मैं डिजिटल भुगतान को लेनदेन करने का एक आसान और सुरक्षित माध्यम मानता हूँ। चूंकि मैं एक छात्र हूँ, इसलिए मेरे लिए बड़ी राशि का भुगतान डिजिटल और सुरक्षित तरीके से करना बहुत सुविधाजनक है।"**

दूसरे शहर से आए एक प्रवासी युवा कर्मचारी ने अपना अनुभव साझा किया–

"देश का मौजूदा परिदृश्य ऐसा है कि हर छोटे-छोटे फूड स्टॉल और सड़क किनारे वेंडर्स के पास पैसा पाने के लिए क्यूआर कोड होता है। आज मेरे साथ जो हुआ उसका मैं आपको एक उदाहरण दूंगा। मैं एक दुकान पर गया और भुगतान के समय मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास जो सौ रुपये का नोट था वह फटा हुआ था। फिर दुकानदार ने मुझे UPI के माध्यम से राशि का ऑनलाइन भुगतान करने के लिए कहा और मैं यह जानकर चौंक गया कि वह UPI का उपयोग भी कर रहा था क्योंकि उसका एक 'नींबू पानी' स्टॉल था।"

"UPI का फायदा यह है कि अब हर ग्राहक सीधे मेरे खाते में पैसे भेज सकता है। कभी-कभी, जब किसी ग्राहक के पास फोन में इंटरनेट नहीं होता है, तो मैं लेनदेन को डिजिटल रूप से करने के लिए उसे अपना वाईफाई एक्सेस भी देता हूँ," एक जूस विक्रेता ने कहा।

कैशलेस अर्थव्यवस्था ने इन व्यापारियों को बृहद् वित्तीय समावेशन प्रदान किया है जो पहले पारम्परिक तरीकों से पूरा नहीं होता था। डिजिटल भुगतान द्वारा अपने व्यवसाय में बढ़ावा मिलने पर एक फल और सब्जी विक्रेता ने कहा, **"यूपीआई से मुझे जो एक फायदा हुआ है, वह यह है कि मेरे ग्राहक बढ़ रहे हैं। मेरे अधिकांश ग्राहक आज वे हैं जो डिजिटल भुगतान करना पसन्द करते हैं, छुट्टे की परेशानी के बिना।"**

ज़्यादातर लोगों का मानना था कि UPI से पैसा सीधे उनके खातों में जाता है जो न सिर्फ सुरक्षित है बल्कि बचत करने में भी सहायता करता है। एक सब्जी विक्रेता का कहना है, **"यह बहुत सुविधाजनक है क्योंकि पैसा बिना किसी परेशानी के सीधे मेरे खाते में स्थानांतरित कर दिया जाता है।"**

जानें खोमचे वाले और छोटे दुकानदारों का कैशलेस फ्यूचर के लिए योगदान, QR code scan करें।

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास

समावेशी नए भारत में दिव्यांगजनों के लिए प्रौद्योगिकी के लाभ

"हमारे दिव्यांग भाई-बहन क्या कर सकते हैं, यह हमने टोक्यो पैरालिंपिक्स में देखा है। खेलों की तरह ही, कला, अकेडेमिक्स और दूसरे कई क्षेत्रों में दिव्यांग साथी कमाल कर रहे हैं, लेकिन, जब इन साथियों को टेक्नोलॉजी की ताकत मिल जाती है, तो ये और भी बड़े मुकाम हासिल करके दिखाते हैं।"

– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' के अपने सम्बोधन में)

"मैं आदरणीय प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद करना चाहूँगा कि उन्होंने हमारे कार्य के बारे में 'मन की बात' में बताया। हज़ारों कार्यकर्ता, डोनर्स, इन्नोवेटर्स, सबकी तरफ से मैं उनको आभार व्यक्त करना चाहूँगा, और यह भी बताना चाहूँगा कि हम सब को यह महसूस हो रहा है कि हमारी ज़िम्मेदारी अब और बढ़ गई है।"

–प्रणव देसाई,
संस्थापक
वॉइस ऑफ स्पेशली एबल्ड पीपल

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2015 में अपने 'मन की बात' सम्बोधन में, गुजरात, अहमदाबाद के दृष्टिबाधित शिक्षक **दिलीप चौहान** की प्रेरक कहानी साझा की थी जिसमें दिलीप जी ने बताया था कि किस प्रकार उन्होंने अपने स्कूल में 'सुगम्य भारत दिवस' मनाया। उनकी कहानी से प्रधानमंत्री काफी प्रभावित हुए और उन्होंने सोचा कि किस तरह कुछ लोग दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटनाओं की वजह से अपना कोई अंग खो देते हैं, वहीं कुछ लोग "विकलांगता" या दोष के साथ पैदा होते हैं। बिना किसी गलती के इन उज्ज्वल और प्रतिभाशाली लोगों को अक्सर उनकी "विकलांगता" से पहचाना जाता है और समाज में अपमानित किया जाता है। कई बार उन्हें विकलांग और अशक्त जैसे अपमानजनक शब्दों से बुलाया व परेशान किया जाता है, जिसका उन पर मनोवैज्ञानिक रूप से हानिकारक प्रभाव पड़ता है। इसलिए, प्रधानमंत्री ने लोगों को उनके लिए "विकलांग" की जगह "दिव्यांग" शब्द का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया।

भारत में कुछ बेहद प्रतिभाशाली दिव्यांगजन हुए हैं जिन्होंने देश को गौरवान्वित किया है। उनमें से एक हैं **अवनि लेखरा**, जो टोक्यो 2020 पैरालिंपिक में निशानेबाज़ी में स्वर्ण पदक जीतने वाली इतिहास की पहली भारतीय महिला बनीं, जिसके लिए उन्हें हाल ही में पद्मश्री पुरस्कार मिला। राजस्थान के **सुन्दर सिंह गुर्जर** ने टोक्यो 2020 पैरालिंपिक में कांस्य पदक जीता। टोक्यो के लिए रवाना होने से पहले सुंदर ने कहा था, "मैं 2016 से टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (TOPS) के साथ जुड़ा हूँ और शुरुआत से ही इस स्कीम से और भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) द्वारा भी मुझे बहुत सहायता मिली है। यहाँ तक कि हाल ही में इन्होंने वेट रनिंग के लिए कृत्रिम अंग लगवाने और भाला खरीदने के लिए मुझे आर्थिक मदद भी दी, जिससे मुझे अपने थ्रो में बहुत सहायता मिली। उन्होंने मुझे जो सहयोग दिया है, उसके लिए मैं वास्तव में उनका शुक्रगुज़ार हूँ।"

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में इस बात पर ज़ोर दिया कि नए युग के नवाचारों और प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाकर दिव्यांगों की प्रतिभा को

"कुछ दिन पहले ही हम मोदीजी से मिलने दिल्ली गए। उनसे मिल कर आयुष को अपने अंदर एक अजीब सी ऊर्जा का अनुभव हो रहा था और हम सब को भी बहुत अच्छा महसूस हो रहा था। मोदीजी से मिल कर आयुष को प्रेरणा मिली कि इंसान को कभी भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और हमेशा आगे की ओर बढ़ते रहना चाहिए। अगर हम आगे की ओर बढ़ते रहेंगे तो हमें सफलता ज़रूर मिलेगी।"

- दिव्यांग कलाकार आयुष कुण्डल की माँ

निखारा जा सकता है। दिव्यांगजनों के लिए सुविधाओं और सेवाओं को समावेशी तथा सुलभ बनाने के लिए विभिन्न किफ़ायती सहायक उपकरण, तकनीक और प्रौद्योगिकी विकसित की जा सकती है, जो भारतीय परिवेश के अनुकूल हो, ताकि उनके लिए जीवनयापन आसान हो सके।

2014 से पहले सुगम्यता से जुड़े मुद्दों पर इतना ध्यान नहीं दिया जाता था। न तो निश्चित समयसीमा के साथ कोई मजबूत कानून बनाया गया था, न ही पहुँच सुनिश्चित करने के लिए कोई विशेष अभियान लागू किया गया था। लेकिन श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद, 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के अपने सिद्धान्त के अनुरूप स्थिति को बदलने का संकल्प लिया। सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने अपने

संसाधनों का उपयोग किया। दिव्यांगजनों की 'जीवन सुगमता' सुनिश्चित करने के लिए कई उपाय किए गए हैं जिनमें सुगम्य भारत अभियान और दिव्यांगों को सहायक उपकरण की खरीद/फिटिंग के लिए सहायता योजना (ADIP) शामिल हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में 'Voice of Specially Abled People' (VOSAP) के काम की प्रशंसा की। वीओएसएपी एक वैश्विक एडवोकेसी संगठन है जिसका उद्देश्य विकलांगता को फिर से परिभाषित करना है। इसने एक वैश्विक जन आन्दोलन चलाया है, जिसमें समान विचारधारा वाले लोगों ने विशेष रूप से सक्षम लोगों को सशक्त बनाने के लिए सार्वजनिक रूप से प्रतिज्ञा ली है। यह एडवोकेसी और सक्षमता के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण से काम करता है जिसमें शामिल है - वीओएसएपी मोबाइल ऐप जैसे प्रौद्योगिकी प्लेटफार्म का निर्माण, जन जागरूकता अभियान और ज़मीनी स्तर के आन्दोलन। 3D वीओएसएपी आर्ट गैलरी के शुभारम्भ के साथ, दिव्यांग कलाकारों की कला-कृतियों को दुनिया तक पहुँचाने के लिए एक अभिनव शुरुआत की गई है। वीओएसएपी ने इन कलाकारों के चित्रों

की एक डिजिटल आर्ट गैलरी तैयार की है। यह दिव्यांगता की थीम पर बनी दुनिया की पहली वर्चुअल आर्ट गैलरी है।

3 दिसम्बर, 2015 को शुरू किया गया, सुगम्य भारत अभियान तीन कार्यक्षेत्रों- निर्मित पर्यावरण, परिवहन क्षेत्र और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी इकोसिस्टम- में सुगम्यता की सुविधाएँ प्रदान करने की परिकल्पना करता है ताकि एक सार्वभौमिक बाधामुक्त वातावरण का निर्माण किया जा सके। अभियान और अभिगम्यता (accessibility) के अधिकार को पूर्ण कानूनी जामा पहनाने के लिए सरकार ने दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 को अधिनियमित किया, जिसे अप्रैल 2017 से लागू किया गया। 22 अक्टूबर, 2016 को प्रधानमंत्री मोदी ने उल्लेख किया कि प्रत्येक बुनियादी ढाँचे के सृजन के दौरान हमें अपने दिव्यांग बहनों और भाइयों की आवश्यकताओं के प्रति सजग रहना होगा।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी इकोसिस्टम में भी कई कदम उठाए गए हैं, जैसे वेबसाइटों, सार्वजनिक दस्तावेज़ों, टीवी पर मीडिया कन्टेंट को सुगम्य बनाना और दुभाषियों को सांकेतिक भाषा का प्रशिक्षण देना। राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों की सरकारों की 588 और केन्द्र सरकार की 95 वेबसाइटों को सुलभ बनाया गया है। माननीय प्रधानमंत्री की परिकल्पना के अनुरूप इस अभियान को जन-आन्दोलन में बदलने और जन-भागीदारी के लिए सुगम्य भारत ऐप - 'कोई भी-कहीं भी-कभी भी' एप्लिकेशन का प्रारम्भ 2 मार्च, 2021 को किया गया ताकि सुलभता से संबंधित मुद्दों को उठाया जा सके। दिव्यांग व्यक्तियों के लिए एक राष्ट्रीय डेटाबेस बनाने और प्रत्येक दिव्यांगजन को एक विशिष्ट दिव्यांगता पहचान पत्र जारी करने के लिए विशिष्ट आईडी (UDID) परियोजना को लागू किया जा रहा है।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016

- दिव्यांगों की सूचीबद्ध शर्तों को **7 से बढ़ाकर 21** किया गया
- इस अधिनियम में अब **एसिड अटैक, पार्किंसंस रोग, तंत्रिका संबंधी विकार, विशिष्ट सीखने की अक्षमता**, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार और रक्त विकार भी शामिल हैं
- नामकरण की दृष्टि से 'मानसिक मंदता' को **'बौद्धिक दिव्यांगता'** से बदला गया
- संदर्भित दिव्यांग बच्चों (6-18 वर्ष) के लिए **निःशुल्क शिक्षा का अधिकार**
- **दिव्यांगजनों को वित्तीय सहायता** प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय और राज्य निधि का निर्माण

VOSAP
वर्चुअल आर्ट गैलरी

VOSAP आर्ट फ्रॉम हार्ट *2020* में भाग लेने वाले दुनिया भर के दिव्यांग कलाकारों से प्राप्त हज़ारों कलाकृतियों में से चुनी गई *250+* प्रेरक चित्रों और डिजिटल कलाकृतियों की एक सुंदर वर्चुअल प्रदर्शनी

24 अप्रैल, 2022 को अपने 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि किस प्रकार प्रौद्योगिकी की शक्ति आम लोगों के जीवन को बदल सकती है और यह भी कि दिव्यांगजनों की असाधारण क्षमताएँ तथा कौशल का कैसे प्रौद्योगिकी की सहायता से दोहन किया जा सकता है और उससे समूचे देश तथा दुनिया को लाभान्वित किया जा सकता है। नेशनल ट्रस्ट ने पहले ही 'एक्शन फॉर एबिलिटी डेवलपमेंट एंड इन्क्लूज़न' (AADI) में सहायक उपकरणों के प्रदर्शन के लिए 'संभव' नामक एक राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र की स्थापना की है। केन्द्र, सहायक उपकरणों और नवीन तकनीकों के उपयोग के माध्यम से, विकासात्मक विकलांग व्यक्तियों के लिए स्वतंत्र या असिस्टेड लिविंग की संभावना को प्रदर्शित करता है।

सही मायनों में सुगम्यता लाने के लिए हमें नवाचार, टेक्नोलॉजी, सिस्टम्स और सहानुभूति की ज़रूरत है। भारत सरकार ने दिव्यांगजनों के लिए कई पहल की हैं और कई पर काम चल रहा है। प्रधानमंत्री के मज़बूत नेतृत्व और 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के उनके दृढ़ संकल्प के साथ, न केवल सरकार बल्कि सभी क्षेत्रों के नागरिक आगे आ रहे हैं और अधिक सुगम्य समाज के लिए प्रणालियाँ और उपकरणों का नवाचार तथा विकास कर रहे हैं। इस दिशा में अभी और भी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है, इसलिए 'अमृत काल' में दिव्यांगजनों के लिए जन आन्दोलन चलाने हेतु हम सब को इसमें शामिल होना होगा।

प्रधानमंत्री का आह्वान

"आप भी अगर किसी दिव्यांग साथी को जानते हैं, उनके टैलेंट को जानते हैं, तो डिजिटल टेक्नोलॉजी की मदद से उसे दुनिया के सामने ला सकते हैं। जो दिव्यांग साथी हैं, वे भी इस तरह के प्रयासों से ज़रूर जुड़ें।"

तकनीकी माध्यम से दिव्यांग कलाकारों को पंख देता
Voice of Specially Abled People

शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र होगा जिसे तकनीक ने न छुआ हो। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि दिव्यांगजनों के जीवन में भी तकनीक का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसका एक आदर्श उदाहरण है Voice of Specially Abled People (VOSAP), एक नॉन प्रॉफिट संगठन जो सहायक तकनीक के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य कर रहा है, और दुनिया भर में दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने और उन्हें जीवन में एक नई दिशा देने में कार्यरत है। वीओएसएपी सहायक तकनीक के प्रयोग से सुगम्यता, शिक्षा और रोज़गार को बढ़ावा देता है ताकि 21वीं सदी में दिव्यांगजनों के लिए एक समावेशी समाज का निर्माण किया जा सके।

यह संगठन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए अवसरों को बढ़ावा दे रहा है। वीओएसएपी की एक बहुत ही अनूठी पहल है -3D डिजिटल आर्ट गैलरी, जिसमें देश-दुनिया के कुछ असाधारण प्रतिभाशाली दिव्यांग कलाकारों की पेंटिंग प्रदर्शित की गई हैं। यह आर्ट गैलरी एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि कैसे प्रौद्योगिकी की मदद से प्रेरित व्यक्ति अपने दिव्यांग साथियों के लिए अवसरों के नए द्वार खोल रहे हैं। शारीरिक चुनौतियों के बावजूद भी यह प्रतिभाशाली कलाकार नई ऊँचाइयों को छू रहे हैं।

माननीय प्रधानमंत्री की प्रशंसा ने संगठन के उत्साह को और बढ़ा दिया है। प्रधानमंत्री द्वारा सराहना और मान्यता प्राप्त करने पर वीओएसएपी के संस्थापक **श्री प्रणव देसाई** ने प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया और लोगों से इस कार्य में शामिल होने का आग्रह किया। उन्होंने

श्री प्रणव देसाई - VOSAP टीम के साथ

बताया कि प्रौद्योगिकी और सहायक उपकरणों के माध्यम से दिव्यांग व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनाना उनकी संस्था का मूल उद्देश्य है। उन्होंने सभी लोगों को वीओएसएपी के आन्दोलन से जुड़ने का आमंत्रण देते हुए कहा कि हम सब मिलकर इस दिशा में एक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। साथ ही उन्होंने कहा, "यदि आप किसी दिव्यांग भाई-बहनों को जानते हैं, जिन्हें शिक्षा, गतिशीलता आदि के क्षेत्र में सहायता की आवश्यकता हो तो आप हमारी वेबसाइट voiceofsap.org पर जा सकते हैं और पंजीकरण कर सकते हैं। भारत में हमारे कई सहयोगी संगठन हैं जो निश्चित रूप से ज़रूरतमंदों को उपकरण मुहैया कराएंगे।"

देश दिव्यांगों के लिए संसाधनों और बुनियादी ढांचे को सुलभ बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास कर रहा है। न केवल सरकार हर क्षेत्र में दिव्यांगजनों के लिए अथक प्रयास कर रही है, बल्कि Voice of Specially Abled People जैसे संगठन भी दिव्यांगजनों को बेहतर मंच प्रदान करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में लगे हुए हैं, ताकि जब देश आगे बढ़े, तो दिव्यांग मित्र भी साथ चल सकें।

आयुष कुंडल- एक बेहतर भविष्य का सफर

अक्सर हम ऐसे असाधारण और साहसी दिव्यांग लोगों की प्रेरणादायक कहानियाँ सुनते हैं जिन्होंने अपनी शारीरिक चुनौतियों पर काबू पाकर अपनी प्रतिभा, इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प के माध्यम से अपनी योग्यता का प्रदर्शन किया। कुछ ऐसी ही कहानी मध्य प्रदेश के एक दिव्यांग फ़ुट कलाकार **आयुष कुंडल** की है, जो आज लाखों लोगों के लिए प्रेरणा हैं। आयुष सेरेब्रल पाल्सी से पीड़ित हैं, जिसके कारण उन्हें अपने दैनिक कार्यों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु कोई कठिनाई उन्हें ड्रॉइंग और पेंटिंग के अपने जुनून का अनुसरण करने से रोक न सकी।

उनके जीवन का एक प्रमुख मोड़ था Voice of Specially Abled People संस्थान द्वारा आयोजित वैश्विक कला प्रतियोगिता में भाग लेना। संस्थान के एक कार्यकर्ता के प्रोत्साहन पर, आयुष ने न केवल इस प्रतियोगिता में भाग लिया, बल्कि 18,000 रुपये नगद इनाम सहित प्रथम पुरस्कार जीता। इस उपलब्धि ने उनकी छिपी प्रतिभा और क्षमता को उजागर किया। उनकी पेंटिंग वीओएसएपी डिजिटल आर्ट गैलरी का भी एक हिस्सा है, जो दुनिया की पहली वर्चुअल आर्ट गैलरी है जो दिव्यांग लोगों की कलाकृति प्रदर्शित करती है।

यह आयुष की आशावादी सोच, समर्पण और कड़ी मेहनत ही थी कि आज वह

आयुष कुंडल - दिव्यांग कलाकार

अपनी कला के माध्यम से अपनी पहचान बना रहे हैं और इतने लोग उनके कार्य की प्रशंसा करते हैं। आज श्री नरेन्द्र मोदी और श्री अमिताभ बच्चन सहित कई लोग उन्हें सोशल मीडिया पर फॉलो करते हैं। हाल ही में उन्होंने प्रधानमंत्री से मुलाकात की जो उनकी कलात्मक प्रतिभा और सकारात्मक भावना से अत्यधिक प्रभावित थे और बोले कि आयुष से मिलना उनके लिए एक अविस्मरणीय अनुभव था। उन्होंने लोगों से उनकी पेंटिंग देखने का आग्रह किया।

आयुष का परिवार, विशेष रूप से उनकी माँ और बहन, एक मज़बूत स्तंभ के रूप में उनके साथ खड़ी रही हैं। उनकी माँ आज भी अपना अनुभव याद करती हैं जब वह आयुष के साथ प्रधानमंत्री जी से मिलने गई थीं। वह कहती हैं, "आयुष को यह देखकर बहुत खुशी हुई कि हमारे देश के प्रधानमंत्री एक दिव्यांग लड़के को प्यार से गले लगा रहे हैं और उसके साथ इतना अच्छा व्यवहार कर रहे हैं। यह वाकई बहुत अच्छा अनुभव था। आयुष को मोदीजी से प्रेरणा मिली कि इंसान को कभी उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए और हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए।" उन्होंने आगे कहा कि जब प्रधानमंत्री जी ने उनसे पूछा कि आयुष कैसे पेंट करता है, खाना खाता है, और हम उसकी बातें कैसे समझते हैं, तो उन्होंने मोदीजी को बताया कि वह उसकी आँखों से समझ जाती हैं कि वह क्या कहना चाहता है।

आयुष का परिवार भली-भाँति जानता है कि एनजीओ वीओएसएपी ने आयुष और हज़ारों अन्य दिव्यांगजनों के जीवन में क्या भूमिका निभाई है। उनकी माँ और बहन भी इस संस्थान से वॉलंटियर्स के तौर पर जुड़े हैं।

आयुष की कहानी बताती है कि समाज दिव्यांगजन की वास्तविक क्षमता और प्रतिभा को उजागर करने में क्या भूमिका निभा सकता है। साथ ही, इस तथ्य पर भी प्रकाश डालती है कि दिव्यांगजन बेहद प्रतिभाशाली हैं, उन्हें केवल अवसर और सही मंच की आवश्यकता है।

अमृत सरोवर अभियान

जल संरक्षण की ओर एक अनूठा कदम

"साथियो, इस समय आज़ादी के 75वें साल में, आज़ादी के अमृत महोत्सव में, देश जिन संकल्पों को लेकर आगे बढ़ रहा है, उनमें जल संरक्षण भी एक है। अमृत महोत्सव के दौरान देश के हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाए जाएंगे। जल से जुड़ा हर प्रयास हमारे कल से जुड़ा है। हम बूँद-बूँद जल बचाएंगे और हर एक जीवन बचाएंगे।"

– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के अपने सम्बोधन में)

"मुझे बहुत अच्छा लगता है जब मैं कोसी नदी में पानी बहते हुए देखती हूँ। मैं जलसंरक्षण के लिए काम करती रहूंगी क्यूंकि जल ही जीवन है। मैं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का धन्यवाद करना चाहूंगी कि उन्होंने मेरे काम को सराहा और भारत सरकार को भी मुझे पद्मश्री से सम्मानित करने के लिए धन्यवाद कहना चाहूंगी।"

- पद्मश्री बसंती देवी

भारत में गर्मी लगभग अपने चरम पर है। बढ़ते तापमान और लू के साथ देश के कई हिस्सों में पानी की कमी की समस्या भी बढ़ जाती है। पानी की कमी न केवल इंसानों बल्कि जानवरों को भी प्रभावित करती है। जल संरक्षण का विषय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भी बहुत करीब है। देश के हर घर में स्वच्छ पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने की उनकी परिकल्पना न केवल मनुष्यों, अपितु जानवरों, एवं आने वाली पीढ़ियों के संदर्भ में भी है। यह एक ऐसा मंत्र बन गया है, जिस पर पूरी सरकार अथक रूप से काम कर रही है।

भारत के जल योद्धाओं का सम्मान

राष्ट्र के नेता के रूप में, मोदीजी न केवल संधारणीय भविष्य की दिशा में सरकार के प्रयासों के लिए प्रमुख प्रेरक हैं, बल्कि सभी नागरिकों के लिए भी एक प्रेरणा हैं। **रोहन काले, अरुण कृष्णमूर्ति, मुपट्टम श्रीनारायण,** देश भर के कुछ जल-योद्धा हैं जो जल संरक्षण अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं। भारत सरकार ऐसे सभी जल योद्धाओं की बहुत सराहना करती है जो देश में पर्याप्त मात्रा में जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए ज़मीनी स्तर पर काम कर रहे हैं। **बलबीर सिंह सीचेवाल, पोपटराव बागुजी पवार, तेत्सु नाकामुरा, बसंती देवी** व अन्य कई लोगों को पिछले आठ वर्षों में पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

ऐसी ही एक प्रेरणादायक महिला हैं, उत्तराखंड के पिथौरागढ़ की रहने वाली बसंती देवी, जो एक पर्यावरणविद हैं, जिन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। कोसी नदी को सूखने से बचाने का उनका अथक प्रयास सभी के लिए एक प्रेरणा है। कोसी नदी को फिर से जीवित करने के लिए उन्होंने जागरुकता अभियान चलाया। वह वन विभाग तथा गाँव की महिलाओं को एक साथ लेके आईं जिन्होंने पुनः वनरोपण के प्रयासों में एक-दूसरे का सहयोग किया। वर्ष 2016 में उन्हें भारत में महिलाओं के लिए सर्वोच्च पुरस्कार 'नारी शक्ति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

एक आह्वान जिसने एक अरब लोगों को प्रेरित किया

मार्च 2022 के अपने 'मन की बात' सम्बोधन में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नागरिकों से आह्वान किया- "... हर जिले में कम से कम 75 अमृत सरोवर बनाए जा सकते हैं। कुछ पुराने सरोवरों को सुधारा जा सकता है, कुछ नए सरोवर बनाए जा सकते हैं। मुझे विशवास है, आप इस दिशा में कुछ ना कुछ प्रयास ज़रूर करेंगे।" इस संकल्प ने देश भर में कई लोगों को प्रेरित किया। ऐसा ही एक उदाहरण उत्तर प्रदेश के रामपुर की ग्राम पंचायत पटवई के नागरिकों का है, जिन्होंने अपने संयुक्त प्रयासों से एक पुराने तालाब को अमृत सरोवर में बदल दिया। इस गाँव का तालाब, जो पहले गंदगी और कचरे के ढेर से भरा हुआ था, उसे पंचायत, स्थानीय लोगों और सबसे महत्वपूर्ण- स्कूली बच्चों के प्रयासों से कुछ ही हफ्तों में कायाकल्प कर पुनर्जीवित कर दिया गया। यह अमृत

"माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गया अमृत सरोवर अभियान एक बहुत ही अच्छा कदम है। हमारे पटवाई का तालाब बहुत ही बुरी स्थिति में था। यहाँ हमेशा गन्दगी और कूड़ा भरा रहता है। पर अब सारा कूड़ा यहाँ से हटा दिया गया है और तालाब का सौंदर्यीकरण किया गया है। हम खुश हैं कि अब लोग इस अमृत सरोवर को देखने आया करेंगे।"

- शहनाज़
निवासी, ग्राम पंचायत पटवाई,
रामपुर (ऊ. प्र.)

सरोवर अब पक्की दीवार, एक फूड कोर्ट, फव्वारे और लाइट्स से सुशोभित है।

भारत सरकार, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में, अमृत सरोवर अभियान को अखिल भारतीय अभियान में बदलने के लिए अब एक बड़ा कदम उठा रही है। 24 अप्रैल 2022 को प्रधानमंत्री ने जम्मू और कश्मीर से 'अमृत सरोवर अभियान' की शुरुआत की। उन्होंने 28 अप्रैल 2022 को असम में 2,950 से अधिक अमृत सरोवरों की आधारशिला भी रखी। यह पूरे देश के लिए गर्व का क्षण है कि प्रधानमंत्री की परिकल्पना को साकार करने के लिए, इतने कम समय में समूचे भारत में नागरिकों के साथ प्रशासन आगे आ रहा है। वह दिन दूर नहीं जब हमारे देश के हर ज़िले में 75 अमृत सरोवर होंगे।

जल-संरक्षण: एक प्राचीन भारतीय परंपरा

पानियम् परमम् लोके,
जीवानाम् जीवनम् समृतम्

जल सबसे बड़ा संसाधन और प्रत्येक जीव के लिए जीवन का आधार है। वेदों से लेकर पुराणों तक देखा जा सकता है कि हमारे पूर्वजों ने हमेशा जल-संरक्षण पर ज़ोर दिया है। जल-संरक्षण के लिए तालाबों, झीलों और अन्य संरचनाओं का निर्माण करना व्यक्ति का सामाजिक और आध्यात्मिक कर्तव्य माना गया है। हमारे पूर्वजों ने प्राचीन सिंधु-सरस्वती और हड़प्पा सभ्यताओं के दौरान भी इंजीनियरिंग के चमत्कार किए। प्राचीन नगरों में जल स्रोतों की परस्पर प्रणाली, धोलावीरा के जलाशय आदि से पता चलता है कि प्राचीन काल में भी जल-संरक्षण के प्रति बहुत अधिक जागरूकता थी। आज हम जैसे-जैसे प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं, हम इन प्राचीन चमत्कारों को भूल रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नागरिकों से जल-संरक्षण की ऐसी पारंपरिक संरचनाओं का पता लगाने और उन्हें अमृत सरोवर में बदलने का आग्रह किया।

धोलावीरा की बावली

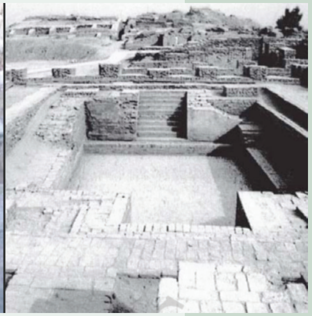

मोहन जोदड़ो का बृहत्स्नानागार

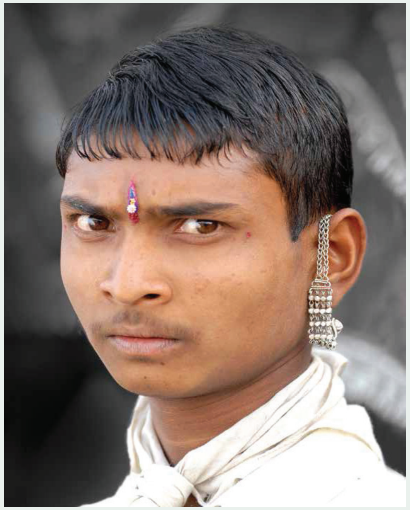

पारम्परिक वेशभूषा में भील युवक

समाज में बदलाव लाने में समुदाय सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब समुदाय एक साथ आते हैं, तो हर पहल सफल होती है। ऐसा ही एक उदाहरण मध्य प्रदेश की भील जनजातियों की 'हलमा' परंपरा का है। यह एक ऐसी प्रथा है जिसमें भील समुदाय परस्पर चर्चा के माध्यम से जल-संरक्षण जैसी चुनौतियों का मिलजुल कर समाधान ढूँढता है। हर साल मार्च के महीने में, मध्य प्रदेश के पूरे झाबुआ जिले में 'हलमा' की पुकार पर अपना योगदान देने के लिए 8,000 से अधिक लोग निस्वार्थ भाव से प्रकृति माँ के लिए हाथीपावा की पहाड़ी पर आते हैं। उनके प्रयासों से क्षेत्र में जल संकट कम हुआ है और भूजल बढ़ना शुरू हो गया है। एक और उल्लेखनीय उदाहरण गुजरात के कच्छ के रण की मालधारी जनजाति का है, जो जल-संरक्षण के लिए 'वृदास' नामक विधि का उपयोग करते हैं, जिसके तहत छोटे-छोटे कुएँ बनाए जाते हैं और इसकी रक्षा के लिए आस-पास पेड़-पौधे लगाए जाते हैं।

चाहे बसंती देवी के प्रयासों से कोसी नदी को पुनर्जीवित किया जाना हो या उत्तर प्रदेश के रामपुर में अमृत सरोवर का निर्माण, चाहे वह 'हलमा' हो या 'वृदास' परंपराएँ, यह सभी साबित करते हैं कि प्रेरित व्यक्ति और सचेत समुदाय समाज में परिवर्तन ला सकते हैं। आइए हम 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मनाने के दौरान, पानी की हर बूँद को संरक्षित करने का संकल्प लें और भारत को जल समृद्ध देश बनाएँ।

प्रधानमंत्री का आह्वान

"मैं, आप सभी से, और खासकर, युवाओं से चाहूँगा कि वे इस अभियान के बारे में जानें और इसकी जिम्मेदारी भी उठाएं। अगर आपके क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा कोई इतिहास है, किसी सेनानी की स्मृति है, तो उसे भी अमृत सरोवर से जोड़ सकते हैं।"

"आइए, आज़ादी के अमृत महोत्सव में हम जल-संरक्षण और जीवन-संरक्षण का संकल्प लें। हम बूँद-बूँद जल बचाएंगे और हर एक जीवन बचाएंगे।"

पानी की तरह चलायमान हैं बसंती देवी

जल है तो जीवन है। जल के बिना जीवन नहीं होगा, भूमि बंजर हो जाएगी और मानवजाति जीवित नहीं रहेगी। जल ही जीवन है।

मैंने लगभग 17-18 वर्ष पहले 'जल, जंगल, जमीन' की शुरुआत की थी। कोसी नदी सूख रही थी और जंगल कट रहे थे। एक दिन रास्ते में मुझे कुछ महिलाएँ मिलीं जो जंगल काटने जा रही थीं। मैंने उनसे पूछा, "आप पेड़ क्यों काटते हो?" उन्होंने कहा, "केवल हम ही नहीं पेड़ काटते, गाँव में हर कोई ऐसा करता है।"

मैंने कहा, "अगर आप मेरा साथ देंगे, तो मैं आपका साथ दूंगी। हम एक एसोसिएशन बनाएंगे और वनों को बचाएंगे।" जल्द ही सभी मेरे साथ आ गए और हमने पुनः वनरोपण शुरु किया। हम अपनी एसोसिएशन को मज़बूत करने के लिए गाँव-गाँव गए। हाथों में माँ कोसी का जल लेकर हम 15 दिन पैदल चले। सब ने कहा, "माँ, आज तक तुमने हमें ज़िंदा रखा, लेकिन अब से हम तुम्हें जीवित रखेंगे।"

आज नदी में भरपूर पानी है। मैं जब कोसी नदी में पानी बहता देखती हूँ तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।

जब मैं बालवाड़ी में काम करती थी, तो मुझे केवल 50 रुपये प्रति माह मिलते थे, जिसमें मैं अपनी आजीविका चलाती थी, लेकिन आज सरकार ने मुझे मेरे कार्य के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया है।

मैं पानी की तरह चलायमान रहूंगी और हमेशा पानी की सेवा करती रहूंगी।

सहयोग से समृद्धि

मालधारी जनजाति के जन प्रयास और सरकारी पहल से सूखाग्रस्त कच्छ में आया पानी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' के सम्बोधन में गुजरात की मालधारी जनजाति का वर्णन किया। कच्छ का ये बंजारों और चरवाहों का समुदाय 'वृदास' नामक अपनी परंपरा के माध्यम से कुशलता से पानी का संरक्षण करता आया है। 'वृदास' के तहत इस जनजाति के लोग नदी के किनारे छोटे-छोटे कुएँ बनाते हैं, और उनकी रक्षा के लिए आस-पास पौधारोपण भी किया जाता था। इन कुओं की मदद से मालधारी जनजाति के पालतू मवेशियों को भूजल मिला करता था। लेकिन कच्छ काफी समय से पानी से ग्रसित क्षेत्र में तब्दील हो चुका है, जिसका असर न केवल मालधारी जनजाति बल्कि उन किसानों पर भी पड़ा है जो खेती के लिए पूरी तरह से सिर्फ मानसून की बारिश पर निर्भर रहते हैं।

वृदास परम्परा

इस क्षेत्र में जल प्रबंध के लिए सरकार द्वारा किए गए कई प्रयासों में से सबसे महत्वपूर्ण है सरदार सरोवर डैम से निकली वे नहरें जो कि गुजरात और पड़ोसी राज्यों के कई सूखाग्रसित इलाकों तक नर्मदा का पानी ले जाती हैं।

मालधारी जनजाति का घर, यानी कि कच्छ, जहाँ कभी हफ्तों तक पानी नहीं पहुँचता था, वहाँ अब नर्मदा-कच्छ नहर के माध्यम से माँ नर्मदा का आशीर्वाद पहुँच रहा है। मालधारी जनजाति के **श्री विष्णु अहीर** बताते हैं कैसे इस नहर के आने से क्षेत्र के लोगों के जीवन में एक बड़ा बदलाव आया है। **"पहले पानी की कमी के कारण मालधारी लोगों को बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता था, उन्हें दूर-दूर तक पानी ढूंढने जाना पड़ता था। पर जब से ये नहर हमारे क्षेत्र में आई है, इस समस्या का समाधान हो गया है। अब हमारे पास पानी है जिसका इस्तेमाल हम बहुत सहजता से करते हैं।"** मालधारी जनजाति के एक और सदस्य, **नागजी भाई रबारी** बताते हैं कि नहर के कारण अब क्षेत्र के बाँधों और तालाबों में फिर से पानी आ गया है।

मालधारी जनजाति का 'वृदास' परंपरा के रूप में सामूहिक प्रयास और साथ ही नहरों के नेटवर्क के माध्यम से नर्मदा के पानी को कच्छ में लाने की सरकार की पहल, कच्छ को समृद्धि की ओर ले जाने में मदद कर रही हैं।

अमृत सरोवर, पटवाई, रामपुर (उत्तर प्रदेश) – आगाज़ से अंजाम तक

देश में बनने जा रहे अमृत सरोवरों की श्रृंखला में पहला है पटवाई गाँव का अमृत सरोवर। एक तालाब, जो पहले गन्दगी और कूड़े से भरा था, उसे स्थानीय प्रशासन एवं जनता के सामूहिक प्रयास से पुनर्निर्मित, पुनर्जीवित किया गया एवं अमृत सरोवर का रूप दिया गया।

2018 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'कैच द रेन' अभियान की शुरूआत की। इसके पश्चात्, वर्तमान संभागीय आयुक्त, श्री अंजनये कुमार सिंह ने ग्राम पंचायत के पुराने तालाब को पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया। उस समय, ये तालाब गन्दगी एवं कचरे से भरा रहता था, एवं अवैध अतिक्रमण से घिरा हुआ था।

इस निर्णय के बाद 17 फरवरी 2020 को उत्तर प्रदेश की राज्यपाल, आनंदी बेन पटेल ने इस परियोजना की आधारशिला रखी। क्षेत्र के स्थानीय लोग, खासकर स्कूली छात्रों ने इस परिवर्तनकारी कार्य में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। ग्राम पंचायत पटवाई के स्थानीय निवासी **महेश यादव** कहते हैं कि, **"अमृत सरोवर में तब्दील हुए इस तालाब में पहले कूड़ा भरा रहता था। पर अब यह अमृत सरोवर पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करेगा एवं इस से हमारी ग्राम पंचायत को बहुत लाभ पहुँचेगा।"**

आज, इस तालाब का सौंदर्यीकरण रिटेनर और बाउंड्री दीवारों, लाइट्स, फव्वारों एवं फ़ूड कोर्ट से किया जा चुका है। अमृत सरोवर के परिसर में नावों की व्यवस्था होने से पर्यटक नौका विहार का आनंद भी ले सकते हैं।

'मन की बात' में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा इस अमृत सरोवर का उल्लेख करने के बाद से पटवाई क्षेत्र के प्रशासन एवं निवासियों में एक खुशी की लहर है। उनके प्रयासों की सराहना उच्चतम स्तर पर हो रही है, ये जान कर क्षेत्र के लोग बहुत आनंदित हैं। पटवाई निवासी **राजीव कुमार रस्तोगी** का कहना है, **"पहले लोग इस तालाब में कचरा फेंका करते थे, फिर हमारे जिला अधिकारी श्री अंजनये कुमार सिंह द्वारा स्वच्छता के लिए फैलाई गई जागरुकता के कारण लोगों ने तालाब में कचरा डालना बंद किया। लोगों की मदद और ग्राम पंचायत के प्रयास से, आज हमारे पटवाई को अमृत सरोवर के लिए जाना जा रहा है। क्षेत्र के निवासी बहुत खुश हैं कि प्रधानमंत्री जी ने हमारे अमृत सरोवर का उल्लेख राष्ट्रीय स्तर पर किया है। हम चाहते हैं कि देश के हर हिस्से में ऐसे अमृत सरोवर बनें। इससे न सिर्फ रोज़गार बढ़ेगा, बल्कि क्षेत्र के जल स्तर में भी सुधार आएगा।"** पटवाई के ग्राम प्रधान **जमील अहमद अंसारी** ने ग्राम पंचायत के अमृत सरोवर की सराहना करने के लिए प्रधानमंत्री का धन्यवाद किया और कहा, **"नवनिर्मित अमृत सरोवर केवल हमारे गाँव, पड़ोसी शहरों से पर्यटकों को ही नहीं, बल्कि देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों को भी आकर्षित करेगा। इससे हमारी आय में वृद्धि होगी।"**

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति

गणित के कठिन सवालों को बनाए सरल

"गणित को लेकर पूरी दुनिया के लिए सबसे ज़्यादा शोध और योगदान भारत के लोगों ने ही तो दिया है। आर्यभट्ट से लेकर रामानुजन जैसे गणितज्ञों तक गणित के कितने ही सिद्धान्तों पर हमारे यहाँ काम हुआ है। साथियो, हम भारतीयों के लिए गणित कभी मुश्किल विषय नहीं रहा, इसका एक बड़ा कारण हमारी वैदिक गणित भी है।"

– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के अपने सम्बोधन में)

"मन की बात में मिले प्यार, सम्मान और समर्थन के लिए मैं माननीय प्रधानमंत्री का आभारी हूँ! भारत में आज वैदिक गणित समुदाय उत्साहित है और हम भारत को विश्व की गणित राजधानी बनाने का प्रयास कर रहे हैं।"

– गौरव टेकरीवाल
संस्थापक अध्यक्ष,
वैदिक मैथ्स फोरम इंडिया

भारत समृद्ध इतिहास, परम्पराओं और संस्कृतियों का देश रहा है। यहाँ दुनिया की सबसे अधिक युवा आबादी भी है। इस कारण हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम युवा पीढ़ी के मन में भारतीय धरोहर और यहाँ की अनुपम संस्कृति के बारे में कुतूहल पैदा करें, जिससे देश की भविष्य युवा शक्ति को नई दिशा मिल सके, जो नए भारत की उज्ज्वल उम्मीद सरीखी होगी।

आगामी स्कूली परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के अपने सम्बोधन में शिक्षा के एक ऐसे विषय पर प्रकाश डाला जो सदा से युवाओं की चिन्ता का केन्द्र रहा है—गणित का विषय। हाल ही में हुई 'परीक्षा पे चर्चा 2022' के दौरान विद्यार्थियों के साथ वार्तालाप में उन्हें यह महसूस हुआ कि अनेक युवा विद्यार्थी गणित के विषय से डरते हैं। प्रधानमंत्री को हैरानी हुई कि युवा गणित से भयभीत रहते हैं, जबकि यह एक ऐसा विषय है जिसमें भारतीयों की नैसर्गिक पैठ होनी चाहिए, क्योंकि गणित के क्षेत्र में अनेक भारतीयों के योगदान किंवदंतियों की तरह याद किए जाते हैं। इसीलिए युवा पीढ़ी को भारतीय गणित के समृद्ध इतिहास और गणित को खेल-खेल में आसानी से सीखने की युक्तियों से अवगत कराने की आवश्यकता है।

भारतीय उपमहाद्वीप में गणित का समृद्ध इतिहास 3,000 वर्षों से भी पुराना है और शेष विश्व द्वारा इस दिशा में कदम बढ़ाने से सदियों पहले ही यहाँ उसका व्यापक अध्ययन किया जाता था। शून्य के योगदान के साथ-साथ, भारतीय गणितज्ञों ने त्रिकोणमिति, बीजगणित, अंकगणित, और ऋणात्मक संख्या (नेगेटिव नम्बर्स) सहित अन्य क्षेत्रों में मौलिक योगदान दिया है। इस दिशा में दुनिया भर में आज जिस दशमलव पद्धति का चलन हम देखते हैं, उसका आरम्भ भी भारत में ही हुआ था।

शून्य से अनंत तक

भारत में शून्य के आविष्कार का विश्व पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसने इतिहास की धारा बदल दी थी। ऐसा माना जाता है कि यदि शून्य का आविष्कार न होता

"अपने 'मन की बात' सम्बोधन के माध्यम से, माननीय प्रधानमंत्री ने आधुनिक समय में वैदिक गणित के महत्व को सही ढंग से साझा किया है और मुझे आशा है कि यह छात्रों और उनके माता-पिता के लिए इस बदलाव को अपनाने और उनकी गणितीय क्षमताओं को और बढ़ाने के लिए आसान बना देगा।।"

– मुकुल अग्रवाल
निदेशक, टैलेंट सिनर्जी इंडिया

तो आज जिस वैज्ञानिक प्रगति को हम देख रहे हैं, वह शायद सम्भव नहीं होता। कैलकुलस से कम्प्यूटरों तक के सभी वैज्ञानिक आविष्कार शून्य पर आधारित हैं। विज्ञान जगत में शून्य का महत्व विज्ञान के सिद्धान्तों में भी स्पष्ट होता है। न्यूटन के नियम हों या आइन्स्टाइन

की प्रसिद्ध इक्वेशन, ब्रह्माण्ड में विज्ञान का हर एक पहलू गणित से सम्बन्ध रखता है। "Theory of Everything" (सर्वतत्व सिद्धान्त) को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिक आज ऐसे एकल सिद्धान्त को प्रतिस्थापित करने के प्रयास में हैं, जो ब्रह्माण्ड में मौजूद हरेक वस्तु को व्याख्यायित कर सके। शून्य के बिना यह प्रयास भी असम्भव होता। ऐसा कहा जाता है कि हमारे ऋषियों ने गणित की सहायता से ही वैज्ञानिक समझ के ऐसे विस्तार की कल्पना की थी।

भारत में शून्य का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य...

यह ग्वालियर किले के एक छोटे से विष्णु मंदिर में 876 सीई में पाया गया था।

भीतरी कक्ष के अंदर, विष्णु के दाहिने हाथ की ओर, समर्पण की टैबलेट है । टैबलेट एक पड़ोसी मंदिर को भूमि अनुदान की तारीख (स्थानीय युग में, जो 57 बीसीई में शुरू हुआ) और आयाम दर्ज करता है।

क्या आप जानते हैं ?

प्राचीन भारत में शून्य को एक बिंदु द्वारा दर्शाया जाता था। यह समय के साथ-साथ '0' के रूप में विकसित हुआ।

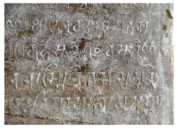

वहीं, प्राचीन भारत के वेदान्त दर्शन में अनंत (infinity) का उद्भव और उसकी अवधारणा का प्रतिपादन और अभिव्यक्ति मिलती है। आम बोलचाल में जब हम अंकों की बात करते हैं तो हम लाख, करोड़ और अरब तक सोच पाते हैं, परंतु वेदों और भारतीय गणित में यह योग कहीं आगे तक जाता है। अनंत और शून्य के रूप में प्राचीन भारतीय गणित के ऐतिहासिक योगदान को वैश्विक स्वीकार्यता मिली है और इसने मानव सभ्यता की प्रगति में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक गणित, जो कि बरगद के वृक्ष की तरह तेज़ी से फैल रहा है, उसकी जड़ों में भारत से उपजे अनंत और शून्य के सिद्धान्त निहित हैं। प्राचीन भारत में जो प्रगति हुई वह हमारी गणितीय तौर पर जागृत संस्कृति को दर्शाती है।

भारतीय गणित की विभूतियाँ

माननीय प्रधानमंत्री मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में इंटेल के सी.ई.ओ **श्री पैट जैल्सिंगर** के साथ अपनी एक मुलाकात का भी उल्लेख किया। मुलाकात के दौरान श्री जैल्सिंगर ने उन्हें एक चित्र भेंट किया था जिसमें "वामन अवतार (भगवान विष्णु के 10 अवतारों में से पाँचवें अवतार) द्वारा गणना या मापन की भारतीय पद्धति" के बारे में बताया गया था। यह प्रधानमंत्री के लिए गर्व का अवसर था। आगे उन्होंने कम्प्यूटरों और गणित के रोचक आपसी संबंध पर भी प्रकाश डाला। हमारे देश में गणित के इतिहास में आचार्य पिंगला जैसे महान ऋषियों

का अभूतपूर्व योगदान रहा है, जिन्होंने बाइनरी के सिद्धान्तों के बारे में सर्वप्रथम समझाया था। इसी तरह, आर्यभट्ट और रामानुजन जैसे महान गणितज्ञों के कार्य और उनके योगदान भी हैं जिनका उल्लेख भारतीय गणित की धारा बदलने में अवश्य किया जाना चाहिए।

वैदिक गणित : गणित को बनाए रोचक और सरल

युवा पीढ़ी के गणित के भय से जुड़ी उनकी चिंताओं को दूर करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें वैदिक गणित के मार्ग पर प्रशस्त होने को कहा। उन्होंने कहा कि भारत में वैदिक गणित के अस्तित्व के कारण हम भारतीयों के लिए गणित कभी कठिन विषय नहीं रहा है। आधुनिक समय में वैदिक गणित का श्रेय **श्री भारती कृष्ण तीर्थ जी महाराज** को जाता है। उन्होंने गणनाओं की प्राचीन पद्धति को पुनर्जीवित कर उसे वैदिक गणित की संज्ञा दी थी। उनकी शिष्या और नागपुर के श्री विश्व पुनर्निर्माण संघ की माननीय महासचिव, **मंजुला त्रिवेदी** के अनुसार, "श्रृंगेरी के वनों में आठ वर्षों की कड़ी तपस्या और कठिन शोध के बाद आदरणीय गुरूजी ने अथर्ववेद से सोलह गणितीय सिद्धान्तों का पुनर्निर्माण किया था।" इतने सूक्ष्म प्रयासों से ही विश्व को प्राचीन भारतीय पद्धति में लिपटे आधुनिक गणित की भेंट दी जा सकती है, जिसकी मदद से मन-ही-मन सबसे कठिन गणनाएँ पल भर में की जा सकें।

भारतीय गणित के विद्वान

आचार्य पिंगला (300 बीसीई)

आचार्य पिंगला एक प्राचीन भारतीय कवि और गणितज्ञ थे। उन्होंने चंदशास्त्र लिखा, जहाँ उन्होंने गणितीय रूप से संस्कृत कविता का विश्लेषण किया।

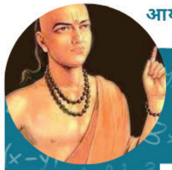

आर्यभट्ट (476-550 सीई)

आर्यभट्ट भारतीय शास्त्रीय युग के महान गणितज्ञ-खगोलविदों में से एक थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- आर्यभटीय और आर्य-सिद्धांत ।

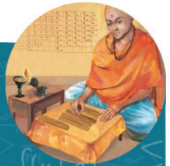

ब्रह्मगुप्त (598-668 सीई)

ब्रह्मगुप्त एक महान भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे जिन्होंने गणित और खगोल विज्ञान पर कई महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखीं। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 628 सी में भीनमाल में लिखी गई ब्रह्मस्फुट सिद्धांत है।

भास्कर II (598-668 एडी)

भास्कर II प्रसिद्ध गणितीय ग्रंथ लीलावती और बीजगणित के लेखक हैं। एक कुशल गणितज्ञ होने के साथ-साथ वे एक महान शिक्षक और गणित के लोकप्रिय प्रवर्तक थे। उनके खगोल विज्ञान,सिद्धांत शिरोमणि और करण कुरुहला पर किए गए काम में त्रिकोणमिति के कई महत्वपूर्ण परिणाम शामिल हैं।

श्रीनिवास रामानुजन (1887-1920)

रामानुजन ने रीमैन की श्रृंखला, अण्डाकार इंटीग्रल, हाइपरजोमेट्रिक श्रृंखला और जीटा फ़ंक्शन के कार्यात्मक समीकरणों पर काम किया। रामानुजन की सबसे प्रसिद्ध कृति एक पूर्णांक संख्या के विभाजन p(n) की संख्या पर थी।

आधुनिक समय में वैदिक गणित के विकास से मौजूदा पीढ़ी को होने वाले लाभ पर माननीय प्रधानमंत्री मोदी ने

वैदिक गणित क्या है?

गणित की प्राचीन प्रणाली सरल नियमों के आधार पर गणना की एक अनूठी तकनीक का उपयोग करती है जिसे गणित की पूरी श्रृंखला को आसानी से हल किया जा सकता है।

16 सूत्र

ये सूत्र उस तरीके का वर्णन करते हैं जिस तरह से दिमाग स्वाभाविक रूप से काम करता है, और इसलिए छात्रों को उपयुक्त विधि से समाधान करने में एक बड़ी मदद करता है।

एकाधिकेन पूर्वेण	पिछले की तुलना में एक से अधिक
निखिलं नवतश्चरमं दशतः	सभी 9 से और अंतिम 10 से
ऊर्ध्वतिर्यग्भ्याम्	लंबवत और क्रॉसवाइज
परावर्त्य योजयेत्	स्थानांतरित करें और समायोजित करें
शून्यं साम्यसमुच्चये	जब राशि समान हो। वह योग शून्य है
शून्यमन्यत्	यदि एक अनुपात में है तो दूसरा शून्य है
संकलनव्यवकलनाभ्याम्	जोड़ और घटाव द्वारा
पूरणापूरणाभ्याम्	पूरा होने या पूरा न होने से
चलनकलनाभ्याम्	अंतर और समानताएं
यावदूनम्	कमी से
व्यष्टिसमष्टिः	भाग और संपूर्ण
शेषाण्यंकेन चरमेण	अंतिम अंक से शेष
सोपान्त्यद्वयमन्त्यम्	परम और दुगुना अंतिम
एकन्यूनेन पूर्वेण	पिछले से एक कम
गुणितसमुच्चयः	योग का उत्पाद
गुणकसमुच्चयः	योग का गुणनखंड गुणनखंडों के योग के बराबर होता है

कोलकाता के वैदिक गणित अध्यापक **श्री गौरव टेकरीवाल** के साथ बातचीत की। दो दशकों की कड़ी मेहनत के बाद श्री टेकरीवाल ने ना केवल भारतीय छात्रों को बल्कि दुनिया के दूरस्थ कोनों तक इस विद्या का प्रसार किया है।

एक और वैदिक गणित विशेषज्ञ भी प्रशंसा के पात्र हैं जो पच्चीस वर्षों से अध्यापकों को प्रशिक्षण देने और बुनियादी गणित को सरल बनाते हुए, वैदिक गणित को आमजन के निकट लाने में जुटे हुए हैं। इनका नाम है **श्री मुकुल अग्रवाल**। ख़ास तौर से पेशेवर संस्थानों एवं मरीन उद्योग के लिए श्री अग्रवाल ने अनेक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम किए हैं, इस दौरान उनका सिद्धान्त रहा है 'विद्यार्थी कभी असफल नहीं होता, बल्कि अध्यापक असफल होता है।'

यह जगजाहिर है कि गणित को आसानी से जटिल से सरल बनाया जा सकता है। इसलिए माननीय प्रधानमंत्री ने प्रशिक्षार्थियों और उनके अभिभावकों से आह्वान किया कि वे अपने बच्चों को वैदिक गणित के सिद्धान्तों से अवगत कराएं और फिर देखें कि कैसे उनकी विश्लेष्णात्मक क्षमता में असाधारण वृद्धि होती है। इतना ही नहीं, 'गणित भय' से निपटने और उसके स्थाई निदान के लिए वैदिक गणित महत्वपूर्ण उपकरण साबित हो सकता है।

गौरव टेकरीवाल से जानें वैदिक गणित के बारे में,
scan करें QR code

अपने डर को दूर करने के लिए एक बार में एक कदम उठाना कारगर रहता है। गणित की दुनिया में अनेक भारतीय महापुरुषों के अतुल्य योगदान के बाद, भारत को इस क्षेत्र में मुश्किल नहीं होनी चाहिए। इसके लिए, युवा पीढ़ी को पारम्परिक भारतीय ज्ञानगंगा में डुबकी लगाकर, गणित से जुड़ी हर रोचक विधि को सीखना चाहिए। माननीय प्रधानमंत्री ने अपना यह संकल्प साझा किया और अब विद्यार्थियों की बारी है कि वह वैदिक गणित के सिद्धान्तों के ज़रिए गणित को रोचक तरीके से सीखें और इस भारतीय धरोहर को आगे ले जाएँ।

प्रधानमंत्री का आह्वान

"वैदिक गणित से आप बड़ी-बड़ी साइंटिफिक प्राब्लम्स भी सोल्व कर सकते हैं। मैं चाहूँगा, सभी माता-पिता अपने बच्चों को वैदिक गणित ज़रूर सिखाएँ। इससे उनका कॉन्फिडेंस तो बढ़ेगा ही, उनके ब्रेन की एनालिटिकल पावर भी बढ़ेगी और हाँ, गणित को लेकर कुछ बच्चों में जो भी थोड़ा बहुत डर होता है, वह डर भी पूरी तरह समाप्त हो जाएगा।"

गौरव टेकरीवाल – वैश्विक स्तर पर ले जा रहे हैं वैदिक गणित की विरासत को

श्री गौरव टेकरीवाल एक वैदिक गणित विशेषज्ञ हैं, जो इस प्राचीन विरासत को 2 दशकों से अधिक समय से लोकप्रिय बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। अपने संगठन, वैदिक मैथ्स फोरम इंडिया के माध्यम से, वह सन् 2000 से विश्व स्तर पर वैदिक गणित को बढ़ावा दे रहे हैं। वह 24 घंटे की ऑनलाइन सुविधा के माध्यम से दुनिया भर के छात्रों के लिए इस प्राचीन भारतीय ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं।

वह जीवन में बहुत पहले समझ गए थे कि गणित का डर हर किसी को सताता है, इसलिए छात्रों को सरल गणित की तुलना में गणना करने की क्षमता में 1500 फीसदी वृद्धि के लिए वैदिक गणित से परिचित कराया जाना चाहिए।

अपनी स्थापना के उपरांत ही यह संस्थान स्वामी श्री भारती कृष्ण तीर्थ जी महाराज के कार्यों के आधार पर वैदिक गणित के विचार को फैलाने और दुनिया भर में संख्यात्मकता के मानकों को बढ़ाने के लिए कार्यशालाओं, वार्ता और प्रस्तुतियों का आयोजन कर रहे हैं। वैदिक गणित फोरम एक छात्र की छिपी क्षमता को बढ़ावा देने और उसकी मानसिक क्षमताओं को विकसित करने के मिशन पर है, इस प्रकार हाई स्पीड वैदिक गणित के माध्यम से गणित के डर को समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने अपने संगठन में वैदिक गणित के साथ योग की शुरुआत भी की

है, ताकि छात्र आँखें बंद करके भी गणना की प्रक्रिया कर सकें।

माननीय प्रधानमंत्री के 'मन की बात' में अपने काम के लिए प्रशंसा प्राप्त करने के बाद, श्री टेकरीवाल ने अपने छात्रों और उनके माता-पिता को संदेशों और कॉल के माध्यम से उनके समर्थन और प्यार के लिए धन्यवाद दिया और पुष्टि की कि वे मिलकर वैदिक गणित के माध्यम से गणित के डर को दूर करेंगे।

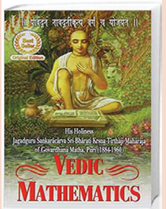

वैदिक मठ के साथ अपनी यात्रा की आधारशिला के लिए अपना आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, **"मैं भी विनम्रतापूर्वक वैदिक गणित के पिता - परम पावन स्वामी श्री भारती कृष्ण तीर्थजी महाराज जगद्गुरु शंकराचार्य, गोवर्धन मठ, पुरी के चरण कमलों को नमन करना चाहता हूँ जिन्होंने स्मारकीय पुस्तक वैदिक गणित लिखी, जो एक प्रेरणा है। मुझे लगता है कि यह शिक्षा और गणित के क्षेत्र में आश्चर्यजनक सुधारों की शुरुआत है।"**

वैदिक गणित के माध्यम से हम भारत को आत्मानिर्भर बना सकते हैं और महाशक्ति बनने के लिए आगे बढ़ा सकते हैं। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री ने राष्ट्र से 'वोकल फॉर लोकल' होने का आग्रह किया है, श्री टेकरीवाल का मानना है कि वैदिक गणित के माध्यम से, भारत के छात्र और शिक्षक न केवल 'वोकल फॉर लोकल' हो सकते हैं बल्कि भारत की इस प्राचीन विरासत को विश्व प्रसिद्ध कर सकते हैं।

वैदिक गणित और आज के युग में इसका महत्व – मुकुल अग्रवाल, वैदिक गणित विशेषज्ञ

मुकुल अग्रवाल 20 वर्षों से अधिक समय से वैदिक गणित पढ़ा रहे हैं। वैदिक गणित, उनके शब्दों में, वेदों से निकाली गई एक प्राचीन भारतीय तकनीक है। 1906 में भारती कृष्ण तीर्थ महाराज ने इसकी खोज की और इसके 16 सूत्र और 13 उप-सूत्रों वाली एक पुस्तक लिखी।

छात्रों को पढ़ाते मुकुल अग्रवाल

मुकुल अग्रवाल जी के मुताबिक, वैदिक गणित अवलोकनात्मक गणित है और यह बच्चों में रुचि पैदा करता है। वैदिक गणित में, हम आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक सोच की आदत डालते हैं। आधुनिक गणित और वैदिक गणित के बीच का अंतर यह है कि आधुनिक गणित में एक लागू तकनीक होती है, जबकि वैदिक गणित में, हमारे पास कई तकनीकें हो सकती हैं। यदि हम इसे प्राथमिक स्तर पर पढ़ाते हैं, तो यह कोडिंग, पैटर्न पहचानने और समग्र मस्तिष्क के विकास में मदद करेगा।

उनका दृढ़ विश्वास है कि वैदिक गणित पहली कक्षा से ही पाठ्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए। यदि प्रारम्भिक अवस्था में ही गणित के भय को दूर कर दें तो बच्चे विश्लेषणात्मक सोच और वैज्ञानिक प्रवृत्ति के साथ-साथ तार्किक रूप से सोच सकेंगे और गणित का आनंद लेने में सक्षम होंगे।

"हाल ही में, दुनिया भर में वैदिक गणित के बारे में जागरूकता बढ़ रही है। कोविड-19 के दौरान, दुनिया भर के छात्र मुझसे जुड़े और वैदिक गणित सीखा। बहुत सारे अमेरिकी छात्रों ने सीधे मुझसे वैदिक गणित का अध्ययन शुरू किया। दुनिया भर के शिक्षकों ने वैदिक गणित को गंभीरता से लिया है। UK में दो स्कूलों ने इसे अपने पाठ्यक्रम का हिस्सा बना लिया है।" श्री अग्रवाल ने साझा किया।

भारत सरकार इस प्राचीन ज्ञान को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रही है, विशेष रूप से प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में, जो स्वयं वैदिक गणित और पारंपरिक शिक्षण को बार-बार 'परीक्षा पे चर्चा' और 'मन की बात' जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से बढ़ावा दे रहे हैं। नई शिक्षा नीति के साथ, भारत सरकार ने पारंपरिक ज्ञान, तकनीकों और विधियों के महत्व पर ज़ोर दिया है और इसे लागू करने के बाद यह एक गेम चेंजर होगा।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Bhupender Yadav
@byadavbjp

आज जब हम आज़ादी के 75 वर्ष की ओर बढ़ने पर अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो हमने संकल्प लिया है कि हम देश भर में 75 अमृत सरोवरों का निर्माण करेंगे। आप भी आगे आएं और इस महाअभियान का हिस्सा बनें: पीएम श्री @narendramodi

#MannKiBaat

Translate Tweet

11:53 AM · Apr 24, 2022 · Twitter Web App

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

BHIM #UPI has transformed the Indian economy. The North East, which did not have internet until a few years ago, today is embracing UPI payments. I urge everyone to use UPI and also do a 'cashless day-out' experiment: Adarniya PM Shri @narendramodi in #MannKiBaat

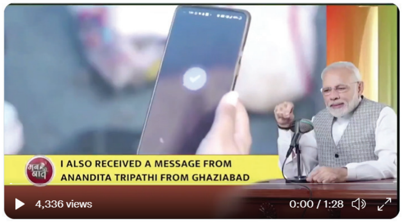

12:12 PM · Apr 24, 2022 · Twitter for Android

Digital India
@_DigitalIndia

In April's #MannKiBaat episode, Hon. PM @Narendramodi shares how the focus has been on digitisation in museums. He encourages youth to visit the museum & share their experiences on #socialmedia using #MuseumMemories! 🌐 #DigitalIndia @MinOfCultureGoI @NMnewdelhi

2:40 PM · Apr 26, 2022 · Twitter Web App

Gajendra Singh Shekhawat
@gssjodhpur

आज मन की बात में माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने जानकारी दी कि अमृत सरोवर का संकल्प तेजी से कार्यरूप में परिणित हो रहा है।

उत्तरप्रदेश के रामपुर की पटवाई कभी एक गंदा तालाब हुआ करता था जिसे ग्रामीणों ने मिलकर स्वच्छ और सुंदर बनाया है।

#MannKiBaat

Translate Tweet

Narendra Singh Tomar
@nstomar

आज देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के #मन_की_बात कार्यक्रम को ग्वालियर जिले के कार्यकर्ताओ के साथ सुना...

#MannKiBaat

Translate Tweet

1:14 PM · Apr 24, 2022 · Twitter for Android

Mukhtar Abbas Naqvi
@naqvimukhtar

A large number of artisans & craftsmen, from across the country, listening to "Mann Ki Baat" of Prime Minister Shri @narendramodi Ji, at 40th #HunarHaat at Bandra Kurla Complex, Mumbai today. #MannKiBaat @PMOIndia @MOMAIndia @hunarhaat

2:03 PM · Apr 24, 2022 · Twitter Web App

Ashwini Vaishnaw
@AshwiniVaishnaw

उत्तर NaMo App या social media पर #MuseumQuiz के साथ ज़रूर share करें।

#MannKiBaat

Narendra Modi and 3 others

2:06 PM · Apr 24, 2022 · Twitter for Android

Dr Narottam Mishra
@drnarottammisra

पीएम श्री @narendramodi जी ने #MannKiBaat में जल संरक्षण के अनूठे प्रयोग को लेकर म.प्र की भील जनजाति द्वारा संचालित परंपरा "हलमा" का जिक्र किया।

सामूहिक श्रमदान के द्वारा संचालित इस अनूठे प्रयोग से झाबुआ क्षेत्र में जल संकट कम होने के साथ ही जमीन का भू-जल स्तर भी बढ़ा है।

Translate Tweet

3:32 PM · Apr 24, 2022 · Twitter for Android

Piyush Goyal
@PiyushGoyal

डिजिटल इकोनॉमी से देश में एक कल्चर पैदा हो रहा है।

मैं चाहूँगा कि अगर आपके पास भी डिजिटल पेमेंट और स्टार्टअप इकोसिस्टम की इस ताकत से जुड़े अनुभव हैं तो उन्हें साझा करिए।

आपके अनुभव दूसरे कई और देशवासियों के लिए प्रेरणा बन सकते हैं: प्रधानमंत्री @NarendraModi जी #MannKiBaat

Translate Tweet

12:32 PM · Apr 24, 2022 · Twitter Web App

G Kishan Reddy
@kishanreddybjp

Prime Minister Shri @narendramodi spoke about Pradhanmantri Sangrahalaya, the museum which was inaugurated on 14th April, the birth anniversary of Babasaheb Ambedkar and the letters & messages people have written to PM about the museum. @PMSangrahalaya

#MannKiBaat

2:32 PM · Apr 24, 2022 · Twitter for iPhone

Vinod Tawde
@TawdeVinod

आज़ादी के 75 वर्ष में अपने शहर में 75 अमृत सरोवर बनने जा रहे हैं। कुछ अमृत सरोवर हमें हमारे शहर के विस्मृत स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित करने चाहिए। आइए हम सब मिलकर आजादी का अमृत महोत्सव मानते हुए @narendramodi जी द्वारा #MannKiBaat में किए आवाह्न को सक्रिय रूप से प्रतिसाद दें।

Translate Tweet

Dr.L.Murugan @Murugan_MoS

பாரத பிரதமர் திரு.@narendramodi ஜி அவர்கள், மக்களுடன் தனது எண்ணங்களை கலந்துரையாடும் #மனதின்குரல் ஒளிபரப்பு நிகழ்வில் சென்னையில் @BJP4TamilNadu இணை பொறுப்பாளர் திரு.@ReddySudhakar21 ji,கட்சி தொண்டர்கள் மற்றும் அப்பகுதி மக்களுடன் இணைந்து கலந்துக்கொண்ட தருணம்.
#MannKiBaat

Translate Tweet

PMO India and 8 others

12:20 · 24 Apr 22 · Twitter for Android

All India Radio News @airnewsalerts

Friends, every effort related to water is related to our tomorrow. It is the responsibility of the whole society. For this, different societies have made various efforts continuously for centuries: PM @narendramodi
#MannKiBaat #PMonAIR

Ministry of Information and Broadcasting and 5 others

11:27 AM · Apr 24, 2022 · Twitter Web App

Sunil Deodhar @Sunil_Deodhar

Just like in sports, divyangjan are doing wonders in arts, academics and many other fields.

With the power of technology they are achieving greater heights. #MannKiBaat
- PM @narendramodi Ji

Amit Shah and 8 others

Doordarshan National दूरदर्शन नेशनल @DDNational

Mathematicians and scholars of India have even written that – यत किंचित वस्तु तत सर्वं, गणितेन बिना नहि ! … That is, whatever is there in this entire universe, everything is based on mathematics: PM @narendramodi

#MannKiBaat

Vedic Maths India @VedicMathIndia

I am grateful and thankful to the Honourable Prime Minister for the love, honour and support bestowed today in Mann Ki Baat! The entire Vedic Maths community in India is elated and we strive to make India the Maths Capital of the World together! @narendramodi @PMOIndia

12:55 PM · Apr 24, 2022 · Twitter Web App

Shobha Karandlaje @ShobhaBJP

यूपी के रामपुर की पटवाई ग्राम पंचायत में स्थानीय लोगों और स्कूली बच्चों द्वारा वहाँ स्थित तालाब के कायाकल्प का कार्य सराहनीय है।

यह दूसरी पंचायतों के लिए एक उदाहरण भी है कि कैसे जन भागीदारी से हम एक सुंदर और श्रेष्ठ भारत का सपना साकार कर सकते हैं।
#MannKiBaat

Translate Tweet

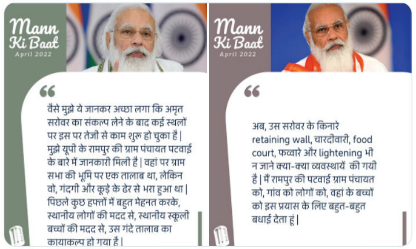

PMO India and 4 others

Prasar Bharati News Services पी.बी.एन.... @PBNS_India

Last March, UPI transactions reached around Rs 10 lakh crores. Due to this, convenience is also increasing in the country and an atmosphere of honesty is also being created: PM @narendramodi
#MannKiBaat

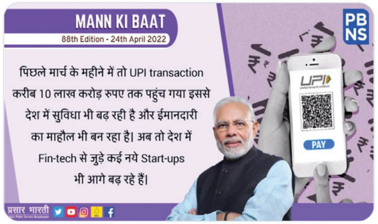

Yogi Adityanath @myogiadityanath

आदरणीय प्रधानमंत्री जी द्वारा आज @mannkibaat में उत्तर प्रदेश के रामपुर की ग्राम पंचायत पटवाई में तालाब के कायाकल्प हेतु स्थानीय जन व बच्चों के सराहनीय प्रयासों का उल्लेख प्रदेश वासियों के लिए गर्व का विषय है।

इससे अनेक लोग जल संरक्षण हेतु प्रेरित होंगे।

आभार प्रधानमंत्री जी!

Translate Tweet

11:55 AM · Apr 24, 2022 · Twitter Web App

K.Annamalai @annamalai_k

Listened to #MannKiBaat with our National Gen Sec Shri @CTRavi_BJP avl & with our Chengalpattu district Sakthi Kendra incharges.

It was an eye opener to learn & listen from our Hon PM about our new PM's museum to water conservation efforts to the uniqueness of Vedic mathematics!

Manohar Lal @mlkhattar

भारत की समृद्ध परम्परा, विरासत, विभूतियों के बलिदान और इतिहास के बारे में जानने के लिए संग्रहालय सर्वोत्तम माध्यम है।

आशा है हरियाणा के युवा भी माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के आह्वान पर #MuseumQuiz में भाग लेंगे और #MuseumMemories भी साझा करेंगे।

#MannKiBaat

Translate Tweet

> **Mann Ki Baat Updates मन की बात ...** · 5d
> "एक श्रोता हैं श्रीमान सार्थक जी, सार्थक जी गुरुग्राम में रहते हैं और पहला मौका मिलते ही वो प्रधानमंत्री संग्रहालय देख आए हैं |
>
> सार्थक जी ने Namo App पर जो संदेश मुझे लिखा है, ...

16:53 · 24 Apr 22 · Twitter Web App

N.Biren Singh @NBirenSingh

When we talk about numbers, we speak and think till million, billion and trillion.

But, in Vedas and in Indian mathematics, this calculation goes beyond that. #MannKiBaat

Jagat Prakash Nadda @JPNadda

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने अभी तक 88 के 88 एपिसोड में कोई भी राजनीतिक बात नहीं की है। वह जो भी बोलेंगे उसको लोग सुनेंगे, लेकिन राजनीतिक पद होते हुए भी, राजनीति का उपयोग न करते हुए उन्होंने #MannKiBaat में सामाजिक विषयों को हमारे सामने रखा है।

Gaurav Tekriwal · 3rd
President, The Vedic Maths Forum (India)
2w

I am grateful and thankful to the Honourable Prime Minister for the love, honor, and support bestowed today in Mann Ki Baat! The entire Vedic Maths community in India is elated and we strive to make India the Maths Capital of the World together!

Sagrika Shah · 3rd
Co-Founder at Connexdoor || Fintech Investments || Swing ...
2w

Absolutely excited to share that Honourable Prime Minister of India Narendra Modi talked about our experience of "A Cashless Day Out" in today's episode of Mann Ki Baat.

Preksha T. · 3rd
Associate at ConnexDoor
2w

Extremely delighted to share that Honourable Prime Minister of India Narendra Modi highlighted about the experience of our experiment of "A Cashless Day Out" in yesterday's episode of Mann Ki Baat. 😊

We were stunned how deeper the penetration of online payments was when even the tapriwala was accepting money through UPI.

The day went by with ease with no hindrance during any transaction whether it was a fruit seller, at a medical shop or recharging the metro card. It almost seemed like that's how we all transact now, so easy & convinient.

Jairam Thakur @jairamthakurbjp · Apr 24

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने "मन की बात" कार्यक्रम के आज के ऐपिसोड में देश के विभिन्न संग्रहालयों के बारे में अवगत करवाया।

उन्होंने दिव्यांगजनों का हौसला बढ़ाने सहित डिजिटल इंडिया, वैदिक गणित इत्यादि विषयों पर भी ज्ञानवर्धक चर्चाएं की।

#MannKiBaat

BJP and 9 others

3 21 75

Smriti Z Irani @smritiirani

#MannKiBaat में PM @narendramodi ने जल संरक्षण हेतु पुनः अपील की और कहा कि "पानी की एक-एक बूंद अमृत के समान है, जल से जुड़ा हर प्रयास हमारे कल से जुड़ा है"।

कच्छ के मालधारी जनजाति द्वारा वृदास नामक विधि काफी कारगर है, जल संरक्षण हेतु इसका उपयोग हम अपने क्षेत्रों भी कर सकते हैं।

Translate Tweet

6:53 PM · Apr 24, 2022 · Twitter Media Studio

Biplab Kumar Deb @BjpBiplab

When we talk about numbers, we speak and think till million, billion and trillion.

But, in Vedas and in Indian mathematics, this calculation goes beyond that. #MannKiBaat

12:37 PM · Apr 24, 2022 · Twitter for Android

डिजिटल अर्थव्यवस्था डाल रही ईमानदार भारत की नींव

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि देश में प्रतिदिन 20,000 करोड़ रुपये का डिजिटल लेनदेन हो रहा है। इससे न सिर्फ सुविधाएं बढ़ रही हैं बल्कि देश में ईमानदारी के संस्कृति को भी बढ़ावा मिल रहा है। प्रधानमंत्री ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम में 88वें संस्करण में कहा कि छोटे ऑनलाइन भुगतान एक बड़ी डिजिटल अर्थव्यवस्था बनाने में मदद कर रहे हैं। इससे ईमानदार भारत की नींव पड़ रही है। कई नए फिनटेक स्टार्टअप का उदय हो रहा है।

मोदी ने कहा, डिजिटल लेनदेन की सुविधा को बढ़ाने में तकनीकी की अहम भूमिका है। महानगरों के अलावा उन गांवों और छोटे शहरों के लोग भी अब यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस) के जरिये लेनदेन कर रहे हैं, जहां कुछ साल पहले तक इंटरनेट की अच्छी सुविधा नहीं थी। इस दौरान उन्होंने कहा, 'जिन लोगों के पास डिजिटल भुगतान और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ा कोई अनुभव है, वे इसे दूसरों के साथ साझा करें। आपके अनुभव दूसरों के लिए प्रेरणा के स्रोत हो सकते हैं।' इस साल मार्च में यूपीआई के जरिये 10 लाख करोड़ रुपये का लेनदेन हुआ। ब्यूरो

मन की बात : पीएम मोदी ने 'कैशलेस डेआउट' का संकल्प लेने का किया आह्वान, कहा, डिजिटल भुगतान के अनुभवों को साझा भी करें

कैशलेस डेआउट : दिल्ली की दो बेटियों का जिक्र

मन की बात कार्यक्रम में पीएम ने दिल्ली की दो बहनों सागरिका और प्रेक्षा के 'कैशलेस डेआउट' संकल्प का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, 'हाल ही में मुझे ऐसे संकल्प के बारे में पता चला। क्या आप सोच सकते हैं कि कोई अपने घर से यह संकल्प लेकर निकले कि आज पूरा दिन शहर घूमेगा और एक भी पैसे का लेनदेन नकद में नहीं करेगा। दिल्ली की दोनों बेटियों ने ऐसा ही संकल्प लिया। दिल्ली में जहां भी गईं, स्ट्रीट फूड से लेकर रेहड़ी तक, उन्हें ऑनलाइन भुगतान की सुविधा मिली।' इसलिए इन बेटियों की तरह आप भी घर से ऐसा ही संकल्प लेकर निकलें।

युवाओं को अनमोल विरासत से जोड़ रहा पीएम संग्रहालय : पीएम ने कहा कि बाबा साहेब अंबेडकर की जयंती पर 14 अप्रैल को 'प्रधानमंत्री संग्रहालय' का लोकापर्ण किया गया। इसे लेकर देशभर से लोगों ने पत्र लिखे और संदेश भेजे। मोदी ने कहा, हमारे प्रधानमंत्रियों के योगदान को याद करने के लिए आजादी के 75 साल से बेहतर कोई और समय नहीं हो सकता। इसलिए आप भी स्थानीय संग्रहालय जाएं और 'हेशटैग म्यूजिम मेमोरीज' के साथ अपने अनुभवों को साझा करें।

20,000
करोड़ रुपये के रोज हो रहे ऑनलाइन लेनदेन देश में

- 10 लाख करोड़ रुपये का लेनदेन हुआ इस साल मार्च में यूपीआई के जरिये

कोरोना से रहें सतर्क : पीएम ने ईद और अक्षय तृतीया समेत आगामी त्योहारों को देखते हुए लोगों से कोरोना से सतर्क रहने की अपील की। कहा, मास्क पहनने और नियमित अंतराल पर हाथ धोने समेत महामारी की रोकथाम के लिए सभी जरूरी उपायों का पालन करते रहें।

म्यूजियम से जुड़े ये सवाल भी पूछे

- किस शहर में प्रसिद्ध रेल म्यूजियम है, जहां 45 वर्षों से इससे जुड़ी विरासत देखने का लोगों को मौका मिल रहा है।
- मुंबई में कौन सा म्यूजियम है, जहां बहुत रोचक तरीके से करेंसी के विकास के बारे में जानने का मौका मिलता है।
- विरासत-ए-खालसा किस म्यूजियम से जुड़ा है। क्या आप जानते हैं कि यह म्यूजियम पंजाब के किस शहर में है।
- पतंगबाजी में तो सबको आनंद आता ही होगा। काइट म्यूजियम कहां है।

Mathrubhumi
മാതൃഭൂമി

കോവിഡ്: ജാഗ്രത വേണം -പ്രധാനമന്ത്രി

ന്യൂഡൽഹി ▸ ഈദും അക്ഷയതൃതീയയുമുൾപ്പെടെ ഉത്സവങ്ങൾ അടുത്തുവരുന്നതിനാൽ ആഘോഷവേളകളിൽ കോവിഡ് മുൻകരുതലുകളെടുക്കണമെന്ന് പ്രധാനമന്ത്രി നരേന്ദ്ര മോദി. പ്രതിമാസ റേഡിയോ പ്രഭാഷണപരിപാടിയായ മൻ കി ബാത്തിലാണ് അദ്ദേഹം ഇതു പറഞ്ഞത്. കോവിഡിനെക്കുറിച്ച് ജാഗ്രതയോടെയിരിക്കണം. മുഖാവരണം ധരിക്കുന്നത്, ഇടയ്ക്കിടെ കൈ കഴുകുന്നത് എന്നിങ്ങനെയുള്ള എല്ലാ മുൻകരുതലുകളുമെടുക്കണം. അവ പിന്തുടരുകയും വേണം -അദ്ദേഹം പറഞ്ഞു.

25/04/2022 KOTHAMANGALAM-MUVATTUPUZHA Pg 08

நாட்டில் தினமும் ரூ.20 ஆயிரம் கோடி டிஜிட்டல் பரிமாற்றம் பிரதமர் மோடி பெருமிதம்

புதுடெல்லி, ஏப்.25-

நமது நாட்டில் தினமும் ரூ.20 ஆயிரம் கோடி டிஜிட்டல் பரிமாற்றம் நடைபெறுவதாக பிரதமர் மோடி பெருமிதத்துடன் கூறினார்.

'மனதின் குரல்'

பிரதமராக மோடி பதவியேற்ற காலம் தொட்டு, ஒவ்வொரு மாதமும் கடைசி ஞாயிற்றுக்கிழமையன்று அகில இந்திய வானொலியில் 'மன்கிபாத்' என்னும் 'மனதின் குரல்' நிகழ்ச்சி மூலம் நாட்டு மக்களிடம் பேசி வருகிறார்.

அந்த வகையில் நேற்று அவர் பேசும்போது நாட்டில் டிஜிட்டல் பண பரிமாற்றம் பெருகி வருவதாக பெருமிதப்பட்டார். அவர் கூறியதாவது:-

சிறிய ஆன்லைன் பண பட்டுவாடாக்கள், நாட்டின் டிஜிட்டல் பொருளாதாரத்தை பெரிதாக உருவாக்க உதவுகிறது. பல புதிய நிதி தொழில்நுட்ப ஸ்டார்ட் அப் நிறுவனங்கள் வந்து கொண்டிருக்கின்றன.

தினமும் ரூ.20 ஆயிரம் கோடி டிஜிட்டல் பரிமாற்றம்

டிஜிட்டல் பண பரிமாற்ற அனுபவம் பெற்றிருப்பவர்கள், அதை மற்றவர்களுடன் பகிர்ந்து கொள்ளுங்கள். உங்கள் அனுபவம் மற்றவர்களுக்கு உத்வேகம் அளிக்கும்.

தற்போது தினமும் ரூ.20 ஆயிரம் கோடி மதிப்புக்கு டிஜிட்டல் பண பரிமாற்றம் நடந்து வருகிறது.

கடந்த மார்ச் மாதத்தில் யு.பி.ஐ. என்று அழைக்கப்படுகிற ஒருங்கிணைந்த பண பட்டுவாடா இடைமுக முறையில் ரூ.10 லட்சம் கோடி அளவுக்கு பரிமாற்றங்கள் நடந்துள்ளன. இது நாட்டில் வசதிகளை அதிகரிப்பது மட்டுமின்றி நேர்மையான ஒரு சூழலையும் ஊக்குவிக்கிறது.

பிரதமர்களின் அருங்காட்சியகம்

இவ்வாறு கூறிய பிரதமர் மோடி, டெல்லியில் தொடங்கப்பட்டுள்ள பிரதமர்களின் அருங்காட்சியகம் பற்றியும் பகிர்ந்து கொண்டார்.

இது தொடர்பாக அவர் கூறியதாவது:-

கடந்த 14-ந் தேதி அரசியல் சாசன சிற்பி அம்பேத்கர் பிறந்தநாளின்போது தொடங்கப்பட்ட பிரதம மந்திரி சங்கிரஹாலயா (பிரதமர்களின் அருங்காட்சியகம்) குறித்து நாடு முழுவதும் இருந்து எனக்கு கடிதங்களும், தகவல்களும் மக்கள் அனுப்பி உள்ளனர்.

நாட்டின் பிரதமர்களாக இருந்தவர்களின் பங்களிப்பை நினைவுகூர்வதற்கு இந்தியா சுதந்திரம் அடைந்த 75-வது ஆண்டை விட சிறந்த தருணம் வேறு எதுவும் இருக்க முடியாது. இது நாட்டின் குடிமக்களுக்காக திறக்கப்பட்டுள்ளது.

சுவாரசியமான தகவல்கள்

குருகிராமை சேர்ந்த சர்தாக் முதல் முறையாக பிரதமர்களின் அருங்காட்சியகம் சென்று வந்துள்ளார். அவர் நமோ ஆப்பில் எனக்கு எழுதிய தகவல்கள் மிகவும் சுவாரசியமானவை.

அவர், "பல ஆண்டுகளாக செய்தி சேனல்களைப் பார்க்கிறேன், செய்தித்தாள் வாசிக்கிறேன், சமூக ஊடகங்களுடன் இணைந்திருக்கிறேன். இவற்றின் மூலம் கிடைக்கிற பொது அறிவுபோதுமானது என கருதினேன். ஆனால் நான் பிரதமர்கள் அருங்காட்சியகத்துக்கு சென்றேன். அங்கே போய் வியந்தேன். நமது நாட்டைப்பற்றியும், நாட்டை வழிநடத்துபவர்களைப் பற்றியும், எனக்கு அதிகம் தெரியாது என்பதை உணர்ந்தேன். லால் பகதூர் சாஸ்திரிக்கு அவரது மாமனார், மாமியார் சீதனமாக அளித்த ராட்டை எனக்கு மகிழ்ச்சியை அளித்தது. லால் பகதூர் சாஸ்திரியின் வங்கி பாஸ் புக்கை பார்த்தேன். அவரிடம் எவ்வளவு சிறிய சேமிப்பு இருந்தது என்பதை கவனித்தேன். சுதந்திர போராட்டத்துக்கு முன்பாக மொரார்ஜி தேசாய், குஜராத்தில் துணை கலெக்டராக இருந்துள்ளார் என்பதுவும் எனக்கு தெரியாது" என்று எழுதி இருக்கிறார். ஆமாம், அவர் நீண்டகாலம் நிர்வாக பணி ஆற்றியவர்.

சரண்சிங், நரசிம்மராவ்

சரண்சிங் பற்றியும் சர்தாக் எழுதி உள்ளார். "ஜமீன்தார் முறை ஒழிப்பில் அவரது பங்களிப்பு எனக்கு தெரியாது, அது மட்டுமல்ல, பி.வி. நரசிம்மராவ் நில சீர்திருத்தப்பணிகளில் மிகுந்த ஆர்வம் காட்டினார் என்பதுவும் இப்போதுதான் தெரிந்தது. இந்த அருங்காட்சியகத்துக்கு வந்த பின்னர்தான் சந்திரசேகர் வரலாற்று சிறப்புமிக்க பாரத யாத்திரையை 4 கி.மீ. தூரம் நடந்து சென்று மேற்கொண்டார் என்று அறிந்தேன். அருங்காட்சியகத்தில் நான் அடல்பிகாரி வாஜ்பாய் பயன்படுத்திய பொருட்களை பார்த்தேன். அவரது உரைகளை கவனித்தேன். இதெல்லாம் எனக்கு பெருமிதம் தந்தது. மகாத்மா காந்தி, சர்தார் படேல், அம்பேத்கர், ஜெயபிரகாஷ் நாராயண், பண்டிட் ஜவகர்லால் நேரு பற்றிய சுவராசியமான தகவல்களையும் இந்த அருங்காட்சியகம் வழங்குகிறது" என்றும் எழுதி உள்ளார்.

விடுமுறை நாட்களில் மக்கள் உள்ளூர் அருங்காட்சியகத்தை பார்வையிடுங்கள். 'மியூசியம்மெமோரிஸ்' என்ற 'ஹேஷ்டாக்'கை பயன்படுத்தி உங்கள் அனுபவங்களை பகிர்ந்து கொள்ளுங்கள்.

இவ்வாறு பிரதமர் மோடி கூறினார்.

बच्चों को वैदिक गणित सिखाएं

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में वैदिक गणित के महत्व के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि वैदिक गणित के जरिये पलक झपकते आप कठिन से कठिन गणनाएं कर सकते हैं। इसलिए माता-पिता अपने बच्चों को वैदिक गणित सिखाएं। इससे, उनका विश्वास बढ़ेगा, साथ ही तार्किक क्षमता बढ़ेगी।

युवा उठाएं जल बचाने की जिम्मेदारी: गर्मी बढ़ रही है और इससे पानी बचाने की जिम्मेदारी भी बढ़ रही है। जल संरक्षण भी अमृत महोत्सव का संकल्प है। युवा इस अभियान के बारे में जानें और जिम्मेदारी उठाएं।

तालाब का कायाकल्प: यूपी के रामपुर के पटवई में ग्राम सभा की जमीन पर तालाब था। स्थानीय नागरिकों और स्कूली बच्चों ने इस तालाब का कायाकल्प कर दिया है।

श्लोक सुनाकर संख्या का जिक्र किया

मोदी ने 'यत किंचित वस्तु तत सर्वं, गणितेन बिना नहि' श्लोक का उल्लेख करते हुए कहा कि इस पूरे ब्रह्मांड में जो कुछ भी है, सब गणित पर आधारित है। एक बहुत पुराना श्लोक प्रचलित है 'एकं दशं शतं चैव, सहस्रम् अयुतं तथा। लक्षं च नियुतं चैव, कोटि: अर्बुदम् एव च। वृन्दं खर्वो निखर्व: च, शंख: पद्म: च सागर:। अन्त्यं मध्यं परार्ध: च, दश वृद्ध्या यथा क्रमम्। इस श्लोक में संख्याओं को बताया गया है। जैसे कि एक, दस, सौ, हजार और अयुत। लाख, नियुत और कोटि यानी करोड़। इसी तरह ये संख्या शंख, पद्म और सागर तक तक जाती हैं। एक सागर का अर्थ होता है कि 10 की 57 जीरो। यही नहीं इसके आगे भी, ओघ और महोघ जैसी संख्याएं होती हैं। एक महोघ होता है 10 की 62 जीरो।

PMs' museum matter of pride for country: Modi

PM SPEAK

ON WATER CONSERVATION

ON CASHLESS TRANSACTIONS

والدین بچوں کو ویدک ریاضی سکھائیں : مودی

मन की बात में नए अंदाज में दिखे मोदी, पूछे संग्रहालय पर सवाल

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी • जागरण आर्काइव

इतिहास में दिलचस्पी

पीएम मोदी के सात सवाल

बढ़ा डिजिटल लेनदेन, बन रहा ईमानदारी का माहौल

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' कार्यक्रम में किया देश को संबोधित

अमृत महोत्सव एक जन-आंदोलन का रूप ले रहा : पीएम मोदी

हर जिले में बनेंगे 75 अमृत सरोवर

गणित कभी मुश्किल विषय नहीं

'देश में प्रतिदिन करीब 20,000 करोड़ रुपए का डिजिटल लेन-देन हो रहा'

MANN KI BAAT

Modi calls for a 'Cashless Day Out'

OUR BUREAU

New Delhi, April 24

In his monthly radio broadcast, *Mann ki Baat*, Prime Minister Narendra Modi called for a 'Cashless Day Out' – using only digital payment throughout the day when one is out for tourism or leisure. The Prime Minister also urged the people to work more actively for water conservation.

Modi referred to two incidences: one is related to two Delhi girls, Sagarika and Preksha who experimented with the 'Cashless Day Out'. Wherever they went in Delhi, the duo only used digital payments for all their purchases. "Because of the UPI QR code, they did not have to withdraw cash. Even at most of the street food and roadside vendors, they got the facility of online transaction," Modi said.

The second example the Prime Minister narrated was related to Anandita Tripathi of Ghaziabad, who had gone to the North East with her husband. In their journey spanning several days, the couple did not withdraw cash even in remote areas.

In places where there was no good internet facility till a few years ago, now there is also the facility of payment through UPI. "Looking at the experiences of Sagarika, Preksha and Anandita, I would also urge you to try the experiment of Cashless Day Out," Modi said.

Online payments

Further, he mentioned small online payments are helping build a big digital economy and many new fintech start-ups are coming up. He urged people who have experience related to digital payments and the start-up ecosystem to share it with

Prime Minister Narendra Modi

others which can be a source of inspiration for the country. "Now, digital transactions worth ₹20,000 crore are taking place daily in our country. In March, the Unified Payments Interface (UPI) transactions even reached ₹10-lakh crore," he said, adding that this is not only increasing the facilities in the country but also encouraging an environment of honesty.

Highlighting the need for water conservation, Modi said that in Azadi Ka Amrit Mahotsav, water conservation is one of the resolutions, and the country is moving forward on this.

Water conservation

"During the Amrit Mahotsav, 75 Amrit Sarovars will be built in every district of the country. You can imagine how big the campaign is. The day is not far when there will be 75 Amrit Sarovars in your own city. I would like all of you, and especially the youth, to know about this campaign and also bear responsibility for it," he said.

He highlighted that the availability of water and its scarcity determines the progress and speed of any country. From Vedas to Puranas, saving water everywhere...building ponds, lakes etc., has been termed as the social and spiritual duty of a person, Modi said.

ABN ఆంధ్రజ్యోతి

పండగల వేళ కొవిడ్ జాగ్రత్తలు

» మన్ కీ బాత్‌లో ప్రధాని మోదీ సూచన

» రంజాన్, అక్షయ తృతీయ శుభాకాంక్షలు

MANN KI BAAT

Celebrate festivals with harmony, but guard against Covid, says PM

EXPRESS NEWS SERVICE

NEW DELHI, APRIL 24

WITH A string of festivals coming up, Prime Minister Narendra Modi Sunday urged people not to lower their guard against Covid.

"Celebrate these festivals with great gaiety and harmony," Modi said as he greeted people in advance for Eid, Akshaya Tritiya, Vaishakh Budh Purnima and the birth anniversary of Bhagwan Parshuram.

"In the midst of all this, you also have to be alert against corona. Wearing a mask, washing hands at regular intervals, whatever are the necessary measures for prevention, keep following them."

The PM's caution comes amidst a sudden rise in Covid cases in parts of the country, including Delhi, with authorities re-imposing mask restrictions in the National Capital Region.

Delivering his 88th Mann Ki Baat address, the PM also spoke on how India is galloping towards being a cashless economy with digital transactions worth Rs 20,000 crore taking place each day. "In the last few years, BHIM UPI has rapidly become a part of our economy and habits. Now, even in small towns and most villages, people do transactions through UPI," Modi said.

"A culture of digital economy is also evolving in the country. In small, street shops, digital payment has made it easy to serve more customers. Now they don't even have the problem of loose change."

Modi said UPI transactions reached around Rs 10 lakh crore in March last and were, besides increasing convenience, enabling "an atmosphere of honesty" in the country.

Dedicating this month's address to all former prime ministers of the country, he spoke about the inauguration of the Prime Ministers' Museum in Delhi. He mentioned the spinning wheel gifted to Lal Bahadur Shastri by his in-laws and his bank passbook which has been exhibited at the museum.

With the onset of summer, Modi also reminded people of the need for water conservation. "In the 75th year of Independence, under the Azadi Ka Amrit Mahotsav, water conservation is one of the resolutions on which the country is moving forward... 75 Amrit Sarovars will be built in every district of India," he said.

મન કી બાતમાં મોદીએ પ્રધાનમંત્રી સંગ્રહાલયનો કર્યો ખાસ ઉલ્લેખ

નવી દિલ્હી, તા.૨૪

પ્રધાનમંત્રી નરેન્દ્ર મોદી આજે પોતાના રેડિયો કાર્યક્રમ મન કી બાત દ્વારા દેશવાસીઓને સંબોધન કર્યું. આ કાર્યક્રમનો આજે ૮૮મો એપિસોડ છે. મન કી બાતની શરૂઆતમાં પ્રધાનમંત્રી નરેન્દ્ર મોદીએ પીએમ મ્યુઝિયમનો ઉલ્લેખ કર્યો. તેમણે કહ્યું કે આ ૧૪ એપ્રિલના રોજ બાબા સાહેબ આંબેડકરની જન્મ જયંતી પર પ્રધાનમંત્રી સંગ્રહાલયનું લોકાર્પણ થયું છે. તેને દેશના નાગરિકો માટે ખુલ્લુ મૂકાયું છે.

તેમણે ગુરુગ્રામમાં રહેતા સાર્થકનો પણ ઉલ્લેખ કર્યો. પીએમ મોદીએ જણાવ્યું કે સાર્થક પ્રધાનમંત્રી સંગ્રહાલય જોઈને આવ્યા છે. તેમણે નમો એપ પર લખ્યું છે કે તેઓ વર્ષોથી ન્યૂઝ

અનુસંધાન પાના નં.૬ ઉપર

Digital transactions worth Rs 20,000 cr seen daily: PM

NEW DELHI, Apr 24 (PTI)

PRIME Minister Narendra Modi on Sunday said digital transactions worth Rs 20,000 crore are now taking place daily in the country and asserted that this is not only increasing facilities but also encouraging an environment of honesty.

In his monthly 'Mann Ki Baat' radio broadcast, Modi said small online payments are helping build a big digital economy and many new fintech start-ups are coming up. He also urged people who have any experience related to digital payments and the startup ecosystem to share it with others.

"Your experiences can be a source of inspiration for others in the country," he said.

"Now digital transactions worth Rs 20,000 crore are taking place daily in our country. In March, UPI (Unified Payments Interface) transactions even reached Rs 10 lakh crore," he said.

He said people from across the country have written letters and messages to him about the 'Pradhanmantri Sangrahalaya' inaugurated on April 14, the birth anniversary of Dr. Babasaheb Ambedkar.

There can be no better time than 75 years of India's Independence to remember the contribution of Prime Ministers, Modi said.

He also urged people to visit a local museum during holidays and share their experiences using the hashtag 'MuseumMemories'.

"People's interest in history is increasing a lot and in such a situation the PM Museum is also becoming a centre of attraction for the youth, connecting them with the precious heritage of the country," he said.

In his remarks, Modi noted that just like in sports, 'divyangjan' are doing wonders in arts, academics and many other fields.

With the power of technology, they are achieving greater heights, he said.

He also urged people to take all COVID related precautions in view of upcoming festivals, including Eid and Akshaya Tritiya.

"In the midst of all this, you also have to be alert of corona. Wearing a mask, washing hands at regular intervals, whatever are the necessary measures for prevention, keep following them," Modi said.

Stressing on the need for water conservation amid hot weather conditions in much of the country, the Prime Minister said water conservation is one of the resolves with which the country is moving forward.

"During the Amrit Mahotsav, 75 Amrit Sarovars will be built in every district of the country. You can imagine how big the campaign is. The day is not far when there will be 75 Amrit Sarovars in your own city," he said.

In strength of Panchayats lies prosperity of new India: Modi

NEW DELHI, Apr 24 (PTI)

ON National Panchayati Raj Day, Prime Minister Narendra Modi on Sunday said Panchayats are the basic pillar of Indian democracy, in whose strength lies the prosperity of the new India.

April 24 is observed by the Ministry of Panchayati Raj as the National Panchayati Raj Day (NPRD) every year to celebrate the constitutional status accorded to the Panchayati Raj system in the country.

"Best wishes to you all on National Panchayati Raj Day. Panchayats are the basic pillar of Indian democracy, in whose strength lies the prosperity of the new India," Modi said in a tweet in Hindi.

"Let us take a pledge to further empower our Panchayats to build a self-reliant India," he said.

प्रधानमंत्री बोले- एग्जाम वारियर्स गणित का आनंद लें, डरें नहीं

देश में हर रोज हो रहा 20,000 करोड़ रुपये का डिजिटल लेन-देन

यूपीआय पेमेंटचे देशाच्या विकासात मोठे योगदान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी : 'मन की बात'मधून संवाद

देश में रोजाना 20 हजार करोड़ का डिजिटल लेन-देन : मोदी

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 24 अप्रैल।

'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने कहा, डिजिटल अर्थव्यवस्था से बन रहा ईमानदारी का माहौल

नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि देश में रोजाना करीब 20 हजार करोड़ रुपए का 'डिजिटल लेन-देन' हो रहा है। इससे देश में डिजिटल अर्थव्यवस्था तैयार हो रही है। सुविधाएं बढ़ने के अलावा इससे देश में ईमानदारी का माहौल भी बन रहा है। आकाशवाणी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 88वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने कहा कि इससे ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं देना आसान हो गया है।

उन्होंने दिल्ली की रहने वाली दो बहनों सागरिका और प्रेक्षा के 'कैशलेस डे आउट' के संकल्प का अनुभव साझा किया और देशवासियों से आग्रह किया कि वे भी इसे अपनाएं। गाजियाबाद की आनंदिता त्रिपाठी का अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा, 'छोटे-छोटे शहरों में और ज्यादातर गांवों में भी लोग यूपीआई से ही लेन-देन कर रहे हैं।'

मोदी ने हाल में किए गए प्रधानमंत्री संग्रहालय के लोकार्पण का उल्लेख किया और कहा कि इतिहास को लेकर लोगों की दिलचस्पी काफी बढ़ रही है, प्रधानमंत्री संग्रहालय युवाओं के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत की आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर मनाया जा रहा अमृत महोत्सव अब जन आंदोलन का रूप ले रहा है। प्रधानमंत्री ने पिछले महीने 'परीक्षा पर चर्चा' के दौरान छात्रों में गणित के विषय के डर को लेकर जताई गई चिंताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि यह ऐसा विषय है, जिसे लेकर हम भारतीयों को सबसे ज्यादा सहज होना चाहिए। मोदी ने वैदिक गणित सिखाने वाले कोलकाता के गौरव टेकरीवाल के अनुभव साझा करते हुए कहा कि वैदिक गणित से बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

कोरोना से बचाव के उपायों का पालन करने की अपील : प्रधानमंत्री ने देश में एक बार फिर से बढ़ते कोविड-19 संक्रमण के मामलों के मद्देनजर देशवासियों से सतर्क रहने और मास्क पहनने, उचित दूरी का पालन करने और लगातार हाथ धोने जैसे बचाव के सभी उपायों का पालन करने का आग्रह किया। आकाशवाणी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की ताजा कड़ी में प्रधानमंत्री ने कहा कि आने वाले दिनों में ईद, अक्षय तृतीया, भगवान परशुराम की जयंती और वैशाख बुद्ध पूर्णिमा का त्योहार मनाया जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि इन पर्वों को खूब उल्लास और सौहार्द के साथ मनाइए, लेकिन इन सबके बीच सभी को कोरोना से भी सतर्क रहना है। उन्होंने कहा, 'मास्क लगाना, नियमित अंतराल पर हाथ धोते रहना और बचाव के लिए जो भी जरूरी उपाय हैं, आप उनका पालन करते रहें।'

Modi calls for all-round efforts towards water conservation

DEEPAK K UPRETI
NEW DELHI

Stating that "jal se Juda pryas kal se Juda hai", Prime Minister Narendra Modi on Sunday called for all-round efforts towards water conservation as he appreciated the rapid growth of the digital economy in the country "recording transactions worth Rs 20,000 crore daily."

Addressing the nation in his monthly radio talk 'Mann ki baat', Modi touched on a rainbow of issues ranging from Museums to Vedic maths.

The Prime Minister said the importance of water conservation becomes more so crucial during the summer season and particularly in the water-starved areas.

"The Bhil tribe of Madhya Pradesh used their historical tradition 'Halma' for water conservation. Under this tradition, the people of this tribe gather at one place to find a solution to the problems related to water", he said.

"It is clearly stated in our scriptures: 'Paniyam paramam loke, jeevaanaam jeevanam samritam (Water is the basis of life of every living being and water is also the biggest resource in the world)'," he said.

The Prime Minister said 75 'Amrit Sarovars' are to be built in every district of India during the ongoing celebrations of 75 years of the independence.

"In the Azadi Ka Amrit Mahotsav, water conservation is one of the resolves with which the country is moving forward, he said.

Moving on to the rapid growth of the digital economy, Miodi cited examples of girls who moved around Delhi for 24-hours and did not have to use cash as digital UPI transactions were accepted in the market, including by the street vendors.

He said daily transactions have reached worth 20,000 crore and at times going much higher."Last March, UPI transactions reached around Rs 10 lakh crores. Due to this, convenience is also increasing in the country and an atmosphere of honesty is also being created, said Modi.

"The facility of payment through UPI has reached even places where there was no good internet facility till a few years ago," the Prime Minister said.

Modi also spoke about the 'Pradhanmantri Sanghralaya' inaugurated by him in Delhi recently and sought people to visit it to know more about the country's history and its 14 Prime Ministers.

He said there are several kinds of museums in the country including those of kites and coins. The Prime Minister also asked a few general knowledge questions relating to museums and sought them to submit answers in the NaMo app .

Museums are being encouraged to adopt new ways in view of changing times and Covid protocols, he said as he appealed that all should continue to wear masks to prevent further spreading of the coronavirus in the country.

Prime Minister also talked about Vedic mathematics as he said students in their classes are mostly scared by the Maths. He said unlike in modern maths, Vedic maths could count till infinite.

"Mathematics is a subject with which we Indians should be most comfortable. After all, the people of India have given the most research and contribution to the whole world regarding mathematics", he pointed out to his radio listeners.

"From Calculus to Computers - all these scientific inventions are based on Zero. Zero, that is, you must have heard a lot about the discovery of zero and its importance. Often you will also hear that if zero was not discovered, we might not have even seen so much scientific progress in the world", said the Prime Minister about the contribution of ancient India to Mathematics and the discovery of Zero by ancient Indian geniuses.

ଦୈନିକ ୨୦,୦୦୦ କୋଟିର ଡିଜିଟାଲ୍ କାରବାର

ନୂଆଦିଲ୍ଲୀ, ୨୪/୪: ରବିବାର ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ନରେନ୍ଦ୍ର ମୋଦୀ ତାଙ୍କ ୮୮ତମ ମନ୍ କୀ ବାତ୍‌ରେ ନଗଦ-ବିହୀନ ଅର୍ଥନୀତି ଆଡ଼କୁ ଭାରତର ଅଗ୍ରଗତିକୁ ପ୍ରଶଂସା କରିଥିଲେ। ଏଥି ସହ ଭାରତରେ ଗୋଟିଏ ଦିନରେ ୨୦,୦୦୦ କୋଟି ଟଙ୍କାରୁ ଅଧିକ ଡିଜିଟାଲ କାରବାର ହେବା ଏବଂ ମାର୍ଚ୍ଚ ମାସରେ ୟୁପିଆଇ କାରବାର ପ୍ରାୟ ୧୦ ଲକ୍ଷ କୋଟିରେ ପହଞ୍ଚିଥିବା ସୂଚନା ଦେଇଥିଲେ।

ମୋଦୀ କହିଲେ ଯେ, ଭିମ୍ ୟୁପିଆଇ ଆମ ଦୈନନ୍ଦିନ ଅର୍ଥନୈତିକ ଜୀବନ ଓ ଅଭ୍ୟାସର ଏକ ଅଙ୍ଗ ହୋଇଗଲାଣି। ବର୍ତ୍ତମାନ ଏପରି କି ଛୋଟ ସହର ଓ ଗାଁଗଣ୍ଡାରେ ବି ୟୁପିଆଇ ମାଧ୍ୟମରେ ଆର୍ଥିକ କାରବାର ହେଉଛି। ଦେଶରେ ଡିଜିଟାଲ ଅର୍ଥନୀତିର ସଂସ୍କୃତି ଗଢ଼ିଉଠୁଛି। ଡିଜିଟାଲ ପେମେଣ୍ଟ ବ୍ୟବସ୍ଥା ଯୋଗୁ ବ୍ୟବସାୟୀମାନେ ଅଧିକ ଗ୍ରାହକଙ୍କୁ ସେବା ଯୋଗାଇବା ସମ୍ଭବ ହେଉଛି। ବର୍ତ୍ତମାନ ଖୁଚୁରା ନ ଥିବାର ସମସ୍ୟା ଆଉ ନାହିଁ। ବର୍ତ୍ତମାନ ଦେଶରେ ଦୈନିକ ୨୦୦୦୦ କୋଟିରୁ ଅଧିକ ଟଙ୍କାର ଡିଜିଟାଲ କାରବାର ହେଉଛି ବୋଲି ସେ କହିଥିଲେ। ଗତ ମାସରେ ୟୁପିଆଇ କାରବାର ପ୍ରାୟ ୧୦ ଲକ୍ଷ କୋଟିରେ ପହଞ୍ଚିଥିଲା। ଏହାଦ୍ୱାରା ଦେଶରେ ଅନେକ ସୁବିଧା ହେଉଛି ଏବଂ ସାଧୁତାର ବାତାବରଣ ବି ସୃଷ୍ଟି ହେଉଛି। ବର୍ତ୍ତମାନ ଅନେକ ଫିନ-ଟେକ୍ (ଆର୍ଥିକ ପ୍ରଯୁକ୍ତି) ଷ୍ଟାର୍ଟ-ଅପ୍ ମଧ୍ୟ ଆତ୍ମପ୍ରକାଶ କଲେଣି ବୋଲି ସେ କହିଥିଲେ। ଏହି ଅବସରରେ ମୋଦୀ ଆଗକୁ ଆସୁଥିବା ବିଭିନ୍ନ ଉତ୍ସବ ଯଥା ଇଦ୍, ଅକ୍ଷୟ ତୃତୀୟା, ଭଗବାନ ପରଶୁରାମ ଜୟନ୍ତୀ, ବୁଦ୍ଧ ଜୟନ୍ତୀ ଆଦି ଉପଲକ୍ଷେ ଦେଶବାସୀଙ୍କୁ ଆଗୁଆ ଅଭିନନ୍ଦନ ଜଣାଇଥିଲେ। ଖୁସିରେ ଉତ୍ସବ ମନାଇବା ସହ କୋଭିଡ୍-୧୯ ବାବଦରେ ସତର୍କ ରହିବା ପାଇଁ ପରାମର୍ଶ ଦେଇଥିଲେ। ମାସ୍କ ପିନ୍ଧିବା, ନିୟମିତ ବ୍ୟବଧାନରେ ହାତ ଧୋଇବା, ଭିଡ଼କୁ ନ ଯିବା, ଦୂରତା ରକ୍ଷା କରିବା ଆଦି ଯେଉଁଠି ଯେତେବେଳେ ଦରକାର ମାନି ଚଳିବା ପାଇଁ ସେ କହିଥିଲେ। ଏଥି ସହ ମୋଦୀ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ସଂଗ୍ରହାଳୟ ବିଷୟରେ ସୂଚନା ଦେବା ସହ ଏହି ସଂଗ୍ରହାଳୟରେ ପୂର୍ବତନ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ଲାଲ ବାହାଦୁର ଶାସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ବ୍ୟାଙ୍କ ପାସବୁକ୍ ଓ ତାଙ୍କ ସମ୍ପର୍କୀୟମାନେ ତାଙ୍କୁ ଉପହାର ସ୍ୱରୂପ ଦେଇଥିବା ଏକ ଅରଖ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଦର୍ଶନ କରାଯାଉଛି ବୋଲି କହିଥିଲେ। ପୂର୍ବତନ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ଜବାହରଲାଲ ନେହରୁ, ମୋରାରଜୀ ଦେଶାଇ, ପିଭି ନରସିଂହ ରାଓ, ଚନ୍ଦ୍ରଶେଖର, ଅଟଳ ବିହାରୀ ବାଜପେୟୀ ପ୍ରଭୃତିଙ୍କ ବିଷୟରେ ବି ସଂକ୍ଷିପ୍ତ ସୂଚନା ଦେଇଥିଲେ।

'Quizmaster' Modi turns his radio address interactive

New Delhi: A digital art gallery of paintings showcasing the work of persons with disability was one of the key highlights of PM Modi's Mann Ki Baat on Sunday where he emphasised on the role of technology in empowerment. The PM also played quiz master on museums.

Asking people to respond on the NaMo App and to the hashtag #MuseumQuiz on social media, the PM not only asked questions but also gave clues guiding the listeners towards the answers.

Among other issues, PM Modi also highlighted the power of technology and how it is changing the lives of ordinary people. "Technology has done another great job. It has served to bring the benefit of the extraordinary abilities of Divyang (physically challenged) friends to the country and the world," he said.

"There are also many startups and organizations in the country which are doing inspirational work in this direction. There is one such organization — Voice of Specially Abled People, this organization is promoting new opportunities in the field of assistive technology," Modi elaborated. He said the organisation has made an innovative beginning to take the art work of persons with disabilities to the world.

"Voice of Specially Abled People has prepared a digital art gallery of paintings of these artists. How Divyang friends are rich in extraordinary talents and what extraordinary abilities they have — this art gallery is an example of that," the PM said. "If you also know a Divyang friend, know their talent, then with the help of digital technology, you can bring them to the fore in front of the world. Divyang friends must also join such endeavours," Modi added. TNN

ਦੇਸ਼ 'ਚ ਹਰ ਦਿਨ ਕਰੀਬ 20 ਹਜ਼ਾਰ ਕਰੋੜ ਰੁਪਏ ਦਾ ਹੋ ਰਿਹੈ ਡਿਜੀਟਲ ਲੈਣ-ਦੇਣ : ਮੋਦੀ

ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ, 24 ਅਪ੍ਰੈਲ : ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਰਿੰਦਰ ਮੋਦੀ ਨੇ ਐਤਵਾਰ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦੇਸ਼ 'ਚ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਲਗਭਗ 20,000 ਕਰੋੜ ਰੁਪਏ ਦੇ 'ਡਿਜੀਟਲ ਲੈਣ-ਦੇਣ' ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਨਾਲ ਇਕ ਡਿਜੀਟਲ ਅਰਥਵਿਵਸਥਾ ਬਣ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ 'ਚ ਇਕ ਸ਼ਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਵੀ ਵਿਕਸਿਤ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਆਕਾਸ਼ਵਾਣੀ ਦੇ ਮਹੀਨਾਵਾਰ ਰੇਡੀਓ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਦੇ 88ਵੇਂ ਐਪੀਸੋਡ 'ਚ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਸਾਂਝੇ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਡਿਜੀਟਲ ਲੈਣ-ਦੇਣ ਨਾਲ ਸਹੂਲਤ ਵੀ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ 'ਚ ਈਮਾਨਦਾਰੀ ਦਾ ਮਾਹੌਲ ਵੀ ਬਣ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਰਹਿਣ ਵਾਲੀਆਂ 2 ਭੈਣਾਂ ਸਾਗਰਿਕਾ ਅਤੇ ਪ੍ਰੇਕਸ਼ਾ ਦੇ 'ਕੈਸ਼ਲੈਸ ਡੇਅ ਆਊਟ' ਦਾ ਸੰਕਲਪ ਸਾਂਝਾ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਅਪੀਲ ਕੀਤੀ ਉਹ ਵੀ ਇਸ ਨੂੰ ਅਪਣਾਉਣ।

ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ, "ਘਰ ਤੋਂ ਇਹ ਸੰਕਲਪ ਲੈ ਕੇ ਨਿਕਲੇ ਕਿ ਦਿਨ ਭਰ ਪੂਰੇ ਸ਼ਹਿਰ 'ਚ ਘੁੰਮਾਂਗੇ ਅਤੇ ਇਕ ਵੀ ਪੈਸੇ ਦਾ ਲੈਣ-ਦੇਣ ਨਕਦ ਨਹੀਂ ਕਰਾਂਗੇ।" ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਡਿਜੀਟਲ ਲੈਣ-ਦੇਣ ਹੁਣ ਦਿੱਲੀ ਜਾਂ ਵੱਡੇ ਮਹਾਨਗਰਾਂ ਤਕ ਹੀ ਸੀਮਿਤ ਨਹੀਂ ਹਨ ਸਗੋਂ ਇਸ ਦਾ ਪਸਾਰ ਸੁਦੂਰ ਦੇ ਪਿੰਡਾਂ ਤਕ ਹੋ ਚੁਕਿਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ, "ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਕੁੱਝ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਤਕ ਇੰਟਰਨੈੱਟ ਦੀ ਚੰਗੀ ਸਹੂਲਤ ਵੀ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਉੱਥੇ ਵੀ ਯੂ.ਪੀ.ਆਈ. ਤੋਂ ਲੈਣ-ਦੇਣ ਦੀ ਸਹੂਲਤ ਉਪਲੱਬਧ ਹੈ। ਹੁਣ ਤਾਂ ਛੋਟੇ-ਛੋਟੇ ਸ਼ਹਿਰਾਂ 'ਚ ਅਤੇ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਪਿੰਡਾਂ 'ਚ ਵੀ ਲੋਕ ਯੂ.ਪੀ.ਆਈ. ਤੋਂ ਹੀ ਲੈਣ-ਦੇਣ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।" ਮੋਦੀ ਨੇ ਹਾਲ 'ਚ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਮਿਊਜ਼ੀਅਮ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਤਿਹਾਸ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਦਿਲਚਸਪੀ ਕਾਫੀ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਮਿਊਜ਼ੀਅਮ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਲਈ ਵੀ ਆਕਰਸ਼ਨ ਦਾ ਕੇਂਦਰ ਬਣ ਰਿਹਾ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਮਿਊਜ਼ੀਅਮ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਅਨਮੋਲ ਵਿਰਾਸਤ ਨਾਲ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਜੋੜ ਰਿਹਾ ਹੈ। (ਏਜੰਸੀ)

मन की बात में प्रधानमंत्री ने गणित, जल, दिव्यांग साथियों व प्रधानमंत्री संग्रहालय पर की चर्चा

संसार में जल ही हर जीव के जीवन का आधार हैः प्रधानमंत्री मोदी

एजेंसी, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अपने 'मन की बात' कार्यक्रम की 88वीं कड़ी में प्रधानमंत्री संग्रहालय से लेकर जल संरक्षण, गणित के विषय को केंद्र में रखकर विस्तृत चर्चा की। इस दौरान दिव्यांग साथियों की प्रतिभा का उल्लेख करते हुये उन्होंने कहा कि तकनीक दिव्यांग साथियों की असाधारण क्षमताओं का लाभ देश और दुनिया को दिलाने में जुटा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम का प्रारंभ प्रधानमंत्री संग्रहालय से किया। उन्होंने कहा कि इस बात उन्हें सबसे ज्यादा चिट्ठियां प्रधानमंत्री संग्रहालय को लेकर मिली हैं। संग्रहालयों के प्रति छात्रों की जिज्ञासा बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि 18 मई को पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मनाया जाएगा। क्यों न आने वाली छुट्टियों में आप अपने दोस्तों की मंडली के साथ किसी स्थानीय संग्रहालयों को देखने जाएं।

आगे उन्होंने कहा कि बाबा साहेब अंबेडकर की जयंती पर प्रधानमंत्री संग्रहालय का लोकार्पण हुआ है। गुरुग्राम में रहने वाले सार्थक जी पहला मौका मिलते ही संग्रहालय देख आए। उन्होंने नमो ऐप पर पीएम संग्रहालय की ऐसी चीजों के बारे में लिखा है, जो उनकी जिज्ञासा को और बढ़ाने वाली थी। अमृत काल देश के तमाम प्रधानमंत्रियों के योगदान को याद करने का सही समय है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने युवाओं को देश के इतिहास से अवगत कराने के लिए म्यूजियम क्विज शुरू करने की भी घोषणा की।

भीषण गर्मी के बीच जल के महत्व की चर्चा करते हुये प्रधानमंत्री ने कहा कि जल से जुड़ा हर प्रयास, हमारे कल से जुड़ा है। जल संरक्षण के लिये सदियों से अलग-अलग समाज लगातार अपने-अपने प्रयास करते आये हैं।' इस संदर्भ में उन्होंने कच्छ को 'मालधारी' जनजाति का जिक्र किया, जो जल संरक्षण के लिए वृदास नामक तरीका इस्तेमाल करती हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने जल के महत्व को बताते हुये संस्कृत के एक श्लोक का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, पानियम् परमम् लोके, जीवानाम् जीवनम् समृतम् अर्थात संसार में जल ही हर जीव के जीवन का आधार है। जल ही सबसे बड़ा संसाधन भी है, इसलिए हमारे पूर्वजों ने भी जल संरक्षण पर इतना जोर दिया।

पुराणों में जल संरक्षण का उल्लेख: आगे उन्होंने कहा कि वेदों से लेकर पुराणों तक हर जगह पानी बचाने, तालाब-सरोवर आदि बनवाने के कार्य को मनुष्य का सामाजिक और आध्यात्मिक कर्तव्य बताया गया है। वाल्मीकि रामायण में जल स्रोतों को जोड़ने और जल संरक्षण पर विशेष जोर दिया गया है। इतिहास की चर्चा करते हुये प्रधानमंत्री ने कहा कि इतिहास के छात्र जानते होंगे कि सिन्धु-सरस्वती और हड़प्पा सभ्यता के दौरान भी भारत में पानी को लेकर कितनी विकसित तकनीक होती थी। प्राचीन काल में कई शहर में जल-स्रोत आपस में मिले होते थे।

शून्य की खोज ने दिखाई प्रगति की राह

गणित की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीयों के लिए गणित कभी मुश्किल विषय नहीं रहा। इसका एक बड़ा कारण हमारा वैदिक गणित भी है। उन्होंने कहा कि आपने शून्य की खोज के बारे में तो सुना ही होगा। अगर शून्य की खोज न होती तो शायद विज्ञान में इतनी प्रगति न देख पाते। आगे उन्होंने कहा कि गणित को लेकर हम भारतीयों को सबसे ज्यादा सहज होना चाहिए। आखिर, गणित को लेकर पूरी दुनिया के लिए सबसे ज्यादा शोध और योगदान भारत के लोगों ने ही तो दिया है। इसी विषय को विस्तार देते हुए उन्होंने कहा कि भारतीयों के लिए गणित कभी मुश्किल विषय नही रहा है, इसका एक बड़ा कारण हमारी वैदिक गणित भी है। आधुनिक काल में वैदिक गणित का श्रेय भारती कृष्ण तीर्थ महाराज को जाता है। उन्होंने गणना के प्राचीन तरीकों को परिष्कृत किया और उसे वैदिक गणित नाम दिया। वैदिक गणित की सबसे खास बात यह थी कि इसके जरिए आप कठिन से कठिन गणनाएं पलक झपकते ही मन में ही कर सकते हैं।

कैशलेस डे आउट का जिक्र

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नागरिकों के अनूठे कैशलेस डे आउट प्रयोगों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि यह देश भर में डिजिटल भुगतान को तेजी से अपनाने को दर्शाता है। छोटे ऑनलाइन भुगतान एक बड़ी डिजिटल अर्थव्यवस्था बनाने में मदद कर रहे हैं। प्रतिदिन 20,000 करोड़ रुपये का ऑनलाइन लेनदेन किया जाता है।

कई क्षेत्रों में दिव्यांगों का कमाल

दिव्यांग साथियों की चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि तकनीक की ताकत कैसे सामान्य लोगों का जीवन बदल रही है, यह हमें आस-पास लगातार नजर आ रहा है। तकनीक ने एक और बड़ा काम किया है, उसने दिव्यांग साथियों की असाधारण क्षमताओं का लाभ देश और दुनिया को दिलाया। हमारे दिव्यांग भाई-बहन क्या कर सकते हैं, ये हमने टोक्यो पैरालंपिक में देखा है। खेलों की तरह ही कला और ज्ञान के साथ-साथ कई क्षेत्र में भी दिव्यांग साथी कमाल कर रहे हैं। इन साथियों को तकनीक की ताकत मिल जाती है, तो ये बड़े मुकाम हासिल करके दिखाते हैं। इसलिए, देश आजकल लगातार संसाधनों और आधारभूत संरचनाओं को दिव्यांगों के लिए सुलभ बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है।

पानी से जुड़ी समस्या पर एक-दूसरे से सुझाव लेते हैं भील

भोपाल ▪ प्रशासनिक संवाददाता

पीएम मोदी ने मन की बात में मध्यप्रदेश की भील जनजाति की हलमा परंपरा का किया उल्लेख

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में रविवार को मध्यप्रदेश की भील जनजाति की ऐतिहासिक परंपरा हलमा का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भील जनजाति द्वारा जल-संरक्षण का अप्रतिम संदेश देने वाली यह परंपरा प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। यह सभी को प्रेरणा देगी।

मप्र की भील जनजाति ने अपनी परंपरा हलमा को जल संरक्षण के लिए इस्तेमाल किया। परंपरा में इस जनजाति के लोग पानी से जुड़ी समस्या के निराकरण के उपाय ढूंढने के लिए एकत्रित होकर एक-दूसरे से सुझाव लेते हैं। इस परंपरा की वजह से पानी का संकट कम हुआ है और भू-जल स्तर भी बढ़ रहा है।

सीएम ने कहा, पूरे प्रदेश का मनोबल बढ़ा: मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में मप्र की भील जनजाति की ऐतिहासिक परंपरा हलमा से देश को परिचित कराया है। इससे हमारे भील जनजाति भाई-बहनों और संपूर्ण मप्र का मनोबल बढ़ा है। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री मोदी के अमूल्य शब्दों के लिए उनका हृदय से अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के एक जिले में 75 अमृत सरोवर के निर्माण के आव्हान को मप्र ने स्वीकार किया और अब हम 3800 अमृत सरोवर बना रहे हैं। स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर इन अमृत सरोवरों के पास ध्वजारोहण कर अपने संकल्प को पूरा करेंगे।

ଦୈନିକ ଡିଜିଟାଲ ନେଣଦେଣ ୨୦ ହଜାର କୋଟି ଛୁଇଁଛି

ନୂଆଦିଲ୍ଲୀ, ୨୪।୪: ଦେଶରେ ଦୈନିକ ଡିଜିଟାଲ ନେଣଦେଣ ୨୦ ହଜାର କୋଟି ଛୁଇଁଛି। ମାର୍ଚ୍ଚରେ ୟୁପିଆଇ (ୟୁନିଫାଏଡ୍ ପେମେଣ୍ଟ ଇଣ୍ଟରଫେସ) ଟ୍ରାଞ୍ଜାକସନ ୧୦ ଲକ୍ଷ କୋଟିରେ ପହଞ୍ଚିଛି। ଏହା ଲୋକଙ୍କୁ ସୁବିଧା ପ୍ରଦାନ କରିବା ସହ ସଚ୍ଚୋଟତାର ପରିବେଶକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିଛି ବୋଲି ରବିବାର 'ମନ୍ କୀ ବାତ୍'ରେ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ନରେନ୍ଦ୍ର ମୋଦି କହିଛନ୍ତି। ଛୋଟ ଅନଲାଇନ ପେମେଣ୍ଟ ବଡ଼ ଡିଜିଟାଲ ଅର୍ଥନୀତି ଗଢ଼ିବାରେ ସହାୟ ହେଉଛି। ଏହାଦ୍ୱାରା ଅନେକ ଫିନଟେକ୍ ଷ୍ଟାର୍ଟଅପ୍ ଗଠନ ହେଉଛି। ଡିଜିଟାଲ ପେମେଣ୍ଟ ଏବଂ ଷ୍ଟାର୍ଟଅପ୍ ଇକୋସିଷ୍ଟମ [illegible] ପାଠକମାନେ ଅନ୍ୟମାନଙ୍କୁ [illegible] ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ପରାମର୍ଶ ଦେଇଛନ୍ତି। ଏହି ଅବସରରେ ମୋଦି 'ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ସଂଗ୍ରହାଳୟ' କଥା କହିଥିଲେ। ଦେଶ ସ୍ୱାଧୀନତାର ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ପାଳନ କରୁଥିବାବେଳେ ସମସ୍ତ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଅବଦାନ ମନେ ପକାଉଛି। ଦିଲ୍ଲୀରେ ଏହି ସଂଗ୍ରହାଳୟ ନିର୍ମାଣ କରାଯାଇଛି। [illegible] ଅନୁଭୂତିକୁ [illegible] ମାଧ୍ୟମରେ ଶେୟାର କରିବାକୁ ମୋଦି ନିବେଦନ କରିଛନ୍ତି।

പ്രതിദിനം 20,000 കോടിയുടെ ഡിജിറ്റൽ ഇടപാട് നടക്കുന്നുവെന്ന് മോഡി

ന്യൂഡൽഹി: ഇന്ത്യയിൽ പ്രതിദിനം 20,000 കോടി രൂപയുടെ ഡിജിറ്റൽ ഇടപാട് നടക്കുന്നുണ്ടെന്ന് പ്രധാനമന്ത്രി നരേന്ദ്ര മോഡി. 87ാമത് മൻ കി ബാത് പരിപാടിയിലാണ് മോഡിയുടെ പരാമർശം. ചെറിയ ഓൺലൈൻ ഇടപാടുകൾ വലിയ ഡിജിറ്റൽ സമ്പദ്‌വ്യവസ്ഥ രൂപീകരിക്കാൻ കാരണമാകുന്നുവെന്നും മോഡി പറഞ്ഞു.

മാർച്ച് മാസത്തിൽ തന്നെ രാജ്യത്തെ യുപിഐ (യൂണിഫൈഡ് പേയ്മെന്റ് ഇന്റർഫേസ്) ഇടപാടുകൾ പത്ത് ലക്ഷം കോടി രൂപയുടെ മൂല്യത്തിലേക്ക് ... [note: see text]

मन की बात

अमृत सरोवर से जल संरक्षण करें, छात्र गणित से कभी न डरें

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को कार्यक्रम के माध्यम से किया संबोधित

पीएम मोदी ने लोगों से सात सवाल भी पूछे

ദിവസം 20,000 കോടിയുടെ ഇടപാടുകൾ ഡിജിറ്റൽ രീതിയിൽ: പ്രധാനമന്ത്രി

દેશમાં રોજ રૂ. ૨૦,૦૦૦ કરોડના ઓનલાઈન ટ્રાન્ઝેક્શન થતા હોવાનો ઉલ્લેખ

નાના પેમેન્ટે દેશમાં મોટી ઇકોનોમી બનાવી : મન કી બાતમાં મોદીનો દાવો

ಡಿಜಿಟಲ್ ಆರ್ಥಿಕತೆಗೆ ಬಲ

ଜଳ ସଂରକ୍ଷଣ ସାମାଜିକ ଓ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ

ମୋଦିଙ୍କ ମନ୍ କୀ ବାତ୍

- ପ୍ରତି ଜିଲ୍ଲାରେ ହେବ ୭୫ ଅମୃତ ସରୋବର
- ଭାରତୀୟଙ୍କ ପାଇଁ ଗଣିତ ଖୁବ୍ ସହଜ
- ସଂକ୍ରମଣରୁ ସତର୍କ ରହିବାକୁ ଦେଲେ ପରାମର୍ଶ

NEWS18

Go for 'Cashless Day Out', #MuseumMemories: PM Modi's 'Vacation Suggestion' in Mann ki Baat

The Indian EXPRESS

Celebrate festivals with harmony, but guard against Covid, says PM

DH DECCAN HERALD

PM Museum connecting youth with country's precious heritage: Modi

NDTV

"Small Online Payments Helping Build Big Digital Economy", Says PM Modi

THE TIMES OF INDIA

PM Modi in 'Mann ki Baat' says water conservation social, spiritual duty of all

The Sentinel
of this land, for its people

'Mann Ki Baat': PM Narendra Modi calls for increasing water conservation

Hindustan Times

'From Zero to infinity': PM Modi on Vedic Maths, Intel CEO on Mann ki Baat

THE TIMES OF INDIA

PM Modi talks about Halma tradition of Bhil tribals

Mann ki Baat: मन की बात में PM मोदी ने किया प्रधानमंत्री संग्रहालय का जिक्र, लोगों से पूछे ये सवाल

PM Modi Mann Ki Baat: वैदिक गणित, जलसंकट से लेकर दिव्यांगों पर मन की बात में क्या बोले पीएम मोदी?

मन की बात :: देश में तैयार हो रही डिजिटल अर्थव्यवस्था : मोदी

मन की बात: पीएम के मन की बात में दिए गए संदेश को जन-जन तक पहुंचाने की अपील

Mann Ki Baat: देश में हर रोज होता है करीब 20 हजार करोड़ रुपये का डिजिटल लेनदेन, गांव मोहल्लों तक पहुंचा यूपीआई